संपादक और प्रकाशक—
नाथूराम प्रेमी,
मालिक,
हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय,
हीराबाग, गिरगाँव, बम्बई ।
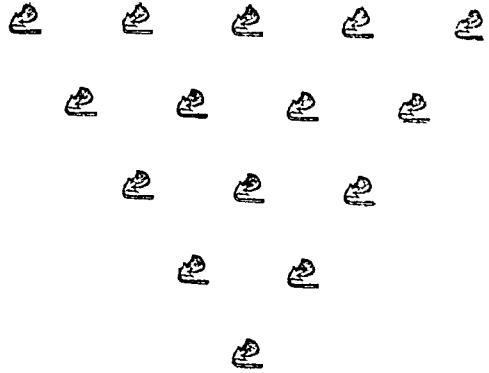
प्रस्तावना ।

(प्रथमावृत्तिसे)

डाक्टर सेमुएल स्माइल्सका जन्म हैडिंगटनमे २३ दिसम्बर सन् १८१२
० को हुआ । ये ११ भाई वहिन थे । इनकी प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय
ामर स्कूलमें हुई । १४ वर्षकी उमरमें इन्होंने एक डाक्टरी दूका-
में नौकरी कर ली । मि० लेविस इस दूकानके एक हिस्सेदार थे ।
न् १८२९ मे वे लीथ चले गये और सेमुएल स्माइल्सको भी अपने साथ लेते
ये । सेमुएलने वहाँ थोड़े ही दिन रहकर मेट्रिकुलेशनकी परीक्षा पास कर ली
ौर डाक्टरी कालेजमें नाम लिखा लिया । परिश्रमके बलसे आपने सन् १८३२
डाक्टरीकी परीक्षामें सफलता प्राप्त की और चिकित्सा करनेका सरटी-
ाफिकट पाकर एडिनवर्गमें डाक्टरी करना शुरु कर दिया । परन्तु इस व्ययसा-
में यथेष्ट आमदनी नहीं हुई, इस लिए इसे छोड़कर आपने रसायनविद्या और
ास्थ्यरक्षा आदि विषयो पर सार्वजनिक व्याख्यान देना और पत्रोंमें लेख
खना प्रारम्भ किया । इसमे आपको अच्छी सफलता हुई—खासी आमदनी
ने लगी । सन् १८३७ मे आपने 'फिजिकल एज्युकेशन' नामकी एक
ुस्तक लिखी । इसकी आपने ७५० कापियाँ छपाई । ये वहुत विलम्वसे बिकीं।
ो वहुत ही कम लोगोने पसन्द किया, वहुतोंने तो निन्दा तक कर डाली ।
न् १८३८ मे आप लन्दन गये और वहाँ लीडस नामक पत्रके सम्पादक हो
े । यह काम आपने लगभग चार वर्षतक किया । इसके वाद सन् १८६६
क आप दो रेलवे कम्पनियोके क्रमसे उपमत्री और मत्री रहे । १८६७ में
ाप नेशनल प्रावीडेन्ट सोसाइटीके सभापति हो गये और १८७१ तक रहे ।
ा वीचमे आपने राजनीतिक और सामाजिक सुधारोंकी ओर जी लगाया
ौर जितना समय मिला उसमे परिश्रमी पुरुषों और निर्धन साहसी विद्यार्थि-
के जीवनचरित लिखे । ये जीवनचरित कई जिल्दोंमे प्रकाशित हुए हैं ।

आपकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक 'सेल्फ हेल्फ' या 'स्वावलम्वन' सन्
१८५९ में प्रकाशित हुई । इसमे बड़ी भारी सफलता हुई । इसकी २० हजार
प्रतियाँ पहले ही सालमें बिक गई । आगे भी इसकी वहुत खप हुई है । सन्

१८८९ तक इसकी डेढ लाख प्रतियाँ विक चुकी थी और अवतक तो न जाने कितनी विक चुकी होंगी। प्रायः सभी प्रधान प्रधान भाषाओंमें इस पुस्तकका अनुवाद हो चुका है। इसके वाद आपने सन् १८७१ में 'कैरेक्टर' (सदाचार), १८७५ में 'थ्रिफ्ट' (मितव्ययता), १८८० मे 'ड्यूटी (कर्तव्य) और १८८७ में 'लाइफ एण्ड लेवर' (जीवन और श्रम) नामक पुस्तके लिखीं। आपकी सारी रचनामे इन पाँच पुस्तकोंकी सवसे अधिक प्रसिद्धि है। प्रत्येक पुस्तकालयमे इनका सग्रह रहता है। इन्हे पढ़कर आलसीसे आलसी और अधमसे अधम मनुष्य भी उद्योगी, साहसी, सदाचारी, कर्तव्यनिष्ठ और श्रेष्ठ वन सकता है।

सन् १८७८ में आपने जार्ज मूरकी जीवनी लिखी। इसी वर्ष एडिनवर्ग यूनीवर्सिटीने आपको एल एल. डी. की पदवी देकर सम्मानित किया। इटली आप कई वार गये। वहाँ आपकी और आपके ग्रन्थोंकी खूव कदर हुई। अन्त समय तक आप पुस्तक लिखनेमें लगे रहे। १६ अप्रैल सन् १९०४ को केसिंगटनमे आपका देहान्त हो गया।

स्माइल्स साहवका जीवनचरित वहुत वडा और शिक्षाप्रद है। उसे टामस मेकीने सन् १९०५ में लिखा है। स्थानाभावके कारण उसका वहुत ही सक्षिप्त सार यहाँ दे दिया गया और यह केवल इस लिए कि इस पुस्तकके पढ़नेवालोंको मूल लेखकका थोड़ासा परिचय हो जाय।

स्माइल्स साहवके ग्रन्थ वहुत ही सुगम और प्रभावशाली हैं। उन्होंने प्रत्येक विपयको उदाहरणों द्वारा ऐसी सरल और चित्ताकर्षक भाषामे समझाया है कि उसे साधारणसे साधारण वुद्धिवाले भी सहजमे समझ सकते हैं। हम नही कह सकते कि इग्लैंड आदि देशोंमे आपके ग्रन्थोंका आदर पहले जैसा अव भी है या नही, परन्तु भारतवर्षमें आपके ग्रन्थोका इस समय वहुत ही आदर होना चाहिए। भारतवासियोंको परिश्रमी, उद्योगी, साहसी, कर्तव्यपरायण और मितव्ययी वनानेके लिए वडी भारी आवश्यकता है कि आपके ग्रन्थ प्रत्येक घरमे पढे जायँ।

वगाली, उर्दू, मराठी, गुजराती आदि भाषाओंमे आपके कई ग्रन्थोंके अनुवाद हो-चुके हैं। किसी किसी भाषामें तो एक एक ग्रन्थके दो दो तीन तीन अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। परन्तु खेद है कि हिन्दीमे जहाँतक मैं जानता

हूँ अवतक आपके किसी भी ग्रन्थका अनुवाद प्रकाशित नहीं हुआ है।* इस कमीकी पूर्तिके लिए हिन्दीके धुरन्धर लेखक पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी (सरस्वतीसम्पादक) और हिन्दीग्रन्थरत्नाकरकार्यालयके संचालक प० नाथूरामजी प्रेमीकी सम्मतिसे मैंने डाक्टर स्माइलसकी प्रसिद्ध पुस्तक 'थ्रिफ्ट' का हिन्दी अनुवाद करना निश्चय किया और आज इसी अनुवादको लेकर मै हिन्दी पाठकोके सन्मुख उपस्थित हुआ हूँ।

यह ग्रन्थ कितना उपयोगी है और दरिद्र भारतके लिए कितना लाभकारी है, इसके विषयमें मै स्वय कुछ नही कहना चाहता–केवल डाक्टर साहबके उन वाक्योंको ही यहाँ उद्धृत किये देता हूँ जो उन्होंने इस ग्रन्थकी भूमिकामें लिखे है:—

"वास्तवमें इस पुस्तकको स्वावलम्बन (सेल्फ हेल्प) और शीलसूत्र (कैरेक्टर) नामक ग्रन्थोंकी प्रस्तावना समझना चाहिए। क्योकि मितव्ययता स्वावलम्बकी नीव और शीलकी जड़ है। यद्यपि हम अपने अन्य ग्रन्थोंमें भी रुपयेके सदुपयोग और दुरुपयोगके विषयमे वहुत कुछ लिख चुके है; परंतु यह इतना आवश्यक विषय है कि इसे जितनी अधिक वार समझाया और लिखा जाय, उतना ही अच्छा है। सत्यपरायणता, दयालुता, उदारता, आत्मनिर्भरता, दूरदर्शिता और मितव्ययता आदि जितने उत्तम गुण हैं, वे सब रुपयेके सदुपयोगसे घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हैं और इसके विपरीत कृपणता, निर्दयता, अदूरदर्शिता, स्वार्थ, लोभ, मोह आदि जितने अवगुण हैं, वे सब रुपयेके दुरुपयोगसे सम्बन्ध रखते हैं।

"एक विद्वानका कथन है कि श्रमका परिणाम सुख है। ईश्वरकी प्रसन्नता इसीमे है कि सब लोग श्रमपूर्वक सुख प्राप्त करे। श्रमसे जो कुछ पैदा किया जाय अथवा बचाया जाय, वह केवल इस लिए नही कि पैदा करना और बचाना हमारा परम धर्म है। हमारा पैदा करना और बचाना सुखके लिए होना चाहिए। हमे केवल अपने ही लिए श्रम और उद्योग नही करना चाहिए किन्तु उनके सुखके लिए भी, जो हमारे अधीन है–आश्रित हैं। परिश्रमी

* प्रसन्नताकी वात है कि अव हिन्दीमे स्माइल्स साहवकी ये पाँचों ही पुस्तके स्वावलम्वन, मानव-जीवन, मितव्ययता, कर्तव्य और जीवन और श्रमके नामसे छप चुकी हैं।—प्रकाशक।

विषय-सूची।

मितव्ययता ।

पहला अध्याय ।

परिश्रम ।

(विद्वानोके वाक्य ।)

जो कुछ मेरे पास है उस पर नही, किंतु जो कुछ मैं करता हूँ उस ही पर मेरा अधिकार है ।

उपयोगी श्रम ही ऐसा धन है जो समाजको धनवान् बना सकता है और उसको उन्नत अवस्था पर पहुँचा सकता है । सुलेमानका कथन है कि ऐसा कोई श्रम नहीं जिसमे लाभ न हो । सम्पत्तिशास्त्र क्या है, केवल इसी सूत्रकी एक विशद और बृहत् व्याख्या है ।

प्रकृतिकी आवश्यकताओंको पूरा करनेके लिए परमात्मा किसानोके श्रमसे, शिल्पकारोंके कलाकौशलसे और व्यापारियोंके मालसे संसारमें उत्तम वस्तुओंको उत्पन्न करता है । आलसी पुरुष मृतकके समान है जिसको संसारकी आवश्यकताओं और परिवर्तनोसे कोई सम्बध नहीं । वह केवल समय नष्ट करनेके लिए पशुवत् जीवन व्यतीत करता है; जब आयु पूर्ण हो जाती है कूच कर जाता है । ससारको उसके जीवनसे कोई लाभ नहीं पहुँचता ।

*

मितव्ययता सभ्यताके साथ प्रारम्भ हुई । उसकी नींव उस समय स्थिर हुई जब आजकी जरूरतके साथ कलकी जरूरतका भी खयाल पैदा हुआ । रुपयेके आविष्कारसे बहुत पहले इसका आरम्भ हुआ ।

मितव्ययताका अर्थ गृहप्रबन्ध है । गृहप्रबन्धका यह अभिप्राय है कि व्यक्तिगत उन्नति और वृद्धि हो और सामाजिक तथा देशप्रबन्धसे यह तात्पर्य है कि सामाजिक धन-दौलतकी वृद्धि हो ।

प्राइवेट (निजी) और पब्लिक (सार्वजनिक) दोनों सम्पत्तियोंका एक ही स्रोत है। धन श्रमसे उत्पन्न होता है, मितव्ययतासे सुरक्षित रहता है और उद्योग तथा दृढतासे बढता जाता है। व्यक्तिगत बचतका नाम ही सम्पत्ति है। दूसरे शब्दोंमे यों कह सकते है कि यह ही प्रत्येक समाजकी भलाईका कारण है। परन्तु इसके विपरीत व्यक्तिगत अपव्यय (फिजूल खर्च) ही बड़े बड़े समाजोंकी निर्धनताका कारण है। अतएव प्रत्येक मितव्ययी व्यक्तिको जनसाधारणका हितैषी और उपकारी समझना चाहिए और अपव्ययी तथा कृपणको शत्रु।

गृहप्रबन्धकी आवश्यकता पर तो किसीको कोई विवाद नहीं है। सब ही इसे मानते है। हॉ, सामाजिक प्रबंधके विषयमे बहुत कुछ विवाद है; किंतु हमको उस पर विचार करनेकी कोई जरूरत नहीं है। केवल गृहप्रबंधका ही विपय इस पुस्तकके लिए बहुत है।

प्रबन्ध कोई स्वाभाविक शक्ति नहीं है किंतु वह अनुभव, उदाहरण और दूरदर्शिताकी वृद्धिसे ही प्राप्त होता है। वह शिक्षा और बुद्धिका फल है। जब मनुष्यमे बुद्धि और विवेक उत्पन्न हो जाता है तब ही उसमे मितव्ययता आती है। अतएव स्त्रीपुरुषोंको दूरदर्शी बनानेका सबसे अच्छा उपाय यह है कि उन्हे विवेकी और बुद्धिमान् बनाया जाय।

स्वभावतः मनुष्यमें मितव्ययताकी अपेक्षा अपव्यय अधिक है। गॅवार आदमी बड़े अपव्ययी होते है, क्योकि न तो वे दूरदर्शी होते है और न उन्हे आगेका खयाल होता है। जगली गॅवार आदमी पहले कुछ भी संग्रह नहीं किया करते थे। वे गढो और खोहोंमे रहते थे और कपड़ोकी जगह वृक्षोंके पत्तो और छालोसे अपना बदन ढॅक लिया करते थे। समुद्रके किनारेसे कीड़े-मकोड़े पकड़कर और पशुपक्षियोंको पत्थ-

रोंसे मार कर अपना निर्वाह करते थे। धीरे धीरे उन्होंने पत्थरके हथियार बनाना सीखा जिससे उन्हे शिकार करना बहुत आसान हो गया।

पहले लोग खेतीका काम बिलकुल नहीं जानते थे। पीछे उन्होंने अपने खानेके वास्ते अनेक प्रकारके बीज जमा करना और उनमेसे कुछ भाग दूसरी मौसमके लिए उठाकर रखना शुरू किया। जब धातुओका पता लगा तब उनसे कई प्रकारकी चीजे बनाई। तरह तरहके औजार और मकान बनाये और इस लगातार परिश्रमसे सभ्यता और सदाचारके सैकड़ो मार्ग खुल गये। जो लोग नदियो या समुद्रोंके किनारे रहते थे, वे वृक्षोको काटकर उन्हींमे अपने रहनेकी जगह बना लेते थे और उन्हीं पर सवार होकर अपने खानेके लिए सामग्री जमा कर लाते थे। धीरे धीरे इन्हीं कटे हुए वृक्षोने डोंगियोका और फिर नौकाओका रूप धारण किया। तत्पश्चात् परिवर्तन होते होते जहाज और स्टीमर (अगनबोट) भी इन्हींसे बन गये।

हम पहले ही जैसे मूर्ख असभ्य रहते, परंतु हमारे पूर्वजोके असीम परिश्रमने हमें मूर्ख और असभ्य रहनेसे बचा दिया। उन्होने ही भूमिको साफ करके उपजके योग्य बनाया, तरह तरहके यंत्रोका आविष्कार किया और अनेक विद्याओ और शास्त्रोकी रचना की। उनके इस अपरिमित श्रमके कारण ही आज हम लाभ उठा रहे है।

प्रकृति हमको बतलाती है कि जो कोई अच्छा काम हो जाता है, वह सर्वथा कभी नष्ट नहीं होता। इसी लिए आज हम उनको याद करते है जो पूर्वमे अपने परिश्रमसे सफलता प्राप्त करके श्मशान भूमिमें शयन कर रहे है। बड़े बड़े कारीगर, शिल्पकार जो ताजमहल सरीखी इमारते बना गये है और अपूर्व शिल्पकौशल और नकशकारीका काम कर गये है यद्यपि वे आज इस संसारमे जीवित नहीं है, किंतु उनकी अजर अमर

कीर्ति सर्वत्र विद्यमान है। प्रकृतिके शासनमें मनुष्यके श्रमका सर्वथा नष्ट हो जाना नितात असम्भव है। यदि पृथक् पृथक् व्यक्तिके लिए नहीं तो जातिके लिए तो अवश्य ही उसका कोई न कोई लाभदायक फल शेष रह जाता है।

रुपया पैसा वगैरह तो जो हमारे वाप दादा हमारे लिए छोड़ जाते हैं तुच्छ चीज है—शीघ्र नाश हो जानेवाला है। किन्तु हमारे अधिकारमे एक ऐसी अद्भुत चीज है जो कभी नाश नहीं होती। वह हमारे पूर्वजोकी बुद्धि और श्रमका फल है। यह फल सीखनेसे नहीं किन्तु सिखाने और दिखानेसे प्राप्त होता है। यह क्रम संतान प्रतिसतान चलता रहा। पिताने पुत्रको सिखाया, पुत्रने पिताके श्रमसे लाभ उठाया और इसतरह कलाकौशल तथा शिल्पविद्या अव तक सुरक्षित रही। यह सतान प्रतिसंतानका शिक्षाक्रम मनुष्य जातिमें अव तक प्रचलित है और सभ्यताका एक मुख्य अंग है।

अतएव हमारा पैतृक धन (मौरूसी जायदाद) हमारे पूर्वजोके श्रमका लाभदायक फल है। किंतु हम उससे उस समय तक लाभ नहीं उठा सकते जव तक कि हम भी उस श्रममें योग न दें। संसारमे प्रत्येक व्यक्तिको श्रम करना योग्य है, चाहे वह श्रम शारीरिक हो अथवा मानसिक। श्रमके विना जीवन व्यर्थ है। सुस्तीके साथ जीवन विताना वेहोशीकी नींद सोना है। हमारा अभिप्राय केवल शारीरिक श्रमसें नहीं है, किन्तु दुनियामें और भी अनेक प्रकारके उत्तम कार्य हैं—जैसे कष्टों और आपत्तियोंको सहन करना, दूसरोको लाभ पहुँचाना, सभ्यता और सत्यताकी शिक्षा देना, अनाथों, अवलाओं और अपाहिजोंसे सहानुभूति रखना और उनकी सहायता करना, साहस और धैर्य रखना, निर्बलों पर प्रवलोंका

अत्याचार न होने देना, उन पर दयाभाव रखना और उनको अपने समान स्वावलम्बी बनाना।

गणितज्ञ और धर्मज्ञ वक्ता बैरोका कथन है कि कोई सभ्य पुरुष यह बात पसंद न करेगा कि वह दूसरोंकी कमाई पर अपना जीवन व्यतीत करे, या उस कीड़ेके समान रहना स्वीकार करे जो अनाजके कोठेमेसे दाना चुराता रहता है। वह यही चाहेगा कि मै दूसरोके सहारेसे अपनेको अलग करके जनताकी सेवा और परोपकारमें अधिकतर योग दूँ; क्योकि राज्यप्रबन्धसे लेकर कुलीके कामतक ऐसा कोई भी काम नहीं है जो किसी प्रकारके शारीरिक अथवा मानसिक श्रमके विना अच्छी तरह हो सके।

श्रम केवल एक आवश्यकता ही नहीं है किंतु इसमे हर्ष और आनंद भी है। एक दृष्टिसे देखा जाय तो हमारा जीवन प्रकृतिके विरुद्ध है; किंतु दूसरी दृष्टिसे देखा जाय तो वह प्रकृतिका सहकारी है। वायु, पृथिवी, सूर्य आदि सदैव हमारे अंदरसे जीवनशक्तिको निकालते रहते है—उसको पूरा करनेके लिए ही हम नित्य खाते पीते और पहनते है।

प्रकृति हमारे साथ काम करती है। खेतीके लिए भूमि साफ करती है। जो बीज हम उसमे वोते है उसे उगाती और पकाती है। मानवी श्रमसे हमारे लिए रुई और अनाज पैदा करती है। हमे यह वात भी न भूलना चाहिए कि राजासे लेकर रंक तकके लिए जितनी चीजें खाने पीने तथा पहननेके काममें आती हैं अथवा रहनेके लिए वड़े वड़े महलोसे लेकर छोटे छोटे झोपड़ों तक जो स्थान वनाये जाते हैं, वे सव परिश्रमके ही फल हैं।

मनुष्य एक दूसरेकी आवश्यकताओंको पूरी करनेके लिए आपसमें मिलते हैं। किसान जमीन जोतकर अनाज पैदा करता है, जुलाहा

सूत बुनकर कपड़ा तैयार करता है और दर्जी उसे काट छाँट करके उमदा तरीकेसे सीं देता है। राजमजूर मकान बनाते है जिनमें हम सुख चैनसे रहते है। इस तरह हर एक आदमी एक दूसरेकी जरूरतोको पूरा करता है। एकके विना दूसरेका काम नहीं चलता।

कैसी ही भद्दी और भूँडी चीज क्यो न हो, यदि उसमें श्रम आर योग्यता सर्फ की जाय तो वही सुदर रूपमे बदलकर बहुमूल्य वस्तु हो सकती है। मनुष्यमें श्रमका होना ऐसा ही जरूरी है जैसे शरीरमे आत्माका होना; क्योंकि यदि यह गुण निकाल लिया जाय तो मनुष्य-जाति तत्काल यमलोकको पहुँच जाय। सेंट पालका कथन है—'जो कार्य (श्रम) नहीं करेगा वह भूखो मरेगा।' यही कारण था कि वह स्वयं अपने हाथसे काम किया करता था।

उदाहरणके लिये एक बूढे किसानकी क़हानी लिखी जाती है। उसने मरते समय अपने तीन आलसी बेटोको बुलाकर कहा कि अमुक खेतमे—जो मै तुम्हारे लिए छोड़े जाता हूँ—बहुतसा धन गड़ा हुआ है। यह सुनते ही लड़के उछल पड़े और पूछने लगे कि पिताजी, वह धन कहाँ गड़ा हुआ है? बापने उत्तर दिया, सुनो, बताता हूँ; किंतु तुम्हे उसे खोद कर निकालना पड़ेगा। अभी उसने ठीक ठीक स्थान नहीं वतलाया था कि उसका दम निकल गया। उसके मरने पर रुपयोके लोभसे बेटोंने तमाम खेत खोद डाला, परंतु कही कुछ न निकला। लाचार होकर उन्होने उसमें बीज वो दिया। फसलके वक्त उस खेतमें बेहद अनाज पैदा हुआ। इसका कारण केवल यह था कि उन्होने रुपयोंके लोभसे जमीन खोद खोदकर बहुत अच्छी बना ली थी। जब जमीनकी पैदावारसे उन्हे बहुत कुछ लाभ हुआ, तब

उन्होंने समझा कि यह वही धन है जिसको हमारे बापने मरते समय हमे बतलाया था।

यद्यपि शुरूमें परिश्रम कठिन और दूभर होता है किंतु आदर-सत्कार और हर्ष-आनंद इसीसे प्राप्त होता है। निर्धनतासे इसकी समानता हो सकती है, किंतु यशः कीर्ति भी इसीमे है। परिश्रमके विना क्या मनुष्यत्व, क्या जीवन और क्या सभ्यता सब निरर्थक है। मनुष्यका गौरव परिश्रमसे ही है। सारा साहित्य विज्ञान इसीकी कृपासे है। वह विद्या जिसके द्वारा हमको ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त होता है परिश्रमका ही फल है। यद्यपि परिश्रम एक प्रकारका बोझ है, किंतु वास्तवमे प्रतिष्ठा और गौरवका साधक है। जो लोग पवित्र उद्देश्य और उच्च अभिप्रायोसे परिश्रम करते हैं उनके लिये यह पूजा, प्रशंसा, कर्तव्य, नित्यता और अक्षयता है।

ऐसे बहुतसे मनुष्य है जो श्रमके नियम (व्यवस्था) पर दूषण लगाते है। किंतु वे यह नहीं समझते कि यह केवल ईश्वरकी इच्छाके अनुकूल ही नहीं किंतु बुद्धिकी वृद्धि और अपने स्वभावसे पूर्ण लाभ उठानेके लिए अत्यंत आवश्यक है। दुनियामें आलसी मनुष्यसे बढकर कोई दूसरा निंद्य नहीं। उसका जीवन बिलकुल पोच और लचर है। उसके लिए इन्द्रियपोषणको छोड़कर और कोई काम नहीं। क्या ऐसे मनुष्य सबसे जियादह अभागे और असंतोषी नहीं है? वे सदा शिथिलता और श्रांतिकी दशामे पड़े रहते है। न तो वे स्वयं अपने लिए कुछ करते है और न दूसरोको कुछ लाभ पहुँचा सकते है। वे एक ऐसे स्तंभके समान है जिसने जमीनको व्यर्थ घेर रक्खा है। उनके जीनेसे न किसीको खुशी और न उनके मरनेसे किसीको

रंज । सच है, दुनियामे आलसी मनुष्योसे बढ़कर कोई निंदित और घृणित नहीं है।

बड़े बड़े कामोसे लेकर छोटे छोटे कामोंतक सबमे परिश्रमकी जरूरत है । सभ्यता, शिष्टता, परोपकार आदि सबकी उन्नति श्रम पर निभर है । जितने उपयोगी और बहुमूल्य विचार है वे सब श्रम और अनुभवके परिणाम है । कोई भी काम चाहे छोटा हो चाहे बड़ा, चाहे शरीरका हो चाहे मस्तकका, बिना परिश्रमके नहीं होता ।

कोई बड़ा काम एकदम नहीं हो जाता किन्तु लगातार उद्योग और श्रमके बाद अवश्य हो जाता है । यदि बापसे न हुआ तो बेटेसे हो जायगा । यदि आज सफलता नहीं हुइ तो कल हो जायगी । परिश्रमसे छोटे दर्जेके मनुष्य भी बड़े दर्जे पर पहुँच जाते है और गौरव तथा प्रतिष्ठाके पात्र हो जाते है । विद्या तथा कलाकौशलके इतिहासमे प्रायः उन्हीं लोगोके नाम है जो अपने जीवनकालमे परिश्रमी थे । जैसे एक लुहारने स्टीम एंजिन बनाया, एक नाईने रुई कातनेकी कल जारी की और बहुतसे कारीगरोंने—लगातार एकके बाद दूसरेने—यंत्रविद्यामे सफलता प्राप्त की ।

परिश्रमी मनुष्यसे हमारा अभिप्राय केवल उस मनुष्यसे नहीं है जो शारीरिक श्रम करता है; क्योकि यह तो पशु भी करते है, किंतु वह मनुष्य परिश्रमी कहा जा सकता है, जो मस्तकसे भी काम लेता है और जिसकी शारीरिक शक्ति मस्तककी शक्तिके अधीन है । चित्रकार, ग्रथकार, कवि और व्यवस्थापक इनकी गणना उच्चजातिके परिश्रमीयोमें है । यद्यपि जातिके शरीरपोषणके लिए यह श्रम इतना जरूरी नहीं है जितना कि किसान या गवालेका है परतु समाज या संघको सभ्य और शिक्षित बनानेके लिए बड़ा जरूरी है ।

परिश्रमकी आवश्यकता पर इतना ही कहकर अब हम यह दिखलाना चाहते है कि इससे जो लाभ होते है उनका किस प्रकार उपयोग किया जाता है। यह कहनेकी जरूरत नहीं कि यदि हमारे बाप दादा हमारे लिए काफी समान न छोड़ जाते, तो हम पहलेकी तरह असभ्य और गॅवार रहते। सामानसे मतलब रुपये पैसेसे नही किंतु मन, बुद्धि, मानसिक योग्यता, चातुर्य और आविष्कारसे है। संसारके महापुरुपोने इन्ही गुणोको संचय करके सभ्यताको प्राप्त किया है। गुणोकी प्राप्ति श्रमका फल है। जब परिश्रमी मनुष्य संग्रह करने लगते है तभी सभ्यताके परिणामोकी वृद्धि होने लगती है। हम पूर्वमे कह आये है कि मितव्ययता सभ्यताके साथ प्रारम्भ हुई और अब हम बलपूर्वक कहते है कि मितव्ययतासे ही सभ्यता प्राप्त हुई। इसीसे धन पैदा होता है और धन परिश्रमसे मिलता है। अतएव धनवान् केवल वही पुरुष है जो अपनी सारी आमदनी खर्च नहीं कर देता।

किंतु मितव्ययता स्वाभाविक गुण नहीं है। इसको उद्योग करके प्राप्त करना होता है। इसके लिए इच्छाओंका निरोध करना पड़ता है और दूरदर्शिता और विचारशीलताको दृष्टिगोचर रखते हुए विषयवासनाओका दमन करना पड़ता है। मितव्ययता आजकी जरूरतको पूरा करती है और कलके लिए सामग्री इकट्ठा करती है।

एडवर्ड डेनिसन साहबका कथन है कि मनुष्यको सदैव भावी आवश्यकताओका खयाल रखना जरूरी है। उसे सदा परिणामदर्शी होना चाहिए। जो परिणामदर्शी है वह मानो अस्त्रशस्त्र धारण किये हुए तैयार खड़ा है। भविष्यको जानना इसमे कोई महत्त्व नहीं है किंतु भविष्यके लिए तैयार रहना इसमें बड़ा भारी गुण है।

परंतु दुनियामें उन लोगोंकी संख्या अधिक है जो भविष्यका कुछ भी खयाल नहीं करते—वे अपनी भूत अवस्थाको भी बिलकुल भुला देते है। उनको केवल वर्तमानकी चिंता है। वे न तो अपने लिए कुछ जमा करते है और न अपने कुटुम्बके लिए। जितना कमाते है सब खर्च कर डालते है। उनकी आमदनी जियादह भी है, किंतु सब उड़ा देते है। ऐसे पुरुष सदा निर्धन और दरिद्र रहते है।

ठीक यही हाल प्रत्येक देश और समाजका है। जो देश अपनी आमदनीका सारा भाग खर्च कर डालता है और भविष्यके लिए कुछ जमा नही करता, उसके पास कोई पूँजी नहीं होती। इसकी दशा उन अपव्ययी मनुष्योंके समान है जो जितना कमाते है सब चटोरेपनमें उड़ा देते है और गॉठमे कौडी भी नहीं रखते। जिस देशमे धन नहीं होता वह किसी प्रकारका व्यापार या व्यवसाय नहीं कर सकता। न उसमे जहाज होते है, न रेले होती है, न सड़के होती है और न नहरे। अतएव मितव्ययताके साथ परिश्रम ही सभ्यताकी जड है।

स्पेन देशको देखो। वहाँके निवासी जिस भूमिकी उपजको बहुत जियादह समझते है वह हमारे यहाँ बहुत कम दर्जेकी गिनी जाती है। पहले वहाँ एक नदीके किनारे पर १२,००० ग्राम आबाद थे, किंतु अब उनकी सख्या सिर्फ ८०० रह गई है और वे भी कगालो और भीखमंगोंसे भरे हुए है। स्पेनके लोग कहा करते है कि जमीन अच्छी है, आकाश अच्छा है, सिर्फ वे ही चीजे खराब है जो जमीन और आकाशके बीचमें है। स्पेनवालोंके लिए लगातार मेहनत करना एक असम्भव बात है। कुछ तो आलस और कुछ अभिमानके कारण उनसे परिश्रम नहीं होता। उन्हें काम करनेमें तो शर्म मालूम होती है, परंतु भीख मॉगनेमें कुछ भी शर्म नहीं।

समाजमें दो प्रकारके मनुष्य होते है,—जोड़नेवाले और खर्च करनेवाले, दूरदर्शी और अदूरदर्शी, मितव्ययी और अपव्ययी, निर्धन और धनवान्।

जो मनुष्य परिश्रम करके मितव्ययतासे कुछ रुपया जमा कर लेते है वे अपने काममे दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति करते है और धीरे धीरे वाणिज्य व्यापार प्रारम्भ करके थोड़े ही दिनोमे धनवान् बन जाते है।

जो लोग मितव्ययी है वे मकान बनवाते है, कल कारखाने खोलते है, कोठियाँ कायम करते है, रेल जहाज बनवाते है, खाने खुदवाते है, एंजिन लगवाते है, अर्थात् भाँति भाँतिके नये नये काम जारी करते है।

यह सब मितव्ययताका फल है और धनको उत्तम कार्योंमें लगानेकी महिमा है। जगत्की उन्नतिमें अपव्ययी मनुष्यका कोई भाग नहीं। जितनी उसकी आमदनी है वह सब खर्च कर डालता है। उससे किसीको कुछ लाभ नहीं पहुँचता। चाहे वह कितना ही धन पैदा कर ले, किंतु उसकी दशामें किसी तरहकी कोई उन्नति नही होती। वह सदा दूसरोंका सहारा ताकता रहता है और मितव्ययी मनुष्यका दास बना रहता है।

दूसरा अध्याय ।

मितव्ययका अभ्यास ।

(विद्वानोके वाक्य ।

सबसे बड़ा काम अपने आपको वशमे करना है ।

बहुतसे आदमी वर्तमानके लिए परिश्रम करते हैं और थोडेसे भविष्यके लिए, किन्तु बुद्धिमान् मनुष्य वर्तमान और भविष्य दोनोंके लिए करते हैं, अर्थात् आज कलके लिए और कल आजके लिए ।

सारी सफलताका गुप्त रहस्य अपनी इच्छाओका निरोध करना है । ......यदि तुम एक बार अपने पर काबू पा जाओ तो यह (काबू) तुम्हारा सर्वोत्तम शिक्षक है । जब तुम मुझे यह सिद्ध करके दिखलाओगे कि तुम अपनेको वशमे कर सकते हो तब मैं कह सकूँगा कि तुम शिक्षित हो, नहीं तो इसके बिना तुम्हारी सारी शिक्षा किसी भी कामकी नही ।

सारी दुनिया चिल्ला रही है कि ऐसा कौन व्यक्ति है जो हमको बचावे । हमको ऐसे व्यक्तिकी जरूरत है, परतु उसके लिए दूर मत जाओ । वह तुम्हारे पास है । वह तुम हो, मैं हूँ और हममेसे हर एक है ।......... हम अपनेको मनुष्य कैसे बनावे ? इसके बराबर कोई कठिन काम नही, यदि हम यह नही जानते कि किस तरह इसके लिए दृढ़ सकल्प करना चाहिए । परतु इसके बराबर कोई काम आसान नही यदि हम इसके लिए दृढ़ सकल्प करनेको तैयार हैं ।

\+ \+ × \+

हम सुख और शान्तिको प्राप्त कर सकते है, परंतु तभी जब उनके प्राप्त करने और उनसे लाभ उठानेके लिए हम उचित उपायोंको काममें लावें । जिन लोगोंकी अच्छी आमदनी है वे तो धनवान् बन

सकते है और संसारकी भलाई और उन्नतिमे भी पूरा पूरा योग दे सकते है; किन्तु यह बात कि वे अपनी या अपनी जातिकी दशामे किसी प्रकारकी संतोषजनक उन्नति कर ले केवल उनके श्रम, साहस, सत्य और मितव्यय पर निर्भर है ।

किसी समाजको धनके अभावसे उतनी हानि नहीं पहुँचती जितनी धनके व्यर्थ नष्ट करनेसे पहुँचती है । धन पदा करना आसान है, किंतु उसका खर्च करना कठिन है । किसी आदमीकी आमदनीसे उसके धनका अंदाजा लगाना ठीक नहीं, किंतु उसके खर्च और गृहप्रबन्धकी योग्यतासे लगाना चाहिए । यदि कोई मनुष्य परिश्रम करके अपनी तथा अपनी कुटुम्बकी आवश्यकताओसे अधिक पैदा कर लेता है और खर्च करके कुछ बचा भी लेता है तो समझ लेना चाहिए कि निःसंदेह समाजहित और जात्युपकारके अंश उसमे विद्यामान है । चाहे बंचतकी रकम थोड़ी ही क्यो न हो, तो भी वह उसको स्वतंत्र रखनेके लिए बहुत है ।

जिस कारीगरको आज अच्छी मजूरी मिलती है, कोई कारण नहीं कि वह एक दिन धनवान् न बन जावे । इसके लिए केवल अपनी इंद्रियोको अपने वशमे करने और घरका योग्य प्रबंध करनेकी जरूरत है । आज जितने बड़े बड़े शिल्पनेता देखनेमें आते है वे प्रायः मामूली हैसियतके लोगोके घर पैदा हुए है । काम करनेवाले और न करनेवालेमे केवल अनुभव और चातुर्यका अंतर है और यह काम करनेवाले ही पर निर्भर है कि वह अपने रुपयेको बचावे अथवा खोवे । यदि वह बचावेगा तो उसके सदुपयोगमे लानेके उसे अनेक अवसर मिलते रहेंगे ।

एक महाशय कहते है कि एक दिन मैंने अपने कुछ मित्रोंसहित एक कारखानेका अवलोकन किया, जिसमे कोई ८०० मशीने और तीन चार हजार आदमी काम कर रहे थे। जव हम लौटने लगे, तब मेरे एक मित्रने कारखानेके मालिकके कधे पर हाथ रखकर हॅसते हुए कहा कि, २५ वर्प पहले ये महाशय भी एक कारीगर थे और यह तमाम कारखाना इनके ही श्रम और मितव्ययका फल है। यह सुनते ही मालिकने मुसकराते हुए उत्तर दिया, नहीं, यह तमाम मेरी वजहसे नहीं है बल्कि मेरी स्त्री भी—जब मैंने उससे शादी की—कपड़ा बुन कर एक रुपया रोज कमा लिया करती थी।

समयको सावधानीसे काममे लाना मानो धनको सावधानीसे खर्च करना है। फ्रैंकलिन महोदयका कथन है कि समय एक अमूल्य रत्न है। यदि किसीको धनप्राप्तिकी अभिलाषा है, तो उसे उचित है कि समयको योग्य रीतिसे खर्च करे। ज्ञान, विज्ञान, शिल्प साहित्यादि अनेक उत्तम कार्योंमे समयका सदुपयोग हो सकता है। नियमपूर्वक चलनेसे बहुत कुछ समय बच सकता है और उद्देश्योंकी पूर्ति भी हो सकती है। प्रत्येक कार्य व्यवस्थित और नियमपूर्वक होना चाहिए। गृहिणीके लिए भी इस गुणकी अत्यंत आवश्यकता है। प्रत्येक वस्तुके लिए नियत स्थान होना चाहिए और हरएक चीज अपनी जगह पर होनी चाहिए। हरएक कामके लिए वक्त होना चाहिए और हरएक काम वक्त पर होना चाहिए।

इस वातके दिखलानेकी जरूरत नहीं कि मितव्यय कैसा और कितना उपयोगी है। कोई नहीं कह सकता कि इसका पालन नहीं करना चाहिए। इसके अगणित उदाहरण हमारे सामने मौजूद है। पहले सम-

यके लोग जो काम कर गये है उन्हे हम भी कर सकते है। मितव्यय हानिकारक या दुःखप्रद भी नहीं है; बल्कि इसके विपरीत यह हमको अपमान, अवज्ञा और घृणासे बचाता है। यद्यपि इसके अनुसार प्रवर्तनसे हमको अपनी वासनाओको दमन करना पड़ता है, किंतु यह हमे योग्य सुखों और उचित भोगोसे वञ्चित नहीं रखता। यह हमको अनेक पवित्र सुख और आनन्दकी सामग्री प्रदान करता है जिनसे अमितव्ययी और अपव्ययी सर्वथा वंचित रहते है।

किसी व्यक्तिको यह कदापि न कहना चाहिए कि मै मितव्यय नहीं कर सकता। ऐसे बहुत कम पुरुप है जो अठवाड़ेमे रुपया दो रुपये भी नहीं बचा सकते। यदि एक रुपया भी सप्ताहमे बचाया जावे तो २० सालमें १००० रु० हो जावेगे और अगले २० वर्पोंमे सूद वगैरह लगाकर कई हजार हो जावेगे। यदि तुम एक रुपया साप्ताहिक भी नही बचा सकते तो न सही, आठ आने, चार आने, दो आने ही बचाना शुरू करो, किन्तु करो जरूर। सेविंगबेक (डाकखानेके) हर जगह मौजूद है, उनमे जमा करना अभीसे शुरू कर दो—चाहे कितनी ही थोड़ी रकम क्यो न हो। इससे मितव्ययका अभ्यास होने लगेगा जिसकी बहुत बड़ी आवश्यकता है।

मितव्ययके लिए किसी असाधारण शक्ति, साहस अथवा योग्यताकी आवश्यकता नहीं है और न यह कोई ऐसा काम है जिसके अनुसार चलना मनुष्यकी शक्तिसे बाहर हो। इसके लिए साधारण बुद्धि दरकार है। हॉ, इस बातकी बड़ी जरूरत है कि मनुष्य स्वार्थयुक्त भोगविलासोसे मुँह मोड़ ले। वास्तवमे मितव्यय प्रतिदिनके कार्य्यमे एक साधारण बात है। इसके लिए किसी बड़े भारी

इरादेकी जरूरत नहीं है; केवल संतोष और इन्द्रियदमनकी जरूरत है; इसका प्रारंभ करना ही इसका उपाय है। ज्यो ज्यो इसका अभ्यास किया जायगा त्यों त्यो सरलता होती जायगी और शीघ्र उन बातोका बदला मिल जायगा जिनके त्याग करनेमें शुरूमे कठिनाई पड़ी थी।

यहाँ प्रश्न किया जा सकता है कि क्या यह संभव है कि वह मनुष्य भी जिसकी आमदनी बहुत ही थोड़ी है और जो सबकी सब कुटुंब-पालनमें लग जाती है, कुछ बचा सकता है और सेविंग बेकमें जमा कर सकता है? इसका उत्तर यही है कि हाँ, यह संभव है। बहुतसे बुद्धिमान् और परिश्रमी पुरुष ऐसा करते है; वे कुछ न कुछ बचाकर सेविंग बेंक वगैरहमें अवश्य जमा करते रहते है। अतएव जब कुछ मनुष्य ऐसा कर सकते है, तब सबको विना किसी उचित सुखका त्याग किये, अवश्य ऐसा करना चाहिए।

यह बात कितनी स्वार्थयुक्त है कि कोई आदमी अच्छी माकूल तनख्वाह मिलने पर भी अपनी सारी आमदनी अपने लिए भोगविला-सकी सामग्री संचय करनेमे ही खर्च कर दे, अथवा यदि उसके घरमें बाल बच्चे है तो उनके लिए ही सब खर्च कर दे, और कुछ भी बचा-कर जमा न करे। हमने देखा है कि अनेक मनुष्योकी आमदनी उन-के जीवनकालमें अच्छी रही परंतु उन्होने कुछ भी संचय नहीं किया-सबका सब खर्च कर दिया। उनके मरनेपर उनकी स्त्री और बालबच्चे पैसे पैसेके लिए घर घरकी भीख मॉगने लगे। न उनका कोई रक्षक रहा और कोई न पूँछनेवाला। कहिए, उनसे जियादह स्वार्थी और अप-व्ययी कौन होगा?

यदि कुछ भी विवेकसे काम लिया जाय तो ऐसा परिणाम कभी न हो। जलपानादिमें यदि थोड़ी भी कमी कर दी जाय तो सबका सब

रुपया अपने ही लिए खर्च करनेके बदले थोड़े दिनोमे कुछ न कुछ दूसरोके लिए भी जमा हो जायगा। हाँ, निर्धनसे निर्धन मनुष्यका यह मुख्य कर्त्तव्य है कि चाहे कितनी ही थोड़ी रकम क्यो न हो किंतु वह अवश्य कुछ न कुछ बचावे जो आपत्तिकालमें—जिसमे मनुष्य कभी न कभी अचानक फँस ही जाता है,—उसके तथा उसके कुटुंबियोंके काम आवे।

मिलान करनेसे जान पड़ता है कि बहुत कम आदमी धनवान् हो सकते है, किन्तु यह शक्ति हरएक आदमीमें है कि श्रम और मितव्ययसे अपनी जरूरतोको पूरा कर सके और इतना रुपया भी जमा कर सके कि जो उसे बुढ़ापेमे निर्धनताके कष्टसे बचा सके। मितव्ययमें अवसरका न मिलना बाधक नहीं होता किन्तु दृढ़ संकल्पका न होना बाधक होता है। मनुष्य लगातार शारीरिक और मानसिक परिश्रम कर सकते है, किन्तु अपव्यय और अमितव्ययसे जीवन व्यतीत करना नहीं छोड़ते।

इच्छाको वशीभूत करनेकी अपेक्षा भोगविलासमें रहना लोग अधिक पसन्द करते है। १०० पीछे ९० आदमी इच्छाओंके दास बने रहते है। वे जो कुछ कमाते है सब खर्च कर डालते है। केवल मजूर और कारीगर लोग ही अपव्ययी नहीं होते किंतु नित्य ही सुननेमें आता है कि अमुक अमुक मनुष्योने वर्षोंतक सैकड़ो रुपये कमाये और खर्च किये, परंतु जब वे अकालमृत्युके ग्रास हो गये, तब उन्होंने अपनी संतानके लिए एक कौड़ी भी बाकी न छोड़ी। उनकी मृत्यु पर वही घर जिसमे वे रहते थे और वही सामान जिससे वह मकान सजा रहता था, दूसरोंके हाथ बिक जाता है। उनकी बिक्रीसे जो रुपया

आता है उससे ही उनका क्रियाकर्म किया जाता है और वह क
चुकाया जाता है जो उन्होने अपने जीवनकालमे लिया था।

धन सैकड़ों व्यर्थ और निर्मूल पदार्थोंका प्रतिनिधिस्वरूप है। कि
साथ ही वह एक बहुमूल्य वस्तुको भी प्रकट करता है, जिसे स्वतंत्रत
कहते है। अतएव इस अपेक्षासे यह एक बहुत ही जरूरी चीज है
और जब धन स्वतत्रताका कारण है और उसका जमा होना मित
व्यय पर निर्भर है तब मितव्ययता छोटे दर्जेसे निकलकर उ
माननीय पद पर आरूढ हो जाती है। बुल्वरका कथन है कि "रुप
येके मामलेमें कभी छिछोरापन न करना चाहिए। रुपया गुण, यश
गौरव और चरित्र है। सत्य, शील, उदारता, दयालुता, न्यायपरायणता
दूरदर्शिता, आदि उत्तम गुण धनके योग्य व्यय पर ही निर्भ
है और लोभ, कृपणता, अपव्यय, अदूरदर्शिता आदि अनेक अवगुण
भी रुपयेके दुरुपयोगसे पैदा हो जाते है।"

उस जातिने कभी उन्नति नहीं की जिसने जो कमाया सो ख
लिया। जो लोग अपनी आमदनीका सारा रुपया खर्च कर डालते है
वे सदा निर्धनताके किनारे पर आकाशमे लटके खड़े रहते है। वे विवश
और निर्बल है, समय और अवसरके गुलाम है, अपनेको दरिद्र रखते
है और न केवल अपना गौरव खोते है किंतु दूसरोका भी खो डालते
है। यह असम्भव है कि वे स्वाधीन या स्वतंत्र रह सके। मनुष्यको
सारे उत्तम गुणोसे वचित कर देनेके लिए फिजूलखर्च या अपव्ययी
होना ही काफी है।

परंतु उस मनुष्यकी दशा उससे सर्वथा भिन्न है जो कुछ बचा
कर जमा करता जाता है, चाहे वह थोड़ा ही क्यों न हो। वही थोड़ास

धन जो उसने संचय किया है सदा उसको बल और शान्ति प्रदान करता रहता है। वह कभी समय और भाग्यका शिकार नहीं बनता, किंतु संसारकी घटनाओंका साहसपूर्वक वीरतासे सामना करता है। वह अपना स्वामी आप है, किसीके अधीन नहीं। न उसको कोई खरीद सकता है और न कोई बेच सकता है। वह स्वाधीन और स्वतंत्र है और वृद्धावस्थाके सुख और शातिमय आनंदका स्वागत करनेकी राह देखता है।

ज्यो ज्यों मनुष्य विचारशील और बुद्धिमान् होता जाता है त्यो त्यों परिणामदर्शिता और मितव्ययता आती है, किंतु अविचारी मनुष्य अपनी सारी आमदनी खर्च कर डालता है, पशुओकी तरह आगेकी कुछ चिंता नहीं करता और निर्धनता तथा अपने आश्रित बालबच्चोके अधिकारोकी भी परवा नहीं करता। इसके विपरीत विचारशील मनुष्यको सदा भविष्यका खयाल रहता है; वह अच्छे समयसे बुरे समयके लिए तैयार हो रहता है और अपने कुटम्बकी आवश्यकताओको भी पूरी करता रहता है।

जो पुरुष विवाह करता है वह बहुत बड़ी भारी जिम्मेदारीको अपने सिर पर उठाता है; पर बहुत कम लोग इस पर विचार करते हैं। शायद इसमे भी कुछ बुद्धिमानी है! क्योंकि सम्भव है कि यदि इस पर दीर्घदृष्टिसे विचार किया जाय तो शादी—विवाह—होने ही बंद हो जावे, फिर कोई जिम्मेदारी वाकी ही न रहे। परंतु जो पुरुष विवाह करे उसे इस बातका तो तत्काल ही दृढसंकल्प कर लेना चाहिए कि निर्धनता यथाशक्ति और यथासम्भव मेरे घरमे कभी न घुसेगी और मेरे मरनेके बाद मेरे बालबच्चे समाज पर किसी प्रकारके भारस्वरूप न होंगे।

इस अभिप्रायसे मितव्ययका अभ्यास करना मनुष्यका मुख्य कर्तव्य है। इसके बिना कोई सत्यवक्ता या धर्मात्मा नहीं हो सकता। अदूरदर्शिता अर्थात् भविष्यके लिए कोई सामान जमा न करना स्त्री और बच्चोके लिए अन्याय है। इस अन्यायका कारण अज्ञानता है। जो पिता अपनी सारी आमदनी तरह तरहके व्यसनो और भोगविलासोमे खर्च कर डालता है और कुछ भी नही बचाता, वह अपनी निराश्रित सतानको जन्मपर्यंत दुःख सहनेके लिए छोड़कर चला जाता है। क्या इससे भी अधिक और कोई अन्याय हो सकता है? यह असावधानी प्रायः प्रत्येक जातिमे अधिकतासे पाई जाती है। जघन्य श्रेणीके लोगोंके साथ साथ मध्यम और उत्तम श्रेणीके लोग भी इस अपराधके अपराधी है। वे अपनी हैसियतसे बढकर फिजूल खर्च कर डालते है, बाहरी सजधज और ठाटबाटके इच्छुक रहते है और अपनेको धनवान् सिद्ध करनेका उद्योग करते है जिससे उन्हे शराब उड़ाने, दावते खिलाने, नाच तमाशे कराने वगैरहमे खर्च करनेका मौका मिले।

एक बार जब मिस्टर ह्यूमने हाउस आफ कामन्समे यह कहा था कि हमारे खर्च बहुत बढ रहे है, तब सब लोग हॅस पड़े थे, परंतु उनका कथन अक्षर अक्षर सत्य था। बल्कि उस वक्तकी अपेक्षा अब और भी सत्य है। आजकल हमारे खर्च बहुत बढे हुए है। हम अपनी हैसियतसे बढकर खर्च करते है, आमदनीको व्यर्थ खो देते है और बहुधा अपने जीवनको उसके पीछे नष्ट कर देते है।

बहुतसे आदमी रुपया पैदा करनेकी तो योग्यता रखते है परतु उसे किफायतसे खर्च करना नहीं जानते। पैदा करनेमें तो चतुर है किंतु खर्च करनेमें मूर्ख है। लोग इन्द्रियजन्य क्षणिक सुखोंमे बिना सोचे

समझे फँस जाते है । प्रायः असावधानीके कारण ऐसा होता है । परंतु दृढ़चित्त तथा दृढसंकल्पद्वारा इस इच्छाको आसानीसे काबूमें किया जा सकता है और यह अवश्य करना चाहिए कि जिससे उन्हें आगामीमे आकस्मिक खर्चोंके कारण कष्ट न उठाना पड़े ।

बचानेका अभ्यास अधिकतर उस समय होता है जब अपनी जातिकी उन्नति अथवा अपने अधीनो तथा कुटुम्बियोंकी दशा सुधारनेका विचार दिलमें हो । इस विचारसे सारी फिजूलखर्ची जाती रहती है । यदि जरूरत नहीं है तो सस्तेसे सस्ते दामोमे खरीदी हुई चीज भी महँगी ही है । छोटे छोटे खर्चोंसे बड़े बड़े खर्च होने लगते है । बिना जरूरी चीजोंके खरीदनेसे बहुत जल्द फिजूलखर्चीकी आदत पड़ जाती है । रोमके प्रसिद्ध सिद्धान्तवेत्ता सिसरोका कथन है कि "चीजे खरीदनेका जनून न होना ही मानों धनका जमा होना है ।" बहुतसे लोगोको चीजे खरीदनेका मर्ज होता है । जहाँ उन्होने कोई चीज सस्ती देखी तुरन्त ही उसके खरीदनेके लिए उत्सुक हो गये । यदि उनसे पूछा जाय कि इसकी क्या जरूरत है ? तो जवाब देंगे कि इस समय तो कोई नहीं, पर हॉ कभी न कभी काम आ ही जायगी । ऐसे ही लोग बहुतसी पुरानी चीजे खरीद लिया करते है और अपना तमाम रुपया खो देते है । होरेस वैलपोलने एक वार कहा था कि "अब फिर कभी खरीद न होगी, क्योकि मेरे घरमें एक इंच भी जगह खाली नहीं रही और एक पाई भी नहीं बची !"

प्रत्येक व्यक्तिको अपनी युवावस्थामे इतना सामान अवश्य जमा कर लेना चाहिये कि जिससे वृद्धावस्थामें आनंदपूर्वक जीवन व्यतीत हो सके । उस मनुष्यकी दशा कैसी शोचनीय है जिसने अपने जीवनका

अधिकतर भाग अच्छी दशामे बिताया, किंतु अंतमे अन्न तकका साँसा पड़ गया और सिवाय भीख मॉगने और दूसरोको आगे हाथ पसारनेके और कोई साधन उसके निर्वाहका न रहा। अतएव यह विचार प्रत्येक व्यक्तिके मनमे आरम्भसे ही दृढ़रूपसे जम जाना चाहिए कि परिश्रम करके किफायतसे खर्च करना चाहिए कि जिससे भविष्यमे अपनेको तथा अपने कुटुम्बको लाभ हो।

वास्तवमें युवास्थामे ही बचानेका अभ्यास करना चाहिए और वृद्धावस्थामे उसे उदारतासे खर्च करना चाहिए; किंतु आमदनीसे अधिक उस समय भी नहीं। एक नौजवानको जिंदगीके मैदानमे बड़ा लम्बा चौड़ा सफर तै करना है। इस अवस्थामे ही वह किफायतशारीके उसूलोका भलीभॉति अभ्यास कर सकता है। किंतु एक बूढा आदमी अपनी जीवनलीला पूरी करनेवाला है। और वह यहाँसे अपने साथ कुछ नहीं ले जा सकता।

परंतु ऐसा देखनेमे नहीं आता। प्रत्येक नवयुवककी यह इच्छा होती है कि मै वैसी ही उदारता और स्वतन्त्रतासे खर्च करूँ जिस तरह मेर माता पिताने किया। कभी कभी उनसे भी बढकर खर्च करनेको जी चाहता है और वह कर भी डालता है। परिणाम यह होता है कि वह शीघ्र ही ऋणके भारसे दब जाता है, अपनी लगातार जरूरतोको पूरा करनेके लिए अनुचित और पापमय उपायोको काममें लाता है, रुपया शीघ्र पैदा करनेकी कोशिश करता है और इसके निमित्त शक्तिसे बाहर व्यापार करता है, किंतु अतमें घाटा उठाता है। इस प्रकार उसे अनुभव तो हो जाता है, किंतु यह अनुभव अच्छे कामका नहीं होता— बुरे कामका होता है।

विश्वविख्यात महात्मा सुकरातका कथन है कि "...
पिता अर्थात् नेताको अपने मितव्ययी पड़ोसीका अनु...
और उन पुरुषोके जीवनसे लाभ उठाना चाहिए जो ...
उत्तम रीतिसे व्यय करते है।" मितव्ययक...
अत्यन्त आवश्यक है। दृष्टान्तो द्वारा यह बात भलीभाँ...
सकती है। मान लो कि दो पुरुष है। हरएककी आमदनी ...
रु० है। दोनोके रहने-सहनेके ढंग और घरके खर्च भी ...
एक तो कुछ जमा नही करता और कहता है कि मै कुछ ...
कर सकता, किन्तु दूसरा कहता है कि मै जमा कर सकता ...
नित्य थोड़ा थोड़ा रुपया सेविंगबेकमें जमा करता जाता है। ...
होता है कि एक दिन यह धनवान् कहलाने लगता है।

सेमुएल जानसन दरिद्रताके कष्टोंसे भलीभाँति परिचित था। ...
ऐसा दरिद्र था कि एक बार उसने अपने नामके स्थानमे जानसन न ...
डिनरलेस (अर्थात् जिसको खाना न मिले) लिख दिया था। वह ...
योंकी तरह गलियोमे फिरा करता था और उसे इतनी जगह भी न...
मिलती थी कि रातके वक्त कहीं पड़ रहे। जानसनकी प्रारम्भिक अव...
स्था ऐसी दरिद्रतामे बीती कि वह उसे तमाम उमर नहीं भूला। ...
सदा अपने मित्रो और पाठकोको समझाया करता था कि निर्धन...
बचना चाहिए। सिसरोके समान उसका भी मत था कि ...
और वृद्धिका सर्वोत्तम मार्ग मितव्ययता है। वह मितव्य...
दूरदर्शिताकी पुत्री, संयमकी भगिनी और ...
कहा करता था। उसका कथन है कि "निर्धनतासे ...
समस्त द्वार बंद हो जाते है और पापसे बचनेकी शक्ति ...

हो जाती है।" अतएव प्रत्येक शुभ उपायसे इसके दूर करनेका प्रयत्न करना चाहिए। दृढसंकल्प कर लो कि दरिद्र नहीं होंगे। जो कुछ तुम्हारे पास है, उससे कम खर्च करो। मितव्यय केवल सुख शातिका ही आधार नहीं है, किंतु परोपकारका भी मूल है। वह मनुष्य कभी दूसरेकी सहायता नहीं कर सकता जिसे स्वयं सहायताकी आवश्यकता है। दूसरेको देनेसे पहले अपने पास काफी पूँजी जमा कर लेनी उचित है।

जानसनने और भी कहा है कि "दरिद्रता मानवीय सुखकी कट्टर शत्रु है। यह स्वतंत्रताका घात कर देती है। कुछ सद्गुणोको असम्भव और कुछको कठिन बना देती है।" जो लोग दरिद्रतासे भयभीत रहते है उनको चाहिए कि अपने मितव्ययी पूर्वजोके नीतियुक्त वाक्योंका स्मरण करे और अपव्ययसे बचनेके उपयोगी उपायोको ग्रहण करे। मितव्ययके बिना कोई धनवान् नहीं हो सकता और मितव्यय होते हुए कोई निर्धन नहीं हो सकता।

यदि मितव्यय पर इस भावसे दृष्टि डाली जाय कि इसका पालन करना आवश्यक ही है तो फिर इसके पालन करनेमे कोई कठिनाई न होगी। जिन लोगोने पहलेसे इस पर ध्यान नहीं दिया है उन्हें यह देखकर आश्चर्य होगा कि सिर्फ दो चार पैसे रोज बचानेसे भी कितनी चरित्रोन्नति, मानसिक वृद्धि और जातीय स्वतंत्रता प्राप्त होती है।

मितव्ययके लिए जितना उद्योग किया जाय उतना ही प्रशंसनीय है। इसके अनुसार काम करना ही इसकी उन्नति है। इससे स्वार्थत्यागका प्रादुर्भाव होता है और संयम वृद्धिको प्राप्त होता है। दूरदर्शिता पर इसकी नीव स्थिर है और दूरदर्शिता ही इसका मूल मंत्र है। यह वि-

षय-वासनाओंको दमन करता है, सुखशांति प्रदान करता है और भय, आकुलताको जिनमे हम लोग नित्य फँसे रहते है, दूर करता है।

कुछ लोग कहते हैं कि यह नहीं हो सकता। पर यह ठीक नहीं। प्रत्येक व्यक्ति कुछ न कुछ अवश्य कर सकता है। यह खयाल कि 'नही हो सकता' पृथक् पृथक् व्यक्तिके और जातिके सर्वनाशका कारण है। इस 'नहीं हो सकता' से जियादह बुरा और कुछ नहीं हो सकता। यदि एक पैसा रोज पान-तम्बाकूमे खर्च हो तो साल भरमें छः रुपये होंगे और अगर जिन्दगी भरका हिसाब लगाया जावे तो मरनेके समय कई सौ रुपये हो जावेगे। यदि यह रुपया पान-तम्बाकूके खर्चसे बचाकर किसी बेंकमे जमा किया जाय तो २० वर्षमे १२० रु० हो जावेगे। बहुतसे आदमी तो एक पैसेकी जगह छः छः पैसेके पान चाब जाते है। यदि ये पैसे जमा किये जावे तो २० वर्षमे ७००—८०० रु० हो जावेंगे। जो मनुष्य केवल दो आने रोजकी शराब पीता है, वह ५२ वर्षमे १००० रु० बरबाद कर देता है!

एक बार एक मालिकने अपने नौकरको सलाह दी कि कुछ रुपया बुरे दिनोंके लिए बचाकर रखना चाहिए। कुछ कालके बाद जब मालिकने नौकरसे पूछा कि "तुमने अपनी पूँजी कितनी बढा ली?" तब उसने जवाब दिया कि "हुजूर कुछ भी नहीं। मैने निस्संदेह आपकी आज्ञानुसार जमा करना शुरू किया था, किन्तु कल इतने जोरसे वर्षा हुई कि तमाम रुपयोंकी शराब पी डाली!"

जो मनुष्य अपना तथा अपने कुटुम्बका विना किसी दूसरेकी सहायताके पालना करता है वह आत्मगौरवके असली अर्थको जानता है। प्रत्येक स्वावलंबी मनुष्यको अपने गौरवकी रक्षा करना उचित है।

न्यायपूर्वक मनुष्यको केवल अपनी ही भलाईका खयाल नहीं रखना चाहिए, किंतु दूसरोंके प्रति जो उसके कर्तव्य है उनका भी पूरा पूरा ध्यान रखना चाहिए। इसके अतिरिक्त अपने आपको कभी नीचेकी ओर नहीं गिराना चाहिए, सदा उच्च बनाना चाहिए और देवताओंसे कुछ ही न्यून समझना चाहिए। अपने उच्च अधिकारका, अपनी उच्च बुद्धिका, अपनी अद्भुत शक्तिका तथा पृथिवी पर अपने उच्चासनका सदैव स्मरण रखना चाहिए। जो मनुष्य इन सब बातोंपर विचार करेगा वह अपनेको तुच्छ समझना तत्काल ही छोड़ देगा। अतएव हर एक मनुष्यको अपने गौरवकी रक्षा करनी चाहिए। अपने शरीरका, अपने मनका, अपने चरित्रका सम्मान करना चाहिए। आत्मगौरव जो आत्मप्रियता पर निर्भर है, मनुष्यको उन्नतिकी पहली सीढी पर चढाता है। यह मनुष्यको उठाने, आगे चलाने, उसकी बुद्धिके बढाने और उसकी दशाके सुधारनेके लिए उत्साहित करता । आत्मगौरव, स्वच्छता, पवित्रता सत्यता, गंभीरता आदि अनेक उत्तम गुणोंकी खानि है। अपनेको नीचा समझना मानों अपनेको डुबा देना है और उस भयंकर चट्टानके नीचे गिरा देना है जिसकी तलीमें कलक और अपयश है।

किसी हद्द तक प्रत्येक व्यक्ति अपनी सहायता कर सकता है। हम उस घासके समान नहीं है जो नदीकी लहरमें फेक दिया जाय और बहता चला जाय और जिसका सिवाय निशानके और कुछ नजर न आवे। हम अपने कार्योंमे स्वतत्र है और ऐसी शक्ति रखते है कि नदीकी लहरो पर अपनेको स्थिर रख सकते है। हममेंसे हरएक आदमी आचरणसम्बन्धी उन्नति कर सकता है, अपने विचारोंको बढा सकता है और अच्छे काम कर सकता है। हम गम्भीरता और मितव्ययतासे जीवन व्यतीत कर सकते है, विपत्तिकालके लिए सामग्री

संचय कर सकते है, उत्तम पुस्तके पढ़ सकते है, बुद्धिमान् शिक्षकोके उपदेश सुन सकते है, अपनेको ईश्वरीय शक्तिकी छत्रछायामे रख सकते है और उच्च उद्देश्योको दृष्टिगत रखते हुए अपनेको उच्च कार्योंमे नियोजित कर सकते है।

एक कविका कथन है कि " अपनेको प्यार करना और समाजको प्यार करना एक ही बात है।" जो व्यक्ति अपनी उन्नति कर सकता है वह जगतकी उन्नति कर सकता है। वह अपनी व्यक्तितासे समाजकी संख्यामे एक सत्यवक्ता पुरुषकी वृद्धि करता है। समाज बहुतसे व्यक्तियोके मिलनेसे बना है, इस लिए यदि किसी समाजका प्रत्येक व्यक्ति अपनी अपनी उन्नति कर ले तो सारे समाजकी उन्नति हो जायगी। समाजोन्नति व्यक्तिगत उन्नतिका ही परिणाम है। सर्वांग कभी पवित्र नही हो सकता जब तक कि उसके जुदा जुदा अंग पवित्र न हों। समाज व्यक्तिगत व्यवस्थाका प्रतिबिम्ब है। ये सब स्वयंसिद्ध सिद्धातोकी पुनरुक्तियाँ है, किंतु पूर्ण प्रभाव डालनेके लिए स्वतःसिद्ध वाक्योकी पुनरुक्तियाँ भी की जाती है।

जिस मनुष्यने अपनी उन्नति कर ली है, वह अपने निकटवासियोकी उन्नतिमे बहुत कुछ सहायता दे सकता है। उसमे इस बातकी पूर्ण शक्ति है। उसकी दृष्टिकी सीमा वढ़ी हुई है। वह दूसरोकी उन त्रुटियोको बहुत अच्छी तरह देख सकता है जो दूर करनेके योग्य है। उनको उन्नत अवस्थामे लानेके वास्ते वह हर समय सहायताके लिए तैयार है। वह स्वयं अपना कर्तव्य पालन कर चुका है और वलपूर्वक दूसरोको अपने समान कर्तव्यपालनके लिए वाधित कर सकता है। वह व्यक्ति किसी समाजकी उन्नति नहीं कर सकता जो स्वयं

विषयवासनाओंकी कीचड़में फँसा हुआ पड़ा है। जो व्यक्ति स्वय मदोन्मत्त और अपवित्र है वह दूसरोंको संयम या शुद्धता कैसे सिखला सकता है? वैद्योंके पड़ोसी प्रायः कहा करते है कि "वैद्यराज, पहले अपना तो इलाज कीजिये।"

इस कथनका यह तात्पर्य है कि जिस सुधार और उन्नतिकी हमको इच्छा है, हमे चाहिए कि पहले हम उसे स्वयं आरम्भ कर दें। हमको अपने मत और अपने विचारोंको अपने जीवनमे ही प्रकाशित करना चाहिए। हमे अपनेको आदर्श बनाकर दिखलाना चाहिए। यदि हम चाहते है कि दूसरोंकी उन्नति हो तो पहले हमें अपनी उन्नति करनी चाहिए। यदि हम चाहते है कि दूसरे लोग सच बोले, चोरी न करे, किफायतसे खर्च करे तो हमे चाहिए कि हम पहले इन बातोंको करने लगे। दूसरे लोग हमे देखकर ही हमारे जैसा करने लगेगे। हमको अपने मुँहसे एक शब्द भी निकालनेकी जरूरत न पड़ेगी। शराबी आदमी अगर किसीको शराब छोड़नेके लिए कहे तो क्या उसके कहनेका कुछ असर पड़ेगा? कदापि नहीं। परंतु यदि कोई साधु महात्मा इसका उपदेश करे तो सैकड़ो आदमियो पर असर पड़ सकता है। गरज यह कि प्रत्येक मनुष्यको स्वयं करके दिखलाना चाहिए। सबसे पहले उसे आत्मगौरव सीखना चाहिए।

जीवनकी असारता इस बातके लिए बड़ी प्रेरणा करती है कि बुरे समयके लिए कुछ संग्रह कर लेना चाहिए। ऐसा करना मनुष्यका धार्मिक आत्मिक और सामाजिक कर्तव्य है। जो मनुष्य अपने और विशेपकर अपने कुटुम्बके लिए संग्रह नहीं करता वह धर्मसे पराङ्मुख है और नास्तिकसे भी बुरा है।

जीवकी क्षणभंगुरता प्रत्यक्ष है । बड़ेसे बड़ा बलवान् और स्वस्थ मनुष्य भी क्षणभरमे किसी दुर्घटना अथवा रोगके कारण मृत्युका ग्रास बन जाता है । अतएव जविनकी अस्थिरता पर हमे वैसा ही विश्वास चाहिए जैसा हमे मृत्युका निश्चय है । एक कहावत भी है कि "ससारमें किसी बातका भी ऐसा निश्चय नहीं है जैसा मृत्युका, परंतु किसी बातका ऐसा अनिश्चय नही है जैसा मृत्युके समयका ।"

मनुष्यके जीवनका कोई निश्चय नहीं । कितने ही तो पैदा होते ही मर जाते है, कितने दस पाँच दिनके होकर मर जाते है, बहुतसे २० वर्षके होनेसे पहले और बहुतसे ५० वर्षसे पहले मर जाते है । गिने-चुने ही ६०, ७० वर्षके देखनेमे आते है, ८०, ९० वर्षके तो कहा ढूँढ़े भी नहीं मिलते । यदि औसत लगाकर देखा जाय तो भारत-वासियोकी आयु २०, २५ वर्षसे अधिक न होगी । इसका कुछ न कुछ कारण अवश्य है । बिना कारणके कोई कार्य नहीं होता; परन्तु दैव इसका कारण नहीं है । दैव या भाग्य संसारमें कोई वस्तु नहीं है । मनुष्य नियमानुसार पैदा होता है और नियमानुसार ही मरता है । नित्य यद्यपि देखनेमे आता है कि जीवनमे बहुतसी ऐसी घटनाये होती है जिनको लोग दैवी घटनाये कहा करते है, परन्तु यदि उन पर दीर्घ-दृष्टि डाली जाय तो वे जरूर किसी न किसी नियम पर स्थिर मिलेगी । दैवकी घटना कोई नहीं होती । मनुष्य मरता है, यद्यपि इसकी बराबर कोई निश्चित बात नहीं है परन्तु मृत्युका भी कोई न कोई कारण अवश्य होता है—विना कारणके मृत्यु नहीं आती ।

यह मनुष्यका कर्तव्य है कि स्वास्थ्यसम्बन्धी नियमोको भलीभाँति जाने और रोग, शोक, अकालमृत्यु आदि दुर्घटनाओंके लिए पहलेसे तैयार

हो रहे। प्रकृतिकी आज्ञा हमें सदा माननी चाहिए। प्रकृतिकी आज्ञाकी अवज्ञा करनेसे जो हानिकारक परिणाम होता है उससे हम कदापि नहीं बच सकते--प्रकृति अवश्य दण्ड देगी। चाहे हम लाख प्रार्थना करे किंतु प्रकृतिके दरबारमे हमे कदापि क्षमा न मिलेगी। संसारमे हमारा स्वामी हमारे अपराधको यदि हम भूलसे अथवा अज्ञानतासे कर बैठते है क्षमा भी कर देता है; परंतु प्रकृति न भूलको क्षमा करती है और न अज्ञानताको। प्रकृतिने हमको बुद्धि दी है हमारा कर्तव्य है कि हम उसे काममे लायें।

प्रकृतिके नियमोको केवल जान लेनेसे ही काम नहीं चलता, हमको उनके अनुसार बर्ताव करना भी जरूरी है। सर्वशक्तिमान परमात्मा हमारी अज्ञानताके कारण अपने नियमोमे परिवर्तन नहीं करता। उसने हमको विवेकबुद्धि दी है जिससे हम उसके नियमोको समझे और उसका पालन करे, अन्यथा शोक दुःखादि परिणामोंको हमे सहन करना चाहिए।

हम प्रायः लोगोंको यह कहते सुना करते है कि "क्या कोई हमारी सहायता नहीं करेगा ?" ये निराशा और निरुत्साहके मृतक शब्द है। नहीं नहीं, त्रासजनक निकृष्टताके शब्द है; विशेषकर उस समय जब कि ये उन लोगोके मुखसे निकलते है जो किंचित् स्वार्थत्याग, संयम और मितव्ययसे बड़ी आसानीके साथ आप ही अपनी सहायता कर सकते है।

बहुतसे आदमियोको अभी यह बात सीखना है कि धर्म, ज्ञान, स्वाधीनता आदि उत्तम गुण उन्हींमेसे उत्पन्न हो सकते है। नियम कानून वगैरह उनको कोई लाभ नहीं पहुँचा सकते। उनसे वे संयमी या बुद्धिमान् नहीं बन सकते।

फिजूलखर्च लोग नियम कानून वगैरहका हास्य करते हैं और शराबी उनका अनादर करते है। दूरदर्शिता और इन्द्रियपराजयको वे निंदा और घृणाकी दृष्टिसे देखते है और अंतमे अपनी विपत्ति और दुर्दशाका दोष दूसरोंके सिर मँढ़ते है। वे वक्ता कितने उलटे मार्गपर जा रहे है जो अपने श्रोताओंको मितव्यय, संयम और आत्मगौरवका अभ्यास करानेके बदले, "क्या कोई हमारी सहायता न करेगा ?" इन्हीं शब्दोंके लिए उत्तेजित करते रहते है। इन शब्दोंसे मन गिर जाता है और आत्मीय कल्याणके प्राथमिक सूत्रसे सर्वथा अनभिज्ञता प्रगट होती है।

सहायताका भाव मनुष्यमें स्वतः विद्यमान है। वह इसी लिए पैदा किया गया है कि अपनी उन्नति और वृद्धि करे और अपने लिए मोक्षमार्ग तलाश करे। जब निर्धनसे निर्धन व्यक्ति भी इन कामोंको कर चुके है तब कोई कारण नहीं कि क्यो प्रत्येक व्यक्ति इनको न कर सके। वीरता और दृढताकी सदा जय होती है।

आजकल भारतमे भी अच्छा वेतन पानेवाले दस्तकारों और शिल्पकारोंकी संख्या बढ़ती जाती है। यदि ये लोग मितव्ययताका पालन करे तो इनकी प्रतिष्ठा, स्वाधीनता और सच्चरित्रतामे बहुत कुछ उन्नति हो सकती है और ये लोग उच्चावस्था पर पहुँच सकते है। परंतु ये लोग ऐसे अदूरदर्शी और अपव्ययी होते है कि न केवल अपनेको हानि पहुँचाते है किंतु जातिके लिए भी जिसके ये मुख्य अंग है, हानिकारक सिद्ध होते है। बढतीके समयमे तो ये लोग अपनी आमदनीको आँख मीचकर खर्च कर डालते है किंतु जब घटतीका समय आता है तो एकदम आपत्तिमे फँस जाते है। इस तरह धनका उपयोग नहीं होता किंतु दुरुपयोग होता है। यदि कभी बुढ़ापे अथवा बाल बच्चोंकी शादी वगैरहका खयाल करके ये लोग कुछ

थोड़ा बहुत जमा भी कर लेते है, तो बहुत करके देखनेमे आता है कि शादी विवाहसे पहले ही किसी न किसी व्यसनमें पड़कर सबका सब बरबाद कर देते है । मदिरापान और वेश्यासेवनकी तो मामूली आदत हो जाती है, इस कथनमे कोई अत्युक्ति नहीं है । इसकी सत्यताके लिए जरा दृष्टि पसारकर अपने पड़ोसमे देखिए कि कितना रुपया फिजूलखर्च होता है और कितना बचाया जाता है, कितना शरावकी भट्टीमें जाता है और कितना वेक वगैरहमे जमा किया जाता है ।

बढतीके दिन प्रायः बहुत ही घटतीके दिन होते है । इसमे संदेह नहीं कि बढतीके दिनोमे प्रत्येक मनुष्यका कार्यव्यवहार उत्तम रीतिसे चलता है, आमदनी भी खूब होती है । लाखो मन माल रोज आता जाता है । सैकड़ो मालगाड़ियाँ रातदिन खचाखच भरी खड़ी रहती है । जगह जगह जहाजोके बंदर कायम होते जाते है । हरएक आदमी खुशहाल और धनवान् माळूम होता है । परंतु हम नहीं खयाल करते कि इन तमाम वातोसे स्त्रीपुरुषोंमें कुछ बुद्धिकी भी वृद्धि होती है अथवा, वे स्वार्थ और विषयवासनाओंसे चित्तको हटाकर सभ्यता और शिष्टाचारकी ओर भी झुकते है । हमारी समझमे तो सिवाय इसके कि पशुवत् इन्द्रियपोषण करते रहे और किसी धार्मिक अथवा सामाजिक कार्यमे उनका समय नहीं लगता ।

यदि इस वाहरी सफलता पर ही दीर्घदृष्टिसे विचार किया जाय तो ज्ञात होगा कि जिधर देखो खर्च बढ़ते जाते है । मजूरी वढानेकी आवाज भी चारो ओरसे सुनाई पड़ती है; परंतु जितनी मजूरी बढती है, उतनी ही जल्द खर्च हो जाती है । असयमकी लत पड़ जाती है और वह दिन दिन वढती जाती है । चाहे जितनी जियादह मजूरी

बढ़ा दो, लाभ कुछ नहीं होता। यदि कोई आज एक आनेकी शराब पीता है तो कल मजदूरी बढ़ने पर वहां दो आनेकी पीवेगा। अतएव जिस देश के लोग असावधान और अदूरदर्शी है उनको किसी प्रकारकी बढ़ती लाभ नहीं पहुँचा सकती। जबतक वे मितव्ययता और दूरदर्शिताका पालन न करेंगे दरिद्रताके अंधकूपमे पड़े रहेगे।

यदि मनुष्यके जीवनका उद्देश्य केवल 'येन केन प्रकारेण' रुपया पैदा करना ही होता, तो हम अपनी ऋद्धिवृद्धि पर अवश्य मोहित होते; किंतु वास्तवमें ऐसा नहीं है। उसमें शारीरिक अंगोके अतिरिक्त प्रेम, उपकार, मित्रता आदिकी अनेक शक्तियाँ विद्यमान् है। उसके हृदय और मस्तकको वे ही स्वत्व प्राप्त है जो उसके मुख और पीठको है। उदरसे भिन्न उसमे एक आत्मा है। अतः ऋद्धिवृद्धिके साथ उसकी बुद्धि और आचरणकी उन्नति होना भी उतना ही अवश्यक है जितना कि नसो और हाड़ोकी उन्नतिका होना, अर्थात् मानसिक, शारीरिक और आत्मिक तीनों प्रकारकी उन्नति करना मनुष्यके जीवनका उद्देश है।

केवल धन ही बढतीका चिह्न नहीं है। मनुष्यके स्वभावका भी एकसा रहना जरूरी है; क्योंकि जब मनुष्य अपने खर्चको बढाता है अथवा अपनी सम्पत्तिमे सैकड़ों रुपये सालकी वृद्धि करता है, तब उसका स्वभाव नीचता और निर्बलताकी ओर अधिक झुक जाता है। जनसाधारणका यही हाल है। जबतक शारीरिक उन्नतिके साथ साथ मानसिक और आत्मिक उन्नति न हो तबतक धनवृद्धि भोगविलासकी सामग्री संचय कर देनेके सिवाय और कुछ कार्यकारी नहीं है। यदि किसी अशिक्षित पुरुषकी आमदनी दुगुनी कर दी जाय, तो इसके सिवा और कोई परिणाम न निकलेगा कि उसके भोगादिकके साधन वढ जावेंगे। इस प्रकारकी वढतीसे जिसको अर्थशास्त्रके ज्ञाता देशकी वढती कहा करते

है कुछ भी लाभ नहीं होता। जब तक सच्चरित्रताके सिद्धान्तसे अनभिज्ञता रहेगी, हमारी रायमे इस प्रकारकी वढतीसे लाभके स्थानमे उलटी हानि ही होगी। केवल विद्या और सच्चरित्रता ऐसे गुण है जो मनुष्यके जीवनको प्रतिष्ठित बनाते है और केवल इन्हीं सद्गुणोंकी वृद्धि किसी समाजकी वास्तविक उन्नति और वृद्धिका सच्चा चिह्न है।

एक बार मेंचेस्टरके लाट पादरीने अपनी वक्तृतामे दाक्षिण इंग्लैडके एक पादरी साहबके पत्रका हवाला दिया था। उन्होने लिखा था कि "मुझे इस बातकी तो बड़ी खुशी है कि खेतोमे काम करनेवालेकी मजदूरी बढ गई है; परंतु इस बातका शोक है कि मजूरीकी इस बढतीका यह परिणाम हुआ कि लोग पहलेसे अधिक शराब पीने लगे। यदि इस वढतीका यही उपयोग है तो हम इसको ईश्वरीय कृपा कदापि नहीं कह सकते।" किसी देश या समाजकी सच्ची वढती इस बातमें नहीं है कि वह धनदौलतमे बढ रहा है। यद्यपि धनदौलतकी वढती भी एक जरूरी चीज है किंतु वास्तविक बढ़ती इस बातमें है कि वह धर्म और सच्चरित्रतामे भी बढ रहा है और सुखसंतोषादिसे पूरित है।

हमारा यह तात्पर्य नहीं कि कृपणताका या कंजूसीका अभ्यास किया जाय। हम कृपणताको घृणाकी दृष्टिसे देखते है। हम केवल यही कहते है कि मनुष्यको भविष्यके लिए कुछ जमा कर लेना चाहिए। अच्छे समयमे बुरे समयके लिए कुछ बचाकर रख लेना चाहिए। इतनी पूँजी पास रखनी चाहिए कि जो बुढापेमे काम आवे, जिससे आत्मगौरव बना रहे, सुखशाति प्राप्त हो। मितव्ययताका लोभ, लालच अथवा स्वार्थसाधनसे कुछ सम्बन्ध नहीं। यह असलमें इन दुर्गुणोसे सर्वथा प्रतिकूल है। इसका यही अभिप्राय है कि स्वतंत्रताकी रक्षा हो और धनका सदुपयोग हो; न्यायपूर्वक धन उपार्जन किया जाय और किफायतसे काममे लाया जाय।

तीसरा अध्याय।

अदूरदर्शिता।
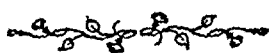
(विद्वानोंके वाक्य।)

प्रत्येक दशामें सुख उन लोगोंको प्राप्त हैं जिन्होने अपनेको वशमें कर रक्खा है।

जिन लोगोंके बालबच्चे हैं उन्होंने मानों रुपयेकी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले रक्खी है।

* * * *

यह तो कोई नहीं कह सकता कि आजकलके लोग परिश्रमी नहीं है। परिश्रमी अवश्य है और रुपया भी जी तोड़कर पैदा करते है, यहाँ तक कि रुपया पैदा करनेमे तन-बदनकी सुध भी भूल जाते है, परंतु बात यह है कि दूरदर्शी नहीं है—दूरदर्शिताका उनमे अभाव है। इसी कारण उनकी दशा शोचनीय है। आज जो कमाते है उसे आज ही खर्च कर डालते है; कलके लिए कुछ बचाकर नहीं रखते। यदि दैवसे आज नौकरी छूट जाय, तबीयत खराब हो जाय, तो बस कल सफाया है; घरमें खानेको अनाज तक न निकलेगा। यह दशा केवल मजूरों अथवा छोटे लोगोंकी ही नहीं है; बड़े बड़े लोगोंकी भी यही दशा है। सौ सौ रुपये मासिक पानेवालों तकका यह हाल है कि महीनेके पहले २० रोज तो कुशलतासे बीत जाते हैं, शेष १० दिन रो-झींककर कठिनाईसे निकल पाते है। आमदनीका कम होना दुःखका कारण नहीं है और न आमदनीका बढ़ना सुखका कारण है

चाहे जितनी आमदनी बढ़ जाय उनकी दशा एकसी रहती है। वे अपनी आदतको नहीं छोड़ते। आमदनी बढनेमे देर लगती है किंतु खर्च बढते देर नहीं लगती।

व्यापारमे सदा ही परिवर्तन हुआ करता है; किंतु अदूरदर्शी और अपव्ययी मनुष्य उससे कुछ शिक्षा ग्रहण नही करते और भविष्यके लिए कोई सामान जमा नहीं करते। अदूरदर्शिता क्या है मानों एक दुःसाध्य रोग है।

एक महाशय अपनी रिपोर्टमें एक ऐसे देशका हाल लिखते है कि यदि वहाँ दो सप्ताहके लिए भी काम बंद कर दिया जाय तो कारीगर लोग भूखो मरने लगे। यदि कभी हड़ताल डाली जाती है, तो माल असबाब बाजारमे बिकने लगता है, सहायताके लिए अपील पर अपीले होने लगती है और धनवानोंके दरवाजे खटखटाये जाते है। यह अदूरदर्शिता ही शिल्पकारोके पतनका मुख्य कारण है। इसीसे जातिकी दुर्दशा है। हमारी यह दुर्दशा हमारी ही मूर्खता और हमारे ही स्वेच्छाचारसे है। यद्यपि परमात्माने दरिद्रताको उत्पन्न किया है; किंतु यह कोई आवश्यक बात नहीं है कि निर्धन व्यक्ति बुरी दशामें रहे। दुश्चरित्रता और विशेषकर अदूरदर्शितासे विपत्ति और अभाग्यके कारण पैदा हो जाते है। निर्धनसे निर्धन मनुष्य भी यदि दूरदर्शी और सदाचारी रहे तो सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर सकता है।

इंग्लैड आदि देशोंमे शिल्पकारोकी दशा सुधारनेके लिए बहुत कुछ प्रयत्न किया गया। उन लोगो पर जो कर लगे हुए थे, वे भी तोड़ दिये गये; किंतु उनकी दशा ज्योकी त्यों रही। उन्होंने कोई किसी प्रकारकी उन्नति नहीं की। न उन्होंने सुधारके नियमोको अपने लिए

नियोजित किया और न उनका स्वयं अभ्यास किया। सुधारका मूल अभिप्राय व्यक्तिगत उन्नति है। यदि किसी समाजके उद्देश बुरे है तो समझना चाहिए कि उसका प्रत्येक सदस्य बुरा है और यदि सदस्य बुरे है तो कुल समाज बुरा है।

फ्रैंकलिन महोदयका कथन है कि " राज्यकी ओरसे हम पर जो कर लगे हुए है वे निस्संदेह कड़े हैं; परन्तु यदि केवल ये ही राजकीय कर हो तो हम बड़ी आसानीसे इनको अदा कर सकते है। हम पर तो और भी बहुतसे टैक्स लगे हुए है जो उनसे कहीं जियादह भारी हैं। हमको इतना ही टैक्स तो आलस्यसे, इससे दुगुना घमंडसे और चौगुना मूर्खतासे देना पड़ता है। अर्थात् इन दुर्गुणोके कारण हमारा कितना ही रुपया और कितना ही समय नष्ट हो जाता है। यदि इस समयका सदुपयोग किया जाय तो टैक्ससे दुगुना तिगुना रुपया जमा हो जाय। " ऐसी दशामें पाठक स्वयं विचार सकते हैं कि हमारा सरकारी टैक्सोंकी शिकायत करना कहाँतक ठीक है। क्या कोई राजा हमको इनसे मुक्त कर सकता है? कदापि नहीं।

एक बार बहुतसे आदमी जमा होकर लार्ड जान रसलके पास गये और उनसे प्रार्थना करने लगे कि " हमारे टैक्स माफ कर दिये जायँ। " लार्ड महोदयने उत्तर दिया कि " तुम लोग सरकारी टैक्सकी शिकायत करते हो, जरा सोचो तो कि तुमने स्वयं अपने ऊपर कितने टैक्स लगा रक्खे है। तुम लाखो रुपया प्रतिवर्ष केवल शराबमें खर्च कर देते हो। क्या कोई सरकार इतना कर तुम पर लगा सकती है? यह सर्वथा तुम्हारे अधिकारमें है कि विना किसी अपील या कमीशनके इन टैक्सोंको कम कर दो। "

सिर्फ इस बातकी हाय हाय करनेसे कि कर भारी है, कानून खराब है, कोई काम नहीं चल सकता। किसी राज्यके अन्यायसे इतनी हानि नहीं पहुँच सकती जितनी हमारी बुरी इच्छाओसे पहुँचती है। लोग प्रायः आलस्य, अपव्यय, असंयम और कुचरित्र आदि बुरी वासनाओसे ही अपने लिए हानिकारक हो जाते है। यह बात प्रत्यक्ष है कि जो लोग बिना उद्देश या नियमके जीवन व्यतीत करते है और अपनी कुल आमदनी बिना किसी बचतके खर्च कर डालते है, वे मानों पहलेसे ही किसी आपत्तिमे फॅसनेकी तैयारी कर रहे है। केवल वर्तमानकी चिंता करना क्या है मानो भविष्यमे भूखो मरना है। उन बेचारोसे क्या आशा की जा सकती है जिनके जीवनका यही उद्देश है कि आज तो खा-पी लेवे, कौन जाने कल जिये या मरे; या जो कहते है कि आज तो चैनसे गुजरती है कलकी परमात्मा जाने।

यद्यपि प्रत्यक्षमे इन बातोसे निराशा प्रतीत होती है तथापि बिल्कुल निराश न होना चाहिए। जितनी शिक्षाकी उन्नति होती जायगी उतनी ही हमारी आर्थिक दशा सुधरती जायगी। हम अपने धनका सदुपयोग करने लगेंगे और नेकी और ईमानदारीसे जीवन व्यतीत करने लगेंगे। इसमें संदेह नहीं कि इस कार्यमें बहुत समय लगेगा, अच्छे कामोमें समय लगा ही करता है; परंतु हमको साहस और धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए।

चौथा अध्याय ।

बचतके उपाय ।

(विद्वानोंके वाक्य ।)

आत्मनिर्भरता और स्वार्थत्यागसे यह शिक्षा मिलती है कि मनुष्यको उचित है कि आजीविकाके अर्थ शक्तिभर परिश्रम करे, सावधानीसे व्यय करे और भविष्यके लिए क्रमक्रमसे बचाकर जमा करे ।

श्रमसे प्रेम करो । यदि पेटके लिए इसकी जरूरत नहीं है तो न सही, सम्भव है कि कभी वैद्योपचार अथवा औषधोपचारके लिए इसकी जरूरत पड़ जाय । यह शरीर तथा मन दोनोंको लाभदायक है । इससे आलस्य दूरसे ही भाग जाता है ।

जो माता पिता अपने बालकोंको कार्यव्यवहार नही सिखलाते वे उनको चोर और डाकू बनना सिखलाते है ।

*　　*　　*　　*

आजकल देखनेमें आता है कि बहुतसे कारीगर दूकानदारो और नौकरी पेशावाले बाबू लोगोसे कहीं जियादह कमाते है । मैट्रिक-पास बाबुओंको २०) रु० की क्लर्की मुश्किलसे मिल पाती है, बी० ए० पास ५०) रु० की जगह पर रख लीजिए; पर अनपढ़ मिस्त्री, दर्जी वगैरह शिल्पकार दो दो रुपये रोंज तक कमा लेते है । परंतु इतने पर भी ये लोग सदा बुरे हाल रहते है। बनियेके ऋणसे इनका पीछा नहीं छूटता । भारतकी ब्राह्मण, वैश्य आदि उच्च जातियोका भी यही हाल है। आमदनी इनकी कम नहीं, खाने पीने वगैरहके दैनिक खर्च भी अधिक नहीं; पर बात यह है कि ५, ७ वर्ष भूखों रह कर तन-मन

मसोस कर जो कुछ पैदा करते हैं वह, तथा और कर्ज लेकर, लड़के लड़कियोंके विवाह-शादियोंमें खर्च कर डालते है और जातिके भाइयोंको दावतें देकर क्षणमात्रके लिए नाम पैदा कर लेते है। बहुतसे महात्मा ऐसे भी है कि किसके शादी विवाह, जो कुछ बाप दादा छोड़ गये है उसे, जो स्वयं कमाते है उसे, तथा और भी कर्ज लेकर, खर्च करते जाते है—गाँठमे फूटी कौड़ी भी नहीं रखते। उनका रुपया शराबकी भट्टी, हलवाईकी दूकान और वेश्याके सत्कार-पुरस्कारके लिए नियुक्त है।

हम लोगोका यह स्वार्थ और अपव्यय किसी प्रकार प्रशंसनीय नहीं। जबतक हम इस स्वार्थ और अदूरदर्शिताका त्याग न करेगे, नीच अवस्थामें ही पड़े रहेगे। अदूरदर्शिता निरा पाप ही नहीं है, किंतु अत्यंत क्रूरता भी है। यह बात कितनी स्वार्थयुक्त है कि किसी कुटुम्बका नेता अपनी सारी आमदनी अपने लिए ही भोगविलासमें व्यय कर दे। उस पर बहुत से भार है। उसका कर्तव्य है कि अपने बच्चोंका पालन पोषण करे, उनकी शिक्षाका यथोचित प्रबंध करे और अपने तथा अपने कुटुम्बके लिए सामग्री संचय करे। क्या आश्चर्य है कि वह कल बीमार हो जाय अथवा मर जाय! यदि उसके पास पूँजी नहीं है तो कल ही उसके बालबच्चे भूखों मरने लगेंगे।

उन लोगोको शिक्षा देना व्यर्थ जान पड़ता है जिन्हें अपने हानिलाभकी चिन्ता नहीं और अपनी उन्नति अवनतिकी परवा नहीं। उनके मित्रोंका कर्तव्य है कि उन्हे अच्छी तरह समझा दे कि यदि तुम गौरव और प्रतिष्ठा प्राप्त करना और स्वार्थके अधकूपसे निकलना चाहते हो, तो तुमको दूरदर्शिता, मितव्ययता और संयमका अभ्यास करना योग्य है और आत्मनिर्भरताका आश्रय लेना अवश्य है।

आक्सफोर्डके एक जूता बनानेवालेका कथन है कि जगतमें शिल्पकार सबसे जियादह स्वतंत्र है। वह किसीके अधीन नहीं होता। वह जहाँ बैठ जाता है वहीं अपनी रोजी कमा लेता है। उसको किसीके सहारेकी जरूरत नहीं। यदि वह साधारण परिश्रमी और संयमी है तो भी सदा हृष्टपुष्ट और प्रसन्नचित्त रहेगा। उसके खानपान रहन-सहनमे कोई कमी न आयगी। वह सदा अपनी गृहस्थीको उत्तम रीतीसे चला सकेगा, अपने बालकोंको शिक्षा दे सकेगा और समय समय पर दूसरोंकी भी सहायता कर सकेगा।

कितने शोकको बात है कि लोग अच्छी आमदनी होते हुए भी अपना कुल रुपया बुरी वासनाओंकी तृप्तिके लिए व्यय कर दे। कोई कोई तो आमदनीका आधा भाग केवल मदिरापानमें ही उड़ा देते है और दूसरे व्यसनोंका तो पूछना ही क्या है।

इंग्लैडके एक शिल्पकार मिष्टर रोबेकने एक आमसभामे अपने व्याख्यानमे कहा था कि "जिस शिल्पकार अथवा दूकानदारकी आमदनी अच्छी खासी है क्या कारण है कि वह पशुवत् असभ्यतासे रहता है? क्यो वह ऐसी दशामें रहता है इसका कोई कारण नहीं मालूम होता। उसको एक सभ्य शिक्षित पुरुषकी तरह रहना चाहिए। उसका घर मेरे घरके समान होना चाहिए। जब मै दिनभर श्रम करके शामको घर जाता हूँ तो अपनी प्यारी प्रफुल्लचित्ता विदुषी स्त्रीको देखकर सारा श्रम भूल जाता हूँ। मेरे एक पुत्री है। वह भी अपनी माताके अनुरूप है। मै यह भी पूछना चाहता हूँ कि जब कोई व्यक्ति श्रम करके घर जाता है तब उसके खानेकी मेज मेरी मेजकी तरह सजी हुई क्यो नहीं रहती? उसकी स्त्री और बालबच्चे साफ सुथरे क्यो नहीं रहते? हम

सब जानते हैं कि ये लोग इतनी आमदनी रखते हुए भी अपनी स्त्री और संतानको अच्छा कपड़ा नहीं पहना सकते और अच्छा खाना नहीं खिला सकते। इनका सारा रुपया शराबकी दूकान पर चला जाता है। इन लोगोको अपनी कमाई उसी तरह अपनी बुद्धिके बढाने और मस्तिष्क-शक्तिकी उन्नतिमे व्यय करनी चाहिए जिस तरह मै अपनी कमाईको व्यय करता हूँ। इन लोगोको यह बात अच्छी तरह समझा देनी चाहिए। जो इन बातोको न बतलाकर उनकी झूठी प्रशसा करता है, वह उनका मित्र नहीं, शत्रु है।"

पूर्वकालमें दासत्वका सर्वत्र प्रचार था। शिल्पकारी तथा मजदूरीका काम दासोसे ही लिया जाता था; परंतु उन्हे कोई वेतन या मजूरी नहीं दी जाती थी। मालिक अपनी इच्छानुसार उन्हे खाना कपड़ा दे दिया करता था। गाय, बैल भैसोकी तरह मालिकका उन पर अधिकार था। मालिक जिसे चाहे जिस दाममे बेच देता था। इस कारण उन बेचारोको कभी जोड़ने या रखनेका अभ्यास नहीं हुआ। बचानेसे क्या लाभ है, इसकी आवश्यकताको उन्होने कभी नहीं समझा। इसी तरह उन्हे अदूरदर्शिताका अभ्यास हो गया। यह अवगुण उनमें पूर्वसंस्कारवश अबतक विद्यमान है। परंतु अब वह समय नहीं रहा। अब दासत्वका मुँह काला हो गया है। सब स्वतंत्र और स्वाधीन है। इस अवस्थामे हमे अपने अवगुणको दूर कर देना उचित है। आत्मगौरव और संयमका पालन करना हमारा मुख्य धर्म है। भावी सुखके लिए वर्तमान सुखको कुछ विचारपूर्वक भोगना योग्य है। यही बाते है जिनसे हमारी दशा सुधर सकती है और हम अपनेको उन्नत अवस्था पर पहुँचा सकते है।

कुछ काल पहले शिल्पकारोंकी भले ही छोटे दर्जेके मनुष्योंमे गणना होती हो, परंतु अब वह बात नहीं है। अब उनका यथेष्ट आदर है। कलाकौशल्यका चारो ओर आन्दोलन हो रहा है; नित्य नवीन नवीन आविष्कार हुआ करते है, तरह तरहके कल कारखाने खुलते जाते है, प्रत्येक जाति और समाजमे विद्याका प्रचार बढता जाता है। भारतमे जितनी जातीय सभाये होती है, उन सबमें शिल्पविद्याके लिए जोर दिया जाता है, छात्रवृत्तियाँ देकर विद्यार्थी जापान, अमेरिकादि देशोंमें शिल्पविद्याओंके सीखनेके लिए भेजे जाते है। शिल्पकारोंकी आमदनी भी नित्य बढ़ती जाती है, परन्तु शोक है कि भारतीय शिल्पकारोका धन बुरी तरह खर्च होता है। यही कारण है कि वे नीच अवस्थामे पड़े हुए है। उन्होने स्वयं अपनेको ऐसा बना रक्खा है। आत्मगौरव क्या वस्तु है इसका उन्हें दिग्दर्शन भी नहीं हुआ है। वे काम अवश्य करते है, पर मनमे संकोच करते है। उनका विचार है कि यह काम जो हम कर रहे है बुरा है; परन्तु यह उनकी भूल है। कोई काम बुरा नहीं। सर्व प्रकारका परिश्रम प्रशंसनीय है। यह केवल आलस है जिसकी कृपासे मनुष्य नीच और घृणित बना रहता है। भारतके नवयुवकोको इस पर विशेप लक्ष्य देना चाहिए। यदि ब्राह्मण कपड़ा बुननेका काम करे, वैश्य दर्जी अथवा बढ़ई लुहारका काम करे तो इसमे कोई लज्जाकी बात नहीं है। काम करनेमे लज्जा नहीं, लज्जा खाली बैठनेमें है। इस बातमें हमे जापान, अमेरिका आदि देशोंसे शिक्षा लेनी चाहिए। वहाँ प्रथम तो भारतके समान जातिपाँतिकी प्रथा नहीं है, दूसरे एक जाति या समूहका कोई एक नियत कार्य नहीं है। जिस तरह भारतमें बढ़ईका बाप भी बढ़ईका काम करता है; वह स्वयं बढ़ईका काम करता है और उसके बेटे पोते भी बढ़ईका काम करेंगे। इस

तरह उन देशोमे प्रथा नहीं है। वहाँ जिस मनुष्यमे जैसी बुद्धि और योग्यता होती है वैसा ही काम वह करता है। वहाँ सम्भव है कि बाप जूते गाँठनेका काम करता हो और बेटा कालेजमें प्रोफेसर हो। इससे बुद्धिमानोको उन्नति करनेका मौका मिलता है और मूर्ख उन्नतिमें बाधक नहीं होते।

मिस्टर स्टरलिंगका कथन है कि "यदि कोई शिल्पकार अपने नित्यके कार्यको चाहे वह कितना ही नीचे दर्जेका क्यों न हो, उच्च विचारोंसे करता है, तो समझना चाहिए कि वह सच्चे दिलसे अपने कर्तव्यका पालन कर रहा है और अपने जीवनको लाभ और भलाईके लिए उन्नत कर रहा है।" परन्तु शिल्पकारोंने ऐसा नहीं किया और न दूसरोंने उनकी यथेष्ट सहायता की। इसी कारण श्रम नीच और घृणित समझा जाता है।

आमदनीके खयालसे जैसा हम पूर्वमें कह आये है शिल्पकार औरोसे कदापि गिरे हुए नहीं है। इंजीनियर फौजी अफसरोसे जियादह कमाता है। अच्छे कारखानेका मिस्त्री मैट्रिकपास क्लर्कोंसे जियादह पैदा करता है। मास्टर टेलर, स्कूलके मास्टरोसे अच्छा रहता है।

चतुर शिल्पकार यदि चाहे तो सभ्य शिक्षित पुरुषोंके समान गौरव और प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकते है; किंतु कई कारण उनकी उन्नतिमे बाधक होते है। वे अवकाश मिलने पर अपनी उन्नति नहीं करते। यद्यपि उनके पास धन काफी होता है, किंतु वे शिक्षित नहीं होते। उनको अच्छी तरह यह बात समझ लेनी चाहिए कि समाजमें मनुष्यकी प्रतिष्ठा उसकी आमदनीसे नहीं, किंतु बहुधा उसकी बुद्धिमानी और सच्चरित्रतासे की जाती है। चूँकि वे लोग इन बातोंको भूले हुए है,

अपव्ययी है, अपनी सारी आमदनीको विषयवासनाओंकी पूर्तिमे ही व्यय कर देते है और आत्मोन्नतिकी स्वप्नमें भी रंच मात्र परवा नहीं करते है। इसी कारण वे समस्त सामाजिक सुखोसे वंचित कर दिये गये है, बल्कि यह कहना चाहिए कि उन्होने स्वयं अपनेको उन जातीय अधिकारोसे वंचित कर लिया है जिनसे लाभ उठानेका स्वत्व उन्हें प्रकृतिके नियमानुसार प्राप्त है।

यद्यपि उनकी आमदनी जियादह है, किंतु वे लोग प्रायः रहन-सहन और आचरणमे गिरे ही रहते है। चाहे कोई शिल्पकार कितना ही चतुर क्यो न हो, परन्तु वह अपना हाल वैसा ही बुरा बनाये रखता है जैसा कि उसके दूसरे साथी रखते है। जब देखो उसके बदन पर मैले कुचैले कपड़े ही दिखाई देते है। नहाने धोने, बाल बनवाने, कंघा करनेका तो वह नाम भी नहीं जानता। हाथ पैर मैलसे काले और बाल धूलसे सफेद हुए रहते है। बुद्धिमानीके कारण वह जो जियादह रुपया कमाता है, वह भी उसके लिए हानिकर हो जाता है। वह चाहे तो बड़े आरामसे रह सकता है, अच्छे कपड़े पहिन सकता है, जरूरी चीजें खरीद सकता है, परंतु वह ऐसा नहीं करता। हर हफ्तेमें उसकी सारी आमदनी नष्ट हो जाती है। वह एक कौड़ी भी जमा नहीं करता। जब कभी काममें कमी हो जाती है अथवा उसको कोई रोग हो जाता है तो सब सफाया हो जाता है।

अब प्रश्न यह है कि इन बुराईयोंके दूर करनेका क्या उपाय है? कुछ लोग कहते है कि उत्तम शिक्षा होना चाहिए, कुछ कहते है कि वह शिक्षा दी जाय जिसमें धर्म और सच्चरित्रताके सिद्धांत उनके हृदयमें अंकित हो जावें, कुछ कहते है कि नहीं, जब तक

घर, अच्छी स्त्रियाँ और अच्छी मातायें न होंगी तब तक उन्नति न होगी। निस्सन्देह ये सब उन्नति और सुधारके कारण है। यह एक प्रत्यक्ष बात है कि आजकाल चारो ओर अज्ञानता फैली हुई है। जब तक यह अज्ञानता दूर न की जायगी, छोटे दर्जेके मनुष्योंकी उन्नति कदापि नहीं हो सकती। उनकी दशामे एकदम परिवर्तन करदेना चाहिए और उनको प्रारम्भसे ही दूरदर्शिता और इन्द्रियदमनका अभ्यास कराना चाहिए।

हम प्रायः सुना करते है कि ज्ञान बल है; परन्तु यह कभी नहीं सुना कि अज्ञानतामे भी बल है। तथापि जगतमें अज्ञानताका साम्राज्य है। जिधर देखो उधर अज्ञानता ही फैली हुई है। अज्ञानताके कारण ही जेल और पुलिसके दर्शन होते है। अतएव हमें इसके कहनेमे तनिक भी संकोच नहीं होता कि आजकल अज्ञानतामें भी बल है। इसका मुख्य कारण यह है कि अभी तक भारतवर्षमे विद्याका प्रकाश बहुत कम लोगो तक पहुँचा है। जब इसका सर्वत्र प्रकाश हो जायगा, सब कोई पढ़-लिखकर दूरदर्शी और विचारशील हो जावेगे, तव विद्याका मूर्खता पर अधिकार हो जायगा। किंतु अभी वह समय दूर है।

जेलखानोंके रजिस्टरोंको देखिए १०० कैदियोंमेसे ९९ मूर्ख और अज्ञानी निकलेंगे। शराबकी भट्टी पर जाकर देखिए वहाँ भी ९९ अशिक्षित ही मिलेगे। हमारे पतनका मूल कारण हमारी सामाजिक त्रुटियॉ है जो अज्ञानताके कारण पाई जाती है। इन त्रुटियोके दूर करनेके लिए हम शक्तिभर उद्योग करते है, सभायें स्थापित करते है, धन और श्रम भी व्यय करते है किंतु अज्ञानता इस हद्द तक बढ़ी हुई है कि कभी कभी हमे निराशा हो जाती है, हमारा उद्योग निष्फल जाता है।

इस अज्ञानताका ही प्रताप है जो हजारों आदमी स्वास्थ्यसंबंधी नियमोंका पालन नहीं करते और अपनी असावधानीसे अकालमृत्युके ग्रास हो जाते है। यद्यपि स्वास्थ्यसम्बन्धी अनेक ट्रेक्ट लिखे जाते है और सर्वसाधारणमे वितरण भी किये जाते है, पर जिनके लिए ये लिखे जाते है वे पढ़ भी नहीं सकते। उनको पढ़कर उन पर विचार करना और उनके अनुकूल चलना तो कहाँ? यह सब अज्ञानताका परिणाम है। अज्ञानताकी इस वलिष्ठ शक्तिको मंद करनेके लिए ज्ञानकी आवश्यकता है। जैसे सूर्योदयसे अंधकार नाश हो जाता है, उल्लू चमगीदड़ वगैरह अनेक दुष्ट जीव अदृश्य हो जाते है, उसी तरह ज्ञानका प्रकाश होते ही अज्ञानरूपी अंधकार नष्ट हो जायगा। जनसाधारणमें शिक्षाका प्रचार करो, विद्याका प्रकाश करो, दूषण स्वतः दूर हो जावेंगे। शरावकी भट्टियाँ और जेलखाने कहीं ढूँढे भी न मिलेगे।

यह वात भी स्मरण रखना चाहिए कि केवल शिक्षा ही काफी नहीं है। चतुर मनुष्य दुराचारी भी हो सकता है। जितना चतुर होगा उतना ही दुराचारी भी होगा। अतएव शिक्षाकी नीव धर्म और सच्चरित्रता पर स्थित होनी चाहिए, कोरी शिक्षा किसी भी कामकी नहीं, उससे बुरी वासनाये दूर नहीं हो सकतीं। बुद्धिकी वृद्धिका सच्चरित्रता पर वहुत कम प्रभाव पड़ता है। वहुतेरे पढे लिखे मनुष्य अदूरदर्शी, अपव्ययी और व्यभिचारी देखनेमे आते हैं। अतएव यह अत्यंत आवश्यक है कि शिक्षा धार्मिक और नैतिक सिद्धांतों पर स्थिर हो।

वहुतसे आदमी कहा करते हैं कि मजूर लोग निर्धन होते हैं, इसी कारण समाजमें उनकी कोई कदर नहीं होती। परंतु यह सत्य नहीं है। आप उनकी आमदनी दूनी कर दीजिए पर उनकी दशा ज्योंकी त्यों

रहेगी। उनके सुखमें कुछ भी बढ़ती न होगी। कारण कि सुख रुपयेसे नहीं है। रुपया बढ़नेसे उलटी उनकी बुरी आदते बढ़ जायँगी।

सच्चा सुख ज्ञानसे ही प्राप्त हो सकता है। अतएव जिस तरह हो ज्ञानप्राप्तिके लिए उद्योग करना चाहिए। उच्चजातिके पुरुषोंका कर्तव्य है कि वे नीच जातियोको शिक्षा और उपदेशसे ऊपर उठावे। ये जातियाँ स्वयं अपनेको उठानेमे असमर्थ है, पहले आप उन्हे सहायता दे, फिर वे स्वतः अपनेको संभाल लेगीं।

जीवनमें विचारनेकी दो बाते है—रुपया पैदा करना और उसको व्यय करना। इसके लिए विचार और दूरदर्शिताकी आवश्यकता है। और ये गुण उत्तम शिक्षाके द्वारा ही प्राप्त हो सकते है। एक विद्वानका कथन है कि सुशिक्षाका मूल्य धनसे अधिक है। सुशिक्षासे मानसिक शारीरिक और सर्व प्रकारकी उन्नति हो सकती है। परतु स्मरण रहे शिक्षाका सदुपयोग करना चाहिए। जब शिक्षाका प्रचार हो जायगा, तब सब समझ जायँगे कि ईमानदारीसे शक्तिभर परिश्रम करके कमाना चाहिए और सदा आमदसे कम खर्च करके कुछ न कुछ भविष्यके लिए बचाकर रखना चाहिए।

पाँचवाँ अध्याय।
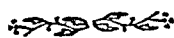
उदाहरण।

(विद्वानोंके वाक्य।)

उदाहरणों द्वारा ही सफलताकी सम्भावना की जाती है।

स्वावलम्बनसे ही मार्ग प्रकट होता है।

जिस प्रकार किसी राज्यके धनधान्यकी वृद्धिके लिए उत्तम प्रबधकी आवश्यकता है उसी प्रकार एक कुटुबकी बढ़तीके लिए भी समीचीन प्रबंधकी आवश्यकता है।

सम्यक् आचरण सम्यक् श्रद्धानपूर्वक होता है, किंतु सम्यक् आचरणके विना सम्यक् श्रद्धान कदापि श्रीवृद्धिको प्राप्त नही कर सकता।

*　　　*　　　*

मितव्ययताका वास्तविक अर्थ गृहप्रबन्ध है। इसका यह अभिप्राय है कि हम अपनी आमदनीका ठीक ठीक हिसाब रक्खें, उसको उचित रीतिसे खर्च करे, फिजूलखर्चीको दूर करे, विवेक और दूरदर्शितासे काम ले, किसी भी चीजको फिजूल न समझे, हर एक चीजसे जहाँ तक हो सके लाभ उठावे और रुपयेको केवल बचानेके अभिप्रायसे ही न बचावे, किंतु इस लिए बचावे कि वह जरूरतके वक्त अपने और दूसरोके काम आजाय।

जिन लोगोने इस उद्देश्यसे थोड़ा थोड़ा भी बचानेका अभ्यास किया है उन्होने थोड़े ही दिनोंमे बहुत कुछ जमा कर लिया है और उस रुपयेसे अपने कुटुम्बियो, सम्बन्धियो तथा देशवासियोका बहुत कुछ उपकार किया है और आपत्तिमे उनको सहारा दिया है। दूसरो पर दया करनेसे, उनको आर्थिक सहायता पहुँचानेसे, दान करनेसे आजतक कोई निर्धन नहीं हुआ और न किसीका नाश हुआ, हाँ स्वार्थ और विषयवासनाओमे फँसकर सैकड़ों नष्ट हो गये है।

जरूरत इस बातकी है कि हम हरएक कामको नियमानुसार करें। चाहे कोई काम हो, घरका हो या बाहरका, राज्यका हो या व्यापारका, नियमानुसार हो। हरएक चीजके लिए नियत स्थान हो और अपने अपने स्थान पर हरएक चीज हो।

नियम और प्रबन्धको ही दौलत कहना चाहिए। क्योंकि जो कोई अपनी आमदनीको उत्तम रीतिसे खर्च करता है उसकी आमदनी दूनी हो जाती है। जो पुरुष नियमोंका उल्लंघन करते है और अपने घरका ठीक ठीक प्रबन्ध नहीं करते, वे कदापि धनवान् नहीं हो सकते। इसके विपरीत जो नियमानुसार चलते है, वे कदापि निर्धन नहीं हो सकते। किसी चीजको भी व्यर्थ व्यय मत करो। छोटीसे छोटी चीजको भी सावधानीसे रक्खो। सर वाल्टर स्काटके रसोई घरमें मोटे मोटे अक्षरोंमे पत्थर पर खुदा हुआ था कि 'किसी चीजको नष्ट न करो और न किसी चीजकी जरूरत रक्खो।'

अनियमित काम करनेसे व्यर्थमें समय नष्ट होता है और जो समय एक बार नष्ट हो जाता है वह कभी लौट नहीं सकता। कहावत भी है कि गया हुआ समय फिर वापिस नहीं आता। अतएव नियमोंका पालन करना सदैव आवश्यक है। यदि विचारपूर्वक देखा जाय तो संसार नियमो पर ही स्थिर है। यदि नियम न होते तो उचित अनुचित, न्याय अन्याय, धर्म अधर्मका कोई विचार न होता; जो जिसके मनमे आता वही करता।

हमारे जीवनमे गृहप्रबन्धके लिए नियमोकी बड़ी जरूरत है। इनका पालन करनेसे ही हमारा घर शोभाको पाता है और हमको सच्चा सुख प्राप्त हो सकता है। चूँकि घरका प्रवन्ध गृहिणीके हाथमे होता है, इस कारण समाजकी उन्नति एकप्रकारसे गृहिणी पर ही निर्भर है

और इस दशामे उसके लिए यह बहुत जरूरी है कि उसको गृहप्रबंध और नियमानुसार प्रवर्तनेकी शिक्षा प्रारम्भसे ही दी जाय और उसके हृदयमे इसकी जरूरतको कूट कूट कर भर दिया जाय। आजकल जिन कन्याओका विवाह किया जाता है, अर्थात् जिन कन्याओंको दूसरे घरोमें जाकर गृहप्रबन्धकी जिम्मेवारी अपने ऊपर लेनी होती है वे गृहप्रबंधके नियमोसे प्रायः सर्वथा अनभिज्ञ होती है। उन्हें मातापिता द्वारा कोई शिक्षा इस प्रकारकी नहीं मिलती। यही कारण है कि वे दूसरे घरोमें जाकर सुखके स्थानमे दुःखका कारण होती है। उनके जितने काम होते है सब अनियमपूर्वक होते है।

हमारे लिए प्रश्न यह नहीं है कि हम धनवान् हो या निर्धन, जरूरत यह है कि हम अपनी आमदनीको चाहे वह कितनी ही थोड़ी क्यों न हो इस रीतिसे खर्च करे कि हम संसारमें दिन दिन उन्नति करते जावें और हमारी स्थिति और हमारी सम्पत्ति नित्यशः बढती जाय। हमको उन पुरुषोका अनुकरण करना चाहिए जिन्होने थोड़ी आमदनी होते हुए भी उत्तम प्रबंधसे अपनेको तथा अपनी सतानको संसारमें यशस्वी और भाग्यशाली बनाया है।

भारतवर्ष तथा अन्य देशोंमे ऐसे सैकड़ों उदाहरण मोजूद है। आज जितने बड़े बड़े पुरुषरत्न देखनेमे आते है वे प्रायः उन्हींकी संतान हैं जिन्होंने परिमित आमदनी होते हुए भी अपने बाहुबलसे अपनी संतानको शिक्षा दिलाकर इस योग्य बनाया। ईश्वरचन्द्र विद्यासागरका नाम कौन नहीं जानता। उनके पिता कितने निर्धन थे, तिस पर भी उन्होंने अपने पुत्रको अपनी छोटी सी आमदनीसे पढ़ाकर विद्यासागर बनाया। विद्यासागरने स्वयं ५०) रु० की नौकरीमे अपने भारी कुटुम्बका अच्छी

तरह पालन किया तथा अनेक निर्धन असहाय विद्यार्थियोंको छात्रवृत्तियाँ देकर पढ़ाया।

जेम्स गारफील्डने लुहार और बढ़ईके यहाँ मजूरी कर करके अपने कुटुम्बका ही पालन नहीं किया, किंतु स्वयं धीरे धीरे पढ़कर एक दिन अमेरिकाके सर्वोच्च पद अर्थात् प्रेसीडेंटके पदको भी प्राप्त कर लिया।

इसी तरह अब्राहम लिंकनने एक दरिद्रसे दरिद्र घरमे जन्म लेकर लकड़ियाँ चीरके तथा दूकानो, कारखानो और जहाजो पर काम करके, स्वयमेव स्वाध्याय द्वारा अपने ज्ञानको बढ़ाया, और अपने बाहुबलसे उन्नति करते करते अमेरिकाके प्रेसीडेंट पदको प्राप्त किया।

जिन लिप्टन साहबकी चाय संसारमें सर्वत्र व्याप्त हो रही है, जिन्होने अनेकानेक कल कारखाने स्थापित किये है, और जिन्होंने लोगोके उपकारार्थ न जाने कितने काम किये है, वे एक दरिद्रकी संतान थे, वे शुरूमे एक दूकानदारके यहाँ काम करके अपने मातापिताका भरण-पोषण करते थे। १५ वर्षकी उमरमे ये एक कारखानेमें काम करने लगे। काम करते करते ये व्यवसायकी सभी बातोंमे निपुण हो गये।

इँग्लिस्तानके डाक्टर एटनने केवल १००) रु० मासिककी आयसे १२ बच्चोंका पालन पोषण किया और उनमेसे ४ को उच्च शिक्षा दिलाकर अच्छे अच्छे कामोमें लगाया।

हम जिन ग्रंथकर्ता महाशयके ग्रन्थके आधार पर यह पुस्तक लिख रहे है स्वयं उन्हींका हाल सुनिए। उनके ११ भाई थे। सबसे छोटा भाई केवल तीन सप्ताहका था जब उनके पिताका देहात हो गया। उनकी माताने बहुत थोड़ी आमदनी होते हुए भी बहुतसा कर्ज चुकाया और अपने बच्चोंको धार्मिक तथा लौकिक शिक्षा दिलाई।

इतिहासकार ह्यूमकी भी यही दशा थी। पादरी राबर्ट वाकर साहबकी आमदनी सिर्फ ५ पौंड अर्थात् (७५) रु० सालाना थी। ४० पौंड उनकी पत्नी लाई थी। इतनी जरा सी आमदनी पर भी उन्होंने आनंदपूर्वक जीवन व्यतीत किया और अपने कुटुम्बके लिए भी कुछ रुपया जमा किया। यह सब उन्होने श्रम, मितव्यय और संयमसे ही कर पाया। धार्मिक कर्तव्योका पालन करके, लड़कोको पढ़ा करके, ऊन बुन करके, जानवरोको चरा करके, हल जोत करके, इत्यादि अनेक काम करके उन्होने ईमानदारीसे रुपया पैदा किया और उससे अपना तथा अपने ८ बच्चोका पालन किया। एकको कालेजमे पढ़ाया। पादरी साहब बड़े मितव्ययी थे, किंतु उनके किसी भी कामसे लालच या कमीनापन प्रकट न होता था। वे व्यर्थकी नुमायशी चीजोसे घृणा करते थे, किंतु जरूरी चीजोके लिए कभी कृपणता न करते थे। वे सदा दयालु और उदारचित रहते थे। चाय, दूध और शुद्ध जल पर ही उनको संतोष था। उनकी सारी जरूरते उनके घरसे ही पूरी हो जाती थीं। उनको भेड़ बकरियोसे ऊन, दूध और खेतोसे अनाज मिल जाता था।

इसी प्रकार अनेक पुरुषोंने अपने साहस और बलसे रुपयेका सदुपयोग करके अपनेको बढ़ाया और क्रमशः अपने देश और समाजको उन्नतिके शिखर पर चढ़ाया। वास्तवमें व्यक्तिगत उन्नतिसे ही समाजकी उन्नति है। समाज बहुतसे व्यक्तियोका समूह है। यदि प्रत्येक व्यक्ति उन्नति कर ले तो कुल समाज उन्नति कर लेगा। किन्तु व्यक्तिगत उन्नतिके लिए दृढ़संकल्प और स्थिर विचारोकी जरूरत है।

उदाहरणोसे ही छोटेसे छोटा आदमी बड़ेसे बड़े दर्जे पर पहुँच सकता है, ज्ञान विज्ञानकी वृद्धि होती है, सभ्यता और शिष्टाचारका

प्रचार होता है और दूसरे लोगोंको अनुकरण करनेका साहस होता है। इनके जीवनसे अनेकोंके जीवन सुधरते है। इनका हाल सुनकर मुरदेसे मुरदेके दिलमे भी जोश पैदा हो जाता है, निराशाका और आलसका मुँह काला हो जाता है और 'हमसे यह न हो सकेगा,' 'यह हमारी शक्तिसे बाहर है' ऐसे वाक्योंका मानों देशनिकाला हो जाता है। इनके जीवनचरित प्रत्यक्ष इस बातको सिखला रहे है कि उठकर आलस्यको त्यागो, कुछ काम करो, चाहे तुम कितने ही नीचे क्यों न हो, एक दिन ऊँचेसे ऊँचे दर्जेपर पहुँच जाओगे।

एक नहीं, दो नहीं, दश नहीं, पचास नहीं, सैकड़ो उदाहरण उनके मौजूद है जो शुरूमे कारखानों या खानियोमे कुलियो और मजदूरोका काम करते थे और ऐसी अवस्थामें भी जिन्होंनें मितव्ययतासे काम करके थोड़ा थोडा बचाया, अवकाश मिलने पर पढ़ना लिखना भी जारी रक्खा और अंतमें जो बड़े बड़े दर्जों पर जा पहुँचे। कोई पादरी हुआ, कोई इंजिनियर हुआ, कोई डॉक्टर हुआ और कोई पार्लियामेंटका मेम्बर हुआ।

जार्ज स्टीफेसन—जिसने रेलगाड़ीका आविष्कार किया—शुरूमे कुलीका काम करता था। उसने श्रमसे कुछ रुपया पैदा करके पढ़ना लिखना प्रारभ किया। आगे उसकी मजूरी १२ शिलिंग सप्ताह हो गई। इंग्लैण्ड जैसे महँगे देशमे भी उसने इस थोड़ीसी मजूरीसे अपना तथा अपने मातापिताका निर्वाह किया और अपनी शिक्षाका खर्च चलाया। धीरे धीरे उसका वेतन १५) रु० सप्ताह हो गया। अब तो वह अपनेको एक धनवान् समझने लगा। वास्तवमे उसका यह खयाल ठीक भी था। जो पुरुष खर्च करके कुछ बचा सकता है उसे धनवान् ही समझना चाहिए। जार्ज बराबर उन्नति करता गया। जब उसको अपने

एंजिन वनानेके लिए रुपयेकी जरूरत हुई तव उसकी सच्चरित्रता और कार्यकुशलताके कारण एक महाशयने तत्काल ही उसकी जरूरतको पूरा कर दिया।

जेम्स वाट—जिसने स्टीम एंजिनका आविष्कार किया—शुरूमें एक साधारण पुरुप था, छोटे छोटे औजार वेचा करता था और उन्हींकी विक्रीसे अपना खर्च चलाया करता था। साथमें पढ़ता भी जाता था। कई वर्प तक लगातार उद्योग करनेपर उसने स्टीम—एंजिनमें सफलता प्राप्त कर ली।

इन वडे वड़े लोगोंको अपने हाथसे काम करते शर्म नहीं मालूम होती थी। उनका विचार था कि पेटके लिए काम करनेमें कोई मान-हानि नहीं है। वे साथमें दिमागका काम भी करते जाते थे। इसीसे उन्होंने वड़े वड़े काम किये जिनसे समस्त संसारको लाभ पहुंचा और पहुंच रहा है।

यह काम हम क्यो करें, यह हमारे लायक नहीं है, ऐसा कहना अथवा सोचना वड़ा हानिकर है। वहुतसे लोग ऐसे ही ख्यालोंके कारण अपने जीवनको नष्ट कर डालते हैं और टुकड़े तकको तरसते हैं। तीन आदमी एक लुहारकी दूकानमें काम किया करते थे। उनके दिलमें किसी तरह यह विचार उत्पन्न हो गया कि हम कोई और वढ़िया काम करें। उनमेंसे दोने कुछ रुपया जमा किया और थोड़े दिनोंमें कालेजमें पढ़ना शुरू किया। कालेजका समय पूरा होनेपर वे

वह एक इंजीनियर और बड़ी भारी कंपनीका मैनेजर हो गया। पहले दोनोंमेसे एक प्रोफेसर हुआ और दूसरा प्रसिद्ध राजमंत्री हुआ।

एक महाशय गानविद्यासे अपनी आजीविका करते हुए खगोल और ज्योतिषसम्बन्धी आविष्कार सोचा करते थे। एक दिन उनको अपने उद्योगमें सफलता हुई और वे संसार भरमे नामी हो गये।

फ्रैंकलिन अपना निर्वाह छापेका काम करके किया करता था। वह बड़ा परिश्रमी, मितव्ययी और दूरदर्शी था। समयको कभी फिजूल न खोता था। उसने अपनी ईमानदारीसे सबके दिलोमे स्थान पा लिया था। हर प्रकारसे उन्नति करना वह अपना मुख्य कर्तव्य समझता था। इसीका यह परिणाम हुआ कि वह एक बड़ा भारी वैज्ञानिक समझा जाने लगा और बड़े बड़े आदमी उसका आदर करने लगे। प्रसिद्ध ज्योतिषी फर्ग्युसन बहुत दिनोंतक तसवीरे ही बनाता रहा।

जगद्विख्यात लेखक विंक्रलमेन एक चमारका लड़का था। उसका पिता जबतक उससे हो सका उसे शिक्षा दिलाता रहा। परन्तु जब वह बीमार पड़ गया, तब स्वयं लड़केने रातको गलियोमे गा गा कर अपने रोगी बूढे बापकी सेवा की और बादमें टयूशन करके अपनी कालेजकी शिक्षा जारी रक्खी। इसके कहनेकी जरूरत नहीं कि अंतमें वह कितना बड़ा आदमी हुआ। सेमुएल रिचर्डसन—जो एक प्रसिद्ध लेखक हुए है—पुस्तके बेंचकर निर्वाह करते थे। दूकानके बाहरी हिस्सेमे वे पुस्तके वेचा करते थे और अंदरके कमरेमे पुस्तके लिखा करते थे। उन्होंने कभी किसी धनिकका आश्रय नहीं लिया।

स्वर्गीय डाक्टर ग्रेगरीने अपने एक व्याख्यानमे कहा था कि "मै ऐसे कितने ही आदमियोको जानता हूँ जो श्रम, साहस और संतोषके बल-से मजूरोंकी श्रेणीसे निकल कर बड़े बड़े विद्वानोकी गणनामें आ गये।

'एक सड़क पर मजूरी करनेवाला आदमी बड़ा लेखक हो गया। एक सिपाही स्कूलमास्टर हो गया। दूसरा तात्त्विक उपदेशक हुआ। एकने बीजगणितमे कई नई नई बाते निकाली। एक कोयलेकी खानिमे काम करनेवाला बड़ा भारी गणितज्ञ हुआ। एक दर्जीने वे वे बाते निकाली जो न्यूटन भी न निकाल सका। एक किसानने बिना किसीकी सहायताके जमीनकी गर्दिशको मालूम किया और अनेक खगोलसबंधी आविष्कार किये। एक ग्रामीण चमार बड़ा भारी फिलासफर हुआ और उसने लंदनमे अनेक पुस्तकोका संपादन किया।"

जितनें बड़े बड़े शिलपकार हुए है प्रायः सब शुरूमे बहुत ही साधारण स्थितिके आदमी थे। यदि वे अमीर होते तो कभी ऐसी उन्नति न कर पाते। गरीब होनेकी वजहसे ही उनको उन्नति करनेका शौक पैदा हुआ। उन्होने अपने छोटे छोटे कामोसे ही धीरे धीरे उन्नति की। एकदम बड़े कामको हाथ नहीं लगाया; परन्तु उसके लिए शनैः शनैः योग्यता प्राप्त करते रहे। फल यह हुआ कि एक दिन उनकी मनोकामना पूरी हो गई। उन्होंने सदा धैर्य्यसे काम किया और मितव्ययताको अपना सिद्धान्त बनाया। जरूरी चीजोके लिए कभी मुँह न मोड़ा, हाँ बिना जरूरतकी चीजोंमे कभी रुपया बर्बाद नहीं किया। यही उनकी सफलताका मूल मंत्र है।

मिस्टर नैस्मिथके शब्द प्रत्येक युवकके याद रखनेके काबिल है। उनका कथन है कि " मेरी सारी सफलताका रहस्य केवल इसमे है कि मनुष्यको पहले अपना कर्तव्य पालन करना चाहिए, पश्चात् भोगोपभोगोंपर ध्यान देना चाहिए और अभाग्य दुर्भाग्य आदि शब्दोंका एकदम बहिष्कार कर देना चाहिए। ऊपरके सिद्धान्तके विपरीत करनेसे ही ऐसे शब्द सुननेमें आते है। भ्रम और असंतोषसे ही असफलता होती

है। मिस्टर नैस्मिथने अपने बापको काम करते देखकर छोटे छोटे औजार बनाना शुरू किया और यहाँ तक उन्नति की कि बड़े बड़े एं-जिनाका आविष्कार किया तथा इतना रुपया कमाया कि ४८ वर्षकी उमरमे सासारिक धनसंपदासे तृप्त होकर वह एकातवास करने लगा। एकातमे बैठकर वह आलसी नहीं बना, किंतु देश और समाजके हितार्थ नये नये आविष्कार करने लगा। लार्ड डरबीने उसकी बड़ी प्रशंसा की है। पहले इन्द्रियसुखोकी इच्छा करना और पीछे कर्तव्यका पालन करना यह सबसे निंद्य और नीच सिद्धात है।

छठा अध्याय।

बचानेके नियम।

(विद्वानोके वाक्य।)

मनुष्य पशुओंसे इसी कारण बडा है कि उसमें अपने साथियोसे मिलकर काम करनेकी शक्ति है। समुदायसे जो काम हो सकता है, वह पृथ पृथक् व्यक्तिसे कभी नही हो सकता।

हमारे लिए सबसे पहली और जरूरी बात यह है कि हम अपनी इद्रियोंको दमन करे और अपनी इच्छाओको वशमे रक्खें।

भविष्यमे हमारी रक्षाके लिए सबसे उत्तम उपाय यह है कि हम अभीसे उस समयके लिए सामग्री संचय करके रक्खें।

× × × ×

बचोनेक नियम बड़े सरल है। सबसे पहला नियम यह है कि आमदनीसे कम खर्च करो। आगेके लिए जरूर कुछ न कुछ बचाकर रक्खो। जो

आदमी आमदनीसे ज्यादह खर्च करता है वह मूर्ख और पागल है। दूसरा नियम यह है कि हरएक चीज नकद रुपया देकर खरीदो, कोई उधार न लो। जो उधार लेता है अथवा कर्ज लेता है वह जरूर धोखा खाता है और प्रायः झूठा बेईमान हो जाता है। तीसरा नियम वह है कि आशासे-जिसका कोई निश्चय नहीं है—कभी खर्च मत करो। सम्भव है कि लाभ न हो। इस दशामें तुम्हारे सिरपर व्यर्थ कर्जका भार हो जायगा और तुम सदा उसके नीचे दबे रहोगे। चौथा नियम यह है कि अपनी आमदनी और खर्चका पूरा पूरा हिसाब रक्खो। पहलेसे अपना बजट आमद और खर्चका अंदाज बना लो। उसमें खर्चको आमदनीसे कम रक्खो। ऐसा करनेसे कभी तुमको तकलीफ न होगी। तुम्हारी जरूरतकी चीजें सब तुमको मिल जायँगी। बेफायदा खर्च करनेसे तुम फिजूल चीजोंको खरीद लोगे जिनकी तुम्हें कोई जरूरत नहीं और जरूरी चीजोंके लिए वक्त पर तुमको कर्ज लेना पड़ेगा। पाँचवाँ नियम यह है कि सदा इस बातका खयाल रक्खो कि कोई चीज फिजूल न जाने पावे। हर एक चीजको ठीक तौरसे काममें लाओ, नियत स्थान पर रक्खो और हरएक कामको कायदेसे अच्छी तरह करो। हरएक आदमीके लिए चाहे वह किसी हैसियतका हो, यह जरूरी है कि इन बातोंका खयाल रक्खे। बड़ेसे बड़े आदमीके लिए अपने घरकी चीजोंका खयाल रखनेमें कोई बात हल्की नहीं होती है। अंगरेजोंकी मेमें प्रायः आप बाजारसे सौदा खरीद कर लाती हैं। दिल्ली कलकत्ता बंबई आदि बड़े बड़े शहरोंमें बड़े बड़े रूपयेवाले आदमी आप बाजारसे सब्जी वगैरह खरीद कर लाते हैं।

शहरकी अपेक्षा जियादह बचत हो सकती है। सिर्फ इतना याद रखना चाहिए कि किसी दशामे भी खर्च आमदनीसे न बढने पावे।

मितव्ययता क्या अमीर क्या गरीब सबके लिए जरूरी है। इसके बिना कोई मनुष्य उदारता नहीं दिखला सकता। जो मनुष्य सारी आमदनी खर्च कर डालता है वह किसीकी सहायता नहीं कर सकता। न अपने बच्चोको पढ़ा सकता है और न अपने कुटुम्बियोके काम आ सकता है। वह दान पुण्य भी नहीं कर सकता।

यद्यपि हम लोग परिश्रमी और स्वावलम्बी है, परंतु संयमी और दूरदर्शी नहीं है। हम अपने विचार वर्तमान पर ही लगाये रखते है, भविष्यकी कुछ चिंता नहीं करते—यही हममे दोष है। इसीके कारण हम कभी कभी बहुत दुःख उठाते है। हमारे इस व्यवहारसे दूसरो पर भी बुरा असर पड़ता है। वे भी हमारी देखादेखी जो कुछ होता है खर्च कर डालते है। अमीर लोग दौलतके नशेमे आगा पीछा कुछ नहीं देखते; एकसे एक बढ़कर बागबगीचे, कोठी मकान, घोड़े गाड़ी रखते है। हमारे बराबर किसीका सामान न हो, इसी धुनमे वे सदा लगे रहते है। विवाह शादियोमे, नाच तमाशोमे हजारो और लाखों रुपया खर्च कर देते है।

धनिकोके पास तो रुपया है, वे जो चाहे करें। खराबी है तो यह कि मामूली आदमी भी उनकी नकल करने लगते है। जातिमे छोटे बड़े सब तरहके आदमी होते हैं। बहुतसी बातोमें, बहुतसे खर्चोंमे लोकलाजके कारण सबको समान खर्च करना पड़ता है। इससे साधारण आदमियोकी मुश्किल आजाती है। फिर उनकी देखादखी मेहनती मजूर तक भी वैसा ही करने लगते है। नित्य ही देखनेमे आता है कि शहरमें भंगी, चमार, कोली, कहार भी पैरमें बूट, जूता, सिरपर गोल

टोपी, जेबमे घड़ी, हाथमें छड़ी, बदनमें अँगरेजी कोट और कमीज डटाये रहते है। इन फिजूलखर्चियोंके कारण ही बादमें बड़ी बड़ी तकलीफे उठानी पड़ती है।

यह हमारी सरासर मूर्खता है। यदि हम सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहे तो हमको जरूर कुछ न कुछ आपत्तिकालके लिए बचाकर रखना चाहिए। इसका यह अभिप्राय नहीं कि हम पेट मसोसकर बदन सिकोड़कर कंजूसकी तरह रुपया जमा करे। न खावें, न पीवें, न पढ़े, न पढ़ावे, न बीमार होनेपर इलाज करे और न दूसरोको दुःखमे देखकर उनकी सहायता करे। किंतु यह अभिप्राय होना चाहिए कि हम अच्छी तरह रहें। रुपयोंको अपने तथा दूसरोंके सुखका कारण और साधन जानकर आगेके लिए थोड़ासा बचाकर रक्खे। कौन जानता है कि हमारी आमदनी सदा एकसी रहेगी। सम्भव है कि हम कल मर जावे अथवा बीमार पड़ जावें। यदि हमने कुछ रुपया जमा नहीं किया तो बतलाइए कल क्या हाल होगा? कौन हमारी स्त्री तथा बच्चोकी सहायता करेगा अथवा इलाजके लिए रुपया कहाँसे आयगा? इस दशामे क्या शोकका कोई पार रहेगा? आज तो हम बड़े कहला रहे है, कल हमारे बच्चे भिखारी हो जावेगे, अन्नके दाने दानेको तरसेगे।

इस लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि हम बचाना सीखे। ऐसा करनेसे अनेक चिन्तायें जाती रहती है और मनमे शांति रहती है। चाहे रुपया कितना ही थोड़ा हो, परन्तु वह निर्धनता अथवा रोगके समय बहुत ही काम आता है। उसी समय उसकी असली कदर मालूम होती है। जीवन स्वतंत्रतया आनंदपूर्वक व्यतीत होता है, वुढ़ापेका रंज नहीं होता, वाल-बच्चोकी चिन्ता नहीं रहती। जिस मनुष्यका

विवाह होगया है उसके लिए तो रुपयेका जमा करना ऐसा ही जरूरी है जैसा कि वर्त्तमानमे पैदा करना। जगतमे स्त्री और बच्चे पुरुषके अधीन और आश्रित होते है। पुरुष आजीविका करता है और अपने कुटुम्बका निर्वाह करता है। जैसा पहले कहा जा चुका है मृत्युके समयका कोई निश्चय नही है। सम्भव है कि पुरुषका अकस्मात् प्लेग, हैजा अथवा और किसी कारणसे देहात हो जाय। अब यदि उसके पास पहलेसे जमा किया हुआ रुपया नहीं है तो बतलाइए उसके कुटुम्बका निर्वाह कैसा होगा? सिवाय इसके और क्या परिणाम होगा कि स्त्री और उसके बच्चे या तो भूखो मरेगे या दूसरोके आगे हाथ पसारते फिरेगे।

अतएव प्रत्येक मनुष्यको यथाशक्ति बचानेका उद्योग करना चाहिए। परन्तु स्मरण रहे कि केवल बचानेके अभिप्रायसे बचाना ठीक नहीं है। जरूरतके समय अपने और दूसरोके काम आवे तथा अपने बाद अपनी स्त्री और बच्चोके काम आवे यह उद्देश्य बचानेका होना चाहिए। विद्वानोंका कथन है कि इस अभिप्रायसे बचानेमें बड़ा महत्त्व है। चाहे बचत अधिक न हो, तो भी बचानेका उद्योग करनेमे अनेक लाभ है। मन नियमित रूपसे काम करने लगता है, दूरदर्शिताको अपव्यय पर विजय प्राप्त होता है, धर्मके आगे अधर्मकी चल नहीं सकती, इन्द्रियाँ वशमे रहती है, चिंता जाती रहती है, सुख सदैव विद्यमान रहता है। बचाया हुआ रुपया चाहे कितना ही थोड़ा क्यो न हो, अनेक शोकोको दूर कर देता है, हमारी प्रतिष्ठा और स्वतंत्रताको सुरक्षित रखता है, हम जाति पर भाररूप नहीं होते किंतु उसके उपयोगी अंग होते है। जाति हमसे प्रेम करती और हमको अपनेसे पृथक् नहीं करना चाहती। आकस्मिक दुःखोंका हमें डर नही रहता।

प्रत्येक मनुष्यका यह पहला कर्तव्य है कि अपनी उन्नतिको तथा अपने भाइयोंकी बढतीके लिए उचित उपायोको काममे लावे। प्रत्येक मनुष्यको स्वतंत्र विचार करने और स्वतंत्र कार्य करनेकी शक्ति है। इसका प्रमाण उन हजारो आदमियोकी जीवनीसे मिल सकता है जिन्होने आपत्तियो और कठिनाइयोसे घोर युद्ध किया है और उन पर विजय प्राप्त करके अपनेको उच्च बनाया है।

केवल दृढ संकल्प और स्थिर विचारोंकी जरूरत है। निःसंदेह हमको शुरूमे बड़ी बड़ी कठिनाइयाँ आवेगी, परन्तु हमे उन्हे धीरतासे सहन करते जाना चाहिए। हमको अपने बहुतसे खर्चोंमें कमी करनी होगी। सम्भव है कि कुछ कालके लिए हमको कुछ दुःख मालूम हो; परन्तु यदि हम करते जावेगे, साहस और उद्योग न छोड़ेंगे तो बहुत जल्द सफलता प्राप्त कर लेगे। पहले हमको खुद मिसाल बनकर दुनियाको दिखलाना चाहिए। हम मितव्ययताका कितना ही उपदेश लोगोंको दे; परन्तु वह कुछ कार्यकारी न होगा। हाँ, यदि हम खुद करके दिखलावे तो बिना कहे ही लोग हमारा अनुकरण करने लगें और धीरे धीरे सारा समाज उन्नति कर लेगा। क्योकि पृथक् पृथक् व्यक्तिसे ही मिलकर समाज बना है, व्यक्तिगत उन्नति अथवा अवनति पर ही समाजकी उन्नति अथवा अवनति निर्भर है।

प्रायः लोग इस बातसे डरा करते है कि कहीं हमारे काममे हानि न हो जाय। यह उनकी भूल है। यदि हम श्रम, साहस और दूरदर्शितासे काम करे तो कदापि हानि नही हो सकती। हाँ, यदि हम इनके विपरीत करेंगे तो जरूर हानि होगी। जो आदमी खुद कुछ नहीं करता और सदा दूसरोंका मुँह ताकता रहता है अथवा जो कोई अपने रुपयोको फिजूल खोता रहता है अथवा जो कोई कंजूसी करता

है, उसका काम जरूर फेल होगा। बहुतसे आदमी अपनी अयोग्यताके कारण हानि उठाते है। वे उलटे तरीकेसे कामको शुरू करते हैं और कितना ही नुकसान क्यो न उठा लें, अपनी हठको नहीं छोड़ते। बहुतसे आदमी भाग्यको उलहना दिया करते है। पर यह उनका भ्रम है। वे भाग्यके अर्थको नही समझते। समीचीन या अच्छे प्रबन्धका ही दूसरा नाम भाग्य है। अभागा वही है जो व्यवहारिक बातोको नहीं जानता और अनुभवसे लाभ नहीं उठा सकता।

कोई कोई मनुष्य योग्य और उत्तम होते हुए भी विचारहीन होते है। न वे देशकालका विचार करते है और न देशकालके अनुसार बर्ताव करते है। अंधेकी नाई बढे चले जाते है, परिणाम यह होता है कि धमसे गढेमें गिर पड़ते है, अर्थात् उनका काम बिल्कुल डूब जाता है।

जीवनक्षेत्रमे सुगमतासे निवास करनेके लिए इस बातकी जरूरत है कि हम जो कुछ कहे वह करके दिखलावे। केवल बातें बनानेसे काम नहीं चलता। हम उसी आदमीको पसँद करते है, जिसके उद्देश स्थिर है और जो उन उद्देश्योकी पूर्तिके लिए सरल और सीधे मार्गको ग्रहण करता है।

संसारमे सफलता और धनप्राप्तिकी आशा प्रत्येक व्यक्तिके हृदयमे स्वभावसे ही अंकित है। यह इच्छा बुरी नहीं है, बहुत ही लाभदायक है। इसीसे लोग श्रम और साहस करना सीखते है और समाज उन्नति करता है। यह कलाकौशल्य और व्यापारको बढाती है और लोगोंको काम करना सिखलाती है।

यदि यह इच्छा मनुष्यमें न होती तो वह निरा आलसी ही रहता, किसी काममें भी हाथ न लगाता। इसीकी बदौलत नित्य नये नये आविष्कार देखनेमे आते है।

कोई आलसी अथवा अमितव्ययी मनुष्य कभी संसारमे महत्त्वका भागी नहीं हुआ। उसका नाम कभी संसारके महत् पुरुषोकी गणनामें नहीं आया। जिन मनुष्योंने अपने ज्ञान विज्ञानके बलसे संसारको उन्नत अवस्था पर पहुँचाया है और उसके इतिहासमे किसी प्रकारका परिवर्तन किया है वे उन्ही महात्माओमेसे थे, जिन्होंने अपने जीवनके एक समयको भी नष्ट नहीं किया। वास्तवमें श्रम पर ही जीवनका अस्तित्व है। श्रमसे बढकर संसारमे कोई बहुमूल्य वस्तु नही है।

रुपयेके सदुपयोग पर ही सब चीजोका आधार है। न्यू आरालेंसके जान डानफकी कबर पर निम्नलिखित शिक्षायें नवयुवकोंके हितार्थ खुदी हुई है जिनके अनुसार चलनेसे वे कभी जिन्दगीमें धोखा नहीं खा सकते:—

१—सदा याद रक्खो कि हमारे जीवनका अस्तित्व श्रम पर है।

२—समय स्वर्ण है। एक पल भी नष्ट न करो—प्रत्येक पलको शुभ-कार्यमें लगाओ।

३—दूसरोंके साथ वैसा ही व्यवहार करो जैसा तुम चाहते हो कि वे तुह्मारे साथ करें।

४—जो काम आज हो सकता है उसे कल पर कभी मत छोड़ो।

५—जो काम तुम खुद कर सकते हो उसके लिए कभी दूसरेसे मत कहो।

६—जो चीज तुम्हारी नहीं है, उसकी इच्छा कभी न करो।

७—किसी भी चीजको तुच्छ मत समझो।

८—जिस चीजकी आमद नहीं है उसे फिजूल न खोओ।

९—पैदा करो, खोओ मत।

१०—तुम्हारे जीवनके समस्त कार्य नियमानुकूल होने चाहिएँ।

११-जिस चीजसे तुम्हें आराम मिलता हो उसे कभी मत छोड़ो। जीवन सदा सरलता और मितव्ययसे व्यतीत करो।

१२-अंत समय तक श्रमको न त्यागो।

बहुतसे आदमी समीचीन प्रबन्धके कारण निर्धनताकी अवस्थामें भी अपना निर्वाह करते रहते है, भूखो नहीं मरते। छोटे छोटे दर्जेके मनुष्य भी एक दूसरेसे मिलकर काम करनेसे निर्धनताके चुंगलमे नहीं फँस सकते, किन्तु अपनी शक्तियोको बढा सकते है और जातिकी उन्नतिमें भी योग दे सकते है।

अकेला मनुष्य समाजकी कुछ उन्नति नहीं कर सकता। हाँ, यदि वह अपने साथियोसे मिलकर काम करने लगे तो बहुत कुछ कर सकता है। मिलकर काम करनेमें बड़ी शक्ति है। सभ्यता समुदायका ही फल है। प्रसिद्ध विद्वान् मिस्टर मिलका कथन है कि प्रायः जिन जिन चीजोके कारण मनुष्य पशुओसे बड़ा समझा जाता है वे सब समुदायमे रहने और मिलकर काम करनेसे ही मनुष्यको प्राप्त हुई है।

जातीय उन्नतिका गुप्त रहस्य मिलकर काम करना है। जितना अधिक लाभ पहुँचाना अभीष्ट हो उतना ही अधिक मिलकर काम करना योग्य है। मध्यमश्रेणीके मनुष्योंमे मिलकर काम करनेका अभ्यास है। इंग्लैण्ड देशकी वृद्धि और उन्नतिके कारण ये ही लोग है। इन्होने मिलकर वे वे काम किये है जो पृथक् पृथक् व्यक्तिसे कभी न हो सकते। शत्रुओको भगानेके लिए, बुराइयोको दूर करनेके लिए, उद्देश्योंकी पूर्तिके लिए, व्यापारकी वृद्धिके लिए, नई नई चीजोके बनानेके लिए, कल और एंजिनोके तैयार करनेके लिए, तथा अनेक श्रमजनक कार्योंके लिए, इन्होने सदा अपनी शक्तियोंको मिलाकर काम किया। छोटे छोटे हिस्सोसे बढाते बढाते बड़ी बड़ी कम्पनियाँ बना लीं और

करोड़ों रुपयेके कारखाने खोल लिये! जितनी स्टाक कम्पनियाँ, रेलवे कम्पनियाँ, टेलीग्राफ कम्पनियाँ, तथा कल कारखाने दिखलाई देते है वे सब इन्हीं लोगोंके एकत्रित श्रम और धनके नतीजे है। इंग्लैण्ड देशने जितनी उन्नति की है वह सब कम्पनियों द्वारा ही की है। वहाँ ऐसा कोई शहर या ग्राम न होगा जिसमे कोई न कोई कम्पनी या सोसायटी न हो। इन सोसायटियोके द्वारा ही शिक्षादिका प्रबन्ध होता है और अनाथो विधवाओकी पालना की जाती है। भारतवासियोको भी इनका अनुकरण करना उचित है। हर एक शहरमे ऐसी सोसायटियां होनी चाहिए जिनके द्वारा कलाकौशल्यका प्रचार हो, व्यापारकी उन्नति हो और उनके नफेमेसे कुछ भाग हिस्सेदारो तथा और लोगोके बालकोकी शिक्षा-रक्षाके लिए नियुक्त किया जाय। यदि साहस और मितव्ययतासे मिलकर काम किया जाय तो ज़रूर लाभ होगा और थोड़ी पूँजीवाली कम्पनी भी बहुत जल्दी बढ जायगी। ऐसी कम्पनियोसे अनेक लाभ हैं। सबसे बड़ा लाभ यह है कि थोड़े थोड़े रुपयोसे ही बड़ा काम चल सकता है और काफी नफा हो सकता हैं। दूसरे कंम्पनियाँ बनाकर काम करनेसे अपनी ताकत बहुत बढ जाती है और आपसमें मेल और एकता होनेसे दुःखके समयमें तकलीफ मालूम नहीं होती। तीसरे कम्पनियोंमे काम करनेसे फिजूलखर्च भी किफायतसे खर्च करने लगते है और छोटे छोटे दर्जेके आदमी भी बड़े हो जाते है हिस्सेदारोके सिवा मेहनती मजूरोंको सदा काम मिलता रहता है; वे खाली नहीं बैठने पाते। वे भी धीरे धीरे मजूरीमेसे कुछ बचाकर जमा करने लगते है और थोड़े ही दिनोमे आसानीसे एक एक दो दो हिस्सोके मालिक बन जाते है। जहाँ एक दो हिस्सेके मालिक हुए और साल भरका नफा मालूम हुआ, फिर तो उन्हे ऐसा शौक लग

जाता है कि बिना कुछ बचाये चैन ही नहीं पड़ती। परिणाम यह होता है कि कुछ वर्षोंमे ही वे मजूरोकी श्रेणीसे निकलकर व्यापारियोंकी गणनामे आजाते है और अपने जीवनमे ही धनी कहलाने लगते है। इंग्लैंड आदि देशोमे ऐसे सैकड़ो उदाहरण मौजूद है। हमे भी उनका अनुकरण करना योग्य है।

सातवाँ अध्याय।
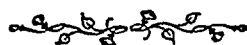
बीमा कम्पनियाँ और सहायक सभायें।

(विद्वानोंके वाक्य।)

हमको जीवन इस लिए नहीं मिला है कि हम हर समय उन चीजोंके हासिल करनेमें लगे रहे जिनको हम मरते समय यही छोड़ जायँगे।

बुढ़ापेमे हमको सुख अथवा दुःख बहुधा हमारे पूर्वके कृत्योके अनुसार ही मिलता है।

सत्यके लिए ससारमे हम सब एक दूसरेके सहायक और शुभचिंतक हैं।

* * * *

बचतका एक तरीका तो हम पिछले अध्यायमे बतला ही चुके है। उसके सिवा दो तरीके और है। एक यह है कि हमको अपनी जानका बीमा करा लेना चाहिए जिससे हमारे मरनेपर हमारे घरवालोको उनके खर्चके लिए काफी रुपया मिल जाय। दूसरा तरीका यह है कि ऐसे सहायक फंड खोलने चाहिए जिनसे गरीब लोगोको दुःखके समय अराम मिले और उनके मरने पर उनकी गरीब स्त्री और बच्चोंको कुछ मदद मिल जाय—जिससे उनको एकबारगी विशेष दुःख माल्म न हो।

पहला तरीका ऊँचे और बीचके दर्जेके लोगोंके लिए है और दूसरा गरीब लोगोंके लिए।

यदि हम चाहे कि अपने कुटुम्बके लिए धीरे धीरे रुपया जमा करते रहे, तो इसमें वर्षों लग जावेगे; फिर भी काफी रुपया जमा न हो सकेगा। इसके अतिरिक्त सम्भव है कि किसी समय जरूरतके पड़ने पर उस रुपये पर भी तबीयत चल जाय और यह खयाल करके कि मौतका कौन ठिकाना है, न मालूम कितने दिनोंमें आवें, तब तक फिर जमा कर लेंगे—उसको भी खर्चमे ले आवें। इस कारण अपने पास जमा किये हुए रुपयेपर कोई भरोसा नहीं किया जा सकता। जरूरतके वक्त सब खर्च हो जाता है और अपने बाद कुटुम्बका क्या हाल होगा, इसका कुछ खयाल नहीं रहता।

परंतु जो मनुष्य किसी बीमा कम्पनीमे शामिल हो जाता है वह सबसे आराममे रहता है। वह सदा थोड़ा थोड़ा माहवारी या सालाना चंदा कम्पनीके कोशमे जमा करता जाता है और मौतसे बिल्कुल निडर होकर गहरी नींद सोता है। चाहे आज चंदा देकर कल ही क्यों न मर जाय परंतु उसे कुछ चिन्ता नहीं होती। कारण कि उसकी स्त्री और बच्चोंको जितने रुपयोंका बीमा कराया है उतने रुपये शीघ्र ही मिल जाते है।

बीमा करनेसे न केवल उसके कुटुम्बको लाभ होता है किंतु स्वयं उसको अपने जीवनकालमे दूरदर्शिताका खयाल होता जाता है। सबसे बड़ा फायदा यह है कि बीमा करानेवालेके मनमें दुःखके समय अत्यन्त पीड़ा अथवा मरते समय किसी प्रकारका क्लेश नहीं होता।

जिस मनुष्यने अपनी संतानके लिए रुपया जमा नहीं किया उसको मरते समय आधा दुःख रुपयेके न होनेका होता है। इसीके कारण

औषधका उस पर कुछ असर नहीं होता और उसका रोग बढता ही जाता है। कवि बर्न्सने मरनेसे कुछ दिन पहले अपने एक मित्रको लिखा था कि "मै अबतक दुःखमे फॅसा हूँ। हाय! मुझे इससे भी अधिक दुःख अपने बादकी दुःखमयी अवस्थाके भयका है। मेरी विधवा स्त्री और छह छोटे प्यारे अनाथ बच्चे अब क्या करेंगे? मै क्या करूँ? मेरी आधी बीमारी इसी चिन्ताके कारण है।"

बीमा कम्पनियाँ विशेषकर अनाथो और विधवाओकी रक्षाके लिए स्थापित की जाती है। थोड़ी आमदनी और पूँजीवाला मनुष्य भी इनसे फायदा उठा सकता है। थोड़ा थोड़ा देते कुछ दूभर नहीं मालूम होता। प्लेग आदि दुर्घटनाओके कारण अकाल-मृत्युके समय इंनसे यथेष्ट लाभ होता है।

प्रायः देखनेमे आता है कि बहुतसे आदमी उमर भर काम करते रहने पर भी मरते समय अपने बच्चोको भूखे गरीब छोड़ जाते है। जीवनकालमे वे बड़े सुखचैनसे रहे, कभी खाने पीने और रहने सहनेमें कमी न की, परंतु उनके मरते ही उनकी अवस्था शोचनीय हो गई। यदि वे १०—२० रु० साल भी किसी बीमाकम्पनीमे जमा कराते रहते तो उनके खर्चमें कोई कमी न आती और उनके कुटुम्बको भी कोई कष्ट न होता। परंतु उन्होने अपनी अदूरदर्शिताके कारण इस पर कुछ भी विचार न किया, जितना कमाया सबका सब खर्च कर दिया; जिसका परिणाम यह हुआ कि उनके मरते ही उनकी सतान समाजके लिए भारस्वरूप हो गई। अपनी संतानके प्रति इस प्रकारका व्यवहार करना बड़ी निर्दयता और कठोरता है। पहले तो उनका लालन पालन करना, उनके लिए सर्व प्रकारकी सुखसामग्री संचय करना और फिर

उनको परवश, पराधीन और निर्धन छोड़ जाना, यह एक प्रकारसे समाज और उनके प्रति अन्याय और अपराध करना है।

अतएव हरएक आदमीके लिए यह बहुत जरूरी है कि वह थोड़ा थोड़ा रुपया किसी अच्छी बीमा कम्पनीमें जमा करता रहे कि जिससे अकालमृत्यु आदिका भय न रहे। मौतके बराबर कोई निश्चित चीज नहीं; परंतु मौतके समयके बराबर कोई अनिश्चित भी नहीं। यदि हमने १०—१५ रु० देकर ५०० रु० का भी आज बीमा करा लिया तो समझना चाहिए कि ये ५०० रु० ऐसे सुरक्षित बेंकमें जमा होगये है कि चाहे कितनी ही जरूरत क्यो न पड़े कभी खर्च न होगे। और यदि हम कल मर जावे तो कल ही हमारे बालबच्चोंको मिल जावेंगे।

यदि हम ये १०—१५ रु० बीमा कम्पनीमें जमा न कराकर किसी बेंकमे जमा करते या किसी और जगह सूद पर चढ़ाते तो कहीं ३०—३५ सालमे जाकर ५०० रु० जुड़ पाते, परन्तु बीमा कम्पनीमे जमा करानेसे ये ३०—३५ वर्ष चिंता आदिके दुःखोसे मुक्त हो गये—अब भावी दुःखका भय वर्तमान सुखको नष्ट नहीं कर सकता।

इस तरह जीवनका बीमा एक प्रकारका ठेका है जिससे जीवनकी कठिनाइयाँ और आपत्तियाँ सरल हो जाती है। जो लोग जल्दी मर जाते है वे उन लोगोके धनमें साझी हो जाते है, जो देरमे मरते है। यदि कोई मनुष्य इतने काल तक जिये कि उसमे यदि वह स्वयं जमा करता जाता तो बीमेसे मिलनेवाली रकमसे जियादह जमा कर लेता, तो भी उसे कोई पश्चात्ताप नहीं हो सकता, यदि वह उस सुख और शातिका हिसाब लगाकर देखे जो उसे इतने दिनोतक रही है।

जिस तरह बम्बई कलकत्ता आदि बड़े बड़े शहरोमे सौदागर लोग अपने मालको अग्निसे सुरक्षित रखनेके लिए उसका बीमा करा देते हैं, उसी तरह जीवनको रोग शोक तथा असमयमृत्युसे बचानेके लिए लोगोंको उसका भी वीमा करा देना उचित है। जैसे वह जरूरी है वैसे ही यह भी जरूरी है। जिस प्रकार पति और पिताका, जीवनकालमें भोजनकी चिंता करना और कुटुम्बका निर्वाह करना कर्तव्य है उसी प्रकार जीवनके पश्चात् भी स्त्री और संतानके लिए सामान जमा कर जाना जरूरी है। यह प्रत्येक पुरुषका धार्मिक कर्तव्य है जिसका उसे सर्वदा पालन करना उचित है। सौभाग्यसे इसके लिए साधन भी आजकल अनेक हैं और प्रबन्ध भी प्रशंसनीय है। अतएव हमें इसके लिए तत्काल ही दृढ संकल्प कर लेना चाहिए। इसमे कोई दोष या आपत्ति नहीं है और किसी प्रकारकी मानहानि भी नहीं है। यह अति उत्तम और लाभदायक कार्य है जिसमे किसीको कोई शंका नहीं हो सकती। इंग्लैड आदि देशोंमे इसका बहुत कुछ प्रचार है। भारतवर्षमें भी यह दिन दिन बढता जाता है। परंतु इतनी बात याद रखना चाहिए कि जब हम किसी कम्पनीमे शामिल हो तो उसके नियमोंको अच्छी तरह देख लेवे। उसके डायरेक्टरो, प्रबन्धकोंके व्यवहार और हिसाब-किताबकी भलीभाँति जॉच कर लेवें और जिस तरह हो सके उसकी ईमानदारीकी परीक्षा कर लेवें कि जिससे बादमे धोखा न उठाना पड़े। हमें शोकके साथ लिखना पड़ता है कि आजकलकी इश्तहारी दुनिया हमको बहुत कुछ हानि पहुँचा रही है। इस लिए चाहिए कि, हम केवल छपे हुए उदाहरणो पर ही संतुष्ट न हो जावें; किंतु अच्छी तरहसे देख भालकर शामिल हों। आजकल प्रावीडेट फंडवाली बीमा कम्पनियो जगह जगह खुल रही है। जितने इश्तहार छपते हैं उनमें

प्रायः उन्हीं लोगोंके नाम आते है जिनको चंदा दी हुई रकमसे जियादह रुपया मिला। इन्हीं नामों और रकमोंको देख कर सर्वसाधारण मेम्बर बनने लगते है, परंतु बादमे बहुत धोखा खाते है और टोटेमें रहते है। हमने स्वयं एक कम्पनीमे अपने एक सम्बन्धीकी शादीका बीमा कराया था। करीब १८रु०का चंदा देकर ९रु०पाये, उलटे गाँठके ९रु०खोने पड़े। हमे जहाँ तक खयाल है किसी इश्तहारमे भी यह उदाहरण न आया होगा और हमारा जिकर न होगा। उदाहरण जहाँ मिलेंगे उन ही लोगोके मिलेगे जिन्होंने १० रु० देकर १०० रु० पाये अथवा २० रु० देकर ५०० रु० पाये।

अतएव पाठकोको उचित है कि इश्तहारो पर ही लुब्ध न हो जावें। जहाँतक हो सके कम चंदेक लोभमे आकर प्रावीडेंट फंड कम्पनियोमें शामिल न हों। किंतु ओरियंटल, सन राइज आदि प्रसिद्ध बीमा कम्पनियोमे जिनमें नियत रकमका बीमा किया जाता है शामिल हों। चन्दा निःसंदेह कुछ अधिक देना होगा, परंतु रुपयेकी संख्या मालूम होनेसे चिंता न होगी। प्रावीडेंट फंडोमे कोई संख्या नियत नहीं होती। शादियो और मौतोंकी संख्या पर रुपयोंकी संख्या होती है। कभी १ रु० के १० रु० मिल जाते है पर कभी रुपयेके आठ आने ही रह जाते है।

दूसरा तरीका यह है कि ऐसी सोसायटियाँ स्थापित करनी चाहिए कि जिनसे बेचारे गरीब लोगोको दुःख अथवा आपत्तिके समय सहायता मिले। सोसायटीमे जितने मेम्बर होते है वे सब एक दूसरेके सहायक समझे जाते है। सोसायटीका जितना रुपया होता है वह सब सोसायटीके मेम्बरोकी ही सहायताके लिए होता है। पृथक् पृथक् मनुष्य कुछ नहीं कर सकता। रोग अथवा मृत्युके समय उसके दुखका कोई

पार नहीं होता। न कोई उसका सहायक होता है और न उसके पास काफी रुपया ही इलाज अथवा संतानपालनके लिए जमा होता है। परंतु सहायक सोसायटियोंके मेम्बरोंको इस प्रकारका कोई दुःख नही होता। उनके इलाज अथवा उनकी संतानक पालन पोषणके लिए सोसायटी मौजूद रहती है। चाहे उन्होंने केवल १० रु० ही चंदा दे पाया हो, परन्तु सोसायटी उनके लिए १०० रु० भी खर्च करनेको तैयार रहती है।

इंग्लैड, बेलजियम, फ्रान्स आदि देशोमे ऐसी बहुतसी सोसायटियाँ मौजूद है। वहाँके मनुष्य ऐसी सोसायटियोमे शामिल होना अपना कर्तव्य समझते है। वास्तवमे इनसे लाभ भी अनेक है। थोड़ासा चंदा देनेसे ही लोग मेम्बर बन जाते है। चंदेका रुपया व्यापार आदि कार्योंमे लगाया जाता है, जिससे नफा भी होता रहता है। इस तरह सोसायटीका धन भी बढता जाता है। जिस समय किसी मेम्बरको किसी प्रकारका दुःख होता है अथवा वह अचानक मर जाता है तो इस देशकी नाई उसकी बुरी दशा नही होती। उसकी औलाद भूखो नहीं मरती, भीख नहीं माँगती, उसका घर-बार नीलाम नहीं होता, सोसायटी उसकी तन मन धनसे सहायता करती है। इसमे संदेह नहीं कि पहले लोगोको चंदा देते कुछ बुरा जरूर माल्रम होता है और एक प्रकारका फिजूल खर्च जान पडता है, परंतु पीछे इसका असली उपयोग माल्रम होता है। मेहनती-मजूर लोगोको तो इससे बहुत ही फायदा पहुँचता ; कारण कि वे अपनी थोड़ीसी मजूरीमेंसे कुछ नहीं बचा सकते, सबका सब खर्च कर डालते है और दुःखके समय काम बद होने और पैसा पास न होनेके कारण जितना दुःख उनको होता है उसको वे ही जानते है। जो दो दिनमे अच्छे हो जाते, वे दश दिनमे भी अच्छे नहीं

हो पाते। कुछ बेचारे तो पैसेके अभावसे कोई इलाज ही नहीं कर सकते, यों ही मर जाते है। यदि ये लोग सहायक सोसायटियोंमें शामिल हों और आमदनीका दसवाँ वीसवाँ हिस्सा भी चंदा देते रहें तो इन्हे कोई कष्ट नहीं हो सकता।

इंग्लैडमें केवल मजूरोने ही ऐसी अनेक सोसायटियाँ खोल रक्खी है। इनसे न केवल सभासदोंको लाभ पहुँचता है किंतु आमदनीका कुछ भाग अन्य धार्मिक कार्योंमें भी लगाया जाता है। इसके अतिरिक्त एक सोसायटीके सभासद होनेके कारण सब एक दूसरेके सुख दुखमे साथी रहते है। आपसमे एक प्रकारकी शांति मालूम होती है। सभासदोंकी जितनी संख्या बढती जाती है उतनी ही शक्ति और प्रीति बढती जाती है, जिसका परिणाम देशके लिए बड़ा ही लाभकारी होता है।

हिंदुस्तानमे ऐसी सोसायटियोंकी बहुत कमी है। इस कमीके कारण ही यहांके साधारण स्थितिके मनुष्य बहुत दुःख उठाते है। अतएव यहां ऐसी सोसायटियोंका स्थापित करना बडा जरूरी है। इनके स्थापित होनेसे यहांके लोगोंमेंसे भिक्षावृत्तिके भाव निकल जायेंगे और वे स्वावलम्बन और आत्मनिर्भरताको सीख जायगे।

अवश्य ही यह काम बडा कठिन है। इसमें प्रत्यक्षमें लाभ कम और हानि अधिक है। परंतु यदि इसको विचारपूर्वक किया जाय और अच्छे नियमों पर चलाया जाय तो अवश्य सफलता होगी। यूरुपके देशोंमें इस प्रकारकी हजारों सोसायटियां नियमोंके ठीक न होनेके कारण टूट गईं। इसलिए नियमोंको बड़े विचारपूर्वक बनाना जरूरी है। विशेष कर इस बात पर ध्यान देना योग्य है कि उनके सभासदों पर अवस्थाके अनुसार चंदा लगाया जाय। यह न हो कि चाहे ७० बरसका

बूढा शामिल हो चाहे २० वर्षका जवान, दोनोसे एकसा चंदा लिया जाय। बहुतसी सोसायटियाँ इसी खराबीसे फेल हुई है। उनमे बूढोकी तादाद बहुत बढ गई जो स्वभावतः जवानोंसे कहीं पहले बीमारीमे फँस गये अथवा संसारसे चल बसे। इस तरह चंद बूढोने ही सोसायटीका सारा रुपया खतम कर दिया, बेचारे जवानोको हानि उठानी पड़ी। यह देखकर जवानोने शामिल होना ही छोड़ दिया, केवल बूढे ही आने लगे। इनका चंदा इतना हुआ नहीं कि उनकी बीमारी अथवा मौतके खर्चको पूरा करे। अंतमे रुपयेके अभावसे सोसा-यटीकी ही इतिश्री हो गई।

इन सोसायटीयोने तो इस कारणसे धोखा खाया कि इनको इन बातोंका अनुभव न था। न कोई इस प्रकारका दृष्टात उनके सामने था; परंतु भारतवासियोंके सामने तो अब पूरा इतिहास मौजूद है जिसमे समस्त कम्पनियो और कारखानोकी सफलता असफलताके रहस्य और कारण प्रत्यक्ष विद्यमान है। विचारपूर्वक काम किया जाय तो कदापि हानि न होगी। जिन खराबियोके कारण ऐसी सोसायटि-योको हानि पहुची है उनका प्रवेश ही न होने देना चाहिए। जो कार्य किया जाय वह उद्देश्य और नियमानुकूल ही किया जाय, जितने कार्यकर्ता नियुक्त किये जायँ वे सब कर्तव्यपरायण और सत्यनिष्ठ हो; उनको धर्म आर न्यायसे कदापि विमुख न होना चाहिए।

आठवाँ अध्याय

सेविंग बेंक।

(विद्वानोंके वाक्य।)

मेरी उत्कट इच्छा है कि मै समस्त संसारमे सेविंग बेक शब्दको सुनहरे अक्षरोंमें लिख दूँ।

गरीब लोगोंकी मददके लिए, सबसे अच्छा उपाय यह है कि उनको यह बात सिखलाई जाय कि वे अपनी दशा स्वय सुधारें।

चीटीके पास जाओ और उससे शिक्षा ग्रहण करो। उसकी कोई देख भाल नही करता तिस पर भी वह अपने लिए गर्मीमें सामान जमा कर लेती है और जाड़ेमें आरामसे खाती है।

* * * *

भारतवर्षमे जिधर देखो उधर ही निर्धनताका साम्राज्य है। शायद ही कोई घर ऐसा होगा जिसमें इसका जोर न हो; प्रायः सब ही इसकी शिकायत करते है। इसका कारण कुछ न कुछ अवश्य है। विचार करनेसे मालूम होता है कि हम अपनी मूर्खता और अदूरदर्शिताके कारण इसके चुंगलमे फँसते है। आगेके लिए कुछ भी जमा नहीं करते। रोग शोक तथा अकालमृत्युकी कुछ पर्वा नहीं करते। जितनी आमदनी होती है सबकी सब खर्च कर डालते हैं। यही कारण है कि आपत्ति आने पर हम भूखों मरते हैं। आगेकी बात कोई नहीं जानता। सम्भव है कि कल हम बीमार पड़ जावें अथवा कल हमारी नौकरी छूट जावे; यदि हमारे पास थोड़ासा भी रुपया जमा है तो हमें कुछ कष्ट न होगा। तब तक आराम होगा अथवा दूसरी जगह नौकरी मिलेगी, तब तक हम आरामसे अपना निर्वाह कर सकेगे। परंतु इसके विपरीत यदि हमारे पास रुपया नहीं है तो हमारी दशा बहुत शोचनीय हो जाती है।

चाहे कितना ही थोड़ा रुपया हो जरूरतके समय बड़ा काम अता है। मान लो, किसी मजूरके पास दस रुपये है। उसकी नौकरी छूट गई और दूसरे शहरमे जियादह मजूरी मिलती है, तो वह इन दस रुपयोसे दूसरे शहरमें जाकर काम कर सकता है; परंतु यदि उसके पास कुछ नहीं है तो वह वहीं पड़ा रहेगा—कहीं भी। जा सकेगा।

हम यह नहीं कहते कि कंजूसकी तरह रुपया जमा किया जाय हम केवल इस कारणसे रुपयेकी कदर करते हैं कि हमें आराम मिलने संसारमे सब चीजे रुपयेहीसे मिलती है। जिसके पास रुपया है, जो आमदनीका थोड़ा हिस्सा भी बचाता है वह सदा आराममें रहता है, कभी तकलीफ नहीं उठाता।

आजकल रुपया जमा करनेके साधन भी अनेक हैं। हरएक शहरमे बेक खुले हुए है, और सरकारने गरीबोंके सुभीतेके लिए हरएक कसबे और हरएक शहरमे डाकखानोके साथ साथ सेविंग बेक भी जारी कर रक्खे है। डाकखानोंमे और और कामोंके साथ सेविंग बेकका भी काम होता है। इस बेकके नियम बड़े ही सरल और उपयोगी है। गरीबसे गरीब भी इनसे लाभ उठा सकता है। चार आने तक भी इस बेकमें जमा कर लिये जाते है और चलते हिसाबमें चार आने सैकड़ा माहवारी सूद मिलता है। जब चाहो जितना रुपया जमा कर दो और हफ्तेवार जितना चाहे निकाल लो, कोई कैद नहीं। अँगरेजी राज्यमे चाहे जिस डाकखानेमें अपना हिसाब बदलवा लो, तुम्हारी कौड़ी भी खर्च न होगी। इस बेकमे रुपया डूबने अथवा दीवाला निकलनेका भी कोई भय नहीं। यह सरकारी बेक है। इसकी मालिक और देनदार सरकार है। सबसे बड़ी बात यह है कि

इस बेंकका हिसाब बड़ा ही गुप्त रक्खा जाता है । पोस्टमास्टरको खास तौरसे इस बातकी हिदायत होती है कि वह किसी हिसाबदारका नाम प्रकट न करे । हरएक हिसाबदारको डाकखानेसे एक किताब मुफ्त मिलती है जिसे पास-बुक कहते है । इसमे ही जो रुपया तुम जमा करो अथवा निकालो दर्ज किया जाता है । हर दफे तुम्हारे हिसाबकी बकाया निकाल दी जाती है । साल भरमे सूद जोड़ दिया जाता है । इसी किताबके पीछे रुपया जमा करने और निकालनेके और नियम लिखे होते है ।

पहले पहले ये बेक इंग्लैडमे गरीब लोगोंके लिए स्थापित हुए थे, पर अब सब देशो और ग्रामोंमें जारी हो गये है । इनका मुख्य उद्देश यह है कि साधारण लोग रुपया जमा कर सके । जो आदमी चार आने रोज कमाता है उसके लिए पैसा रोज बचाना कोई कठिन बात नहीं है । यदि पैसा रोज भी बचाया जाय तो महीनेमे आठ आने हो जाते है और ये आठ आने सेविंग बैंकमे जमा करनेसे सालमें ६ रु० हो जायँगे । १० वर्ष में ६२ रु० के करीब हो जायँगे । हर साल मूलमे ब्याज भी शामिल होता जायगा । जिस मनुष्यकी अमदनी ५० रु० मासिक है, यदि वह १२ रु०मासिक डाकखानेमे जमा करे तो दश वर्षमे सूद दर सूदके हिसाबसे १७०० रु० जमा कर सकेगा । इन रुपयोसे यदि वह चाहे तो कोई अच्छा काम कर सकता है । किसी व्यापारादिमे लगा कर दस बारह रु० सैकड़ेका सूद कमा सकता है । यदि कुछ न करे तो किसी दूसरे बेकमें जमा करके पॉच छह रु० सूद कमा सकता है ।

अतएव हमें यथासाध्य बचानेकी कोशिश करनी चाहिए । महीनेमे जो बच सके, उसे सेविंग बेकमे जमा कर देना चाहिए । अपने बच्चोंको भी शुरूसे ही इसका अभ्यास कराना चाहिए । जेबखर्चके लिए

उन्हे पैसे दो तो उनसे यह जरूर कह दो कि इनमेसे कुछ बचाकर रखते जाओ। महिनेमे जब चार आने अथवा अधिक हो जावे तब किसी पासवाले डाकखानेमें उनका हिसाब खुलवा दो। बालकोंके नामसे भी हिसाब खोला जासकता है।

उनकी 'पासबुक' उन्हींको दे दो और उनको अच्छी तरह समझा दो कि बेटा, इस किताबको अपने पास बड़ी होशयारीसे रखना। जब तुम चार आने जमा कर लो, तब डाकखानेमें जाकर इस किताबमे जमा करा लाना। थोड़े दिनोंमें तुम्हारे पास बहुतसे रुपये हो जावेगे, तुम अमीर कहलाने लगोगे। बच्चेको शौक बढता जायगा और वह हररोज अपने जेबखर्चमेसे कुछ न कुछ बचाता रहेगा। इससे न केवल रुपया ही जमा होगा, किंतु उसे मितव्ययता और संचयशीलताका अभ्यास भी हो जायगा। वह सदा अपने जीवनमें सुखी रहेगा। कभी फिजूलखर्चीके कारण तकलीफ न उठायगा। फिजूलखर्च प्रायः वे ही होते है जिन्हे बाल्यावस्थामे रुपया जमा करनेका अभ्यास नहीं कराया जाता। इसका अभ्यास करानेके लिए सेविंग बेक बड़े उपयोगी है।

हम समझते है, सेविंग बेंकके बारेमे इतना कह देना काफी है कि सरकारने यह बेक और बेकोंकी तरह अपने लाभके लिए नहीं खोला है, किंतु केवल हमारे लाभके लिए जारी कर रक्खा है। हमारा कर्तव्य है कि यदि हम अपना भला चाहते है, अपनेको संसारमें सुखी रहना चाहते है तो हमे जरूर कुछ न कुछ बचाना चाहिए। बिना बचाये हमारी स्थिति कभी ठीक नहीं रह सकती। इसकी कुछ परवा नहीं कि कितना बचाया जाय। जितना हम आसानीसे बचा सके उतना ही काफी है। थोड़ा थोडा बहुत हो जाता है। एक एक बूँदसे घड़ा भर जाता है। आधा पैसा रोज बचानेसे चार

आने महीना बचता है। चार आनेकी शक्ति कुछ कम नहीं है। एक खोमचेवाला चार आनेका माल लगाकर उससे चार आने कमाता है; दो आने खाता है, दो आने मूलमे जमा करता है। दूसरे रोज छह आने लगाकर छह आने कमाता है। इस तरह उसकी पूँजी दिन दिन बढती जाती है। थोड़े ही दिनोमे वह अमीर बन जाता है। बंगालमें एक 'अधेली बाबू' हुए है। उन्होंने पैसा पैसा जमा करके एक अधेली अर्थात् आठ आने जमा किये और उन आठ आनोसे वे व्यवसाय करने लगे। वे धीरे धीरे व्यवसायकी शिक्षा, मितव्यय और संचयके ऊपर ध्यान रख कर छोटे छोटे व्यवसायसे उन्नति करते करते भारी बनज-व्यवहार करने लगे और थोड़े ही दिनोमे अतुल्य ऐश्वर्यके अधिकारी हो गये। इससे प्रकट है कि अधेलीकी भी शक्ति साधारण नहीं है। जो मनुष्य एक एक पैसा जमा करके अधेली तक पहुँचेगा, समझना चाहिए कि उसने संचयकी आधी शिक्षाको प्राप्त कर लिया।

अतएव हमे भी मितव्ययी और संचयशील होना जरूरी है। मितव्ययी और संचयी पुरुषोके लिए सबसे पहला स्कूल सेविंग बेंक है। सेविंग बेंकसे उत्तीर्ण होकर हम बड़े बड़े बेको और कार्यालयोंमे प्रवेश पा सकते है और अतुल्य लक्ष्मीके धनी हो सकते है।

इंग्लैंडमे जब कुछ देशहितैषी परोपकारी पुरुषोने गरीबोंकी शोचनीय दशा पर तरस खाकर सेविंग बेक स्थापित किये थे, तब उन्हे बड़े बड़े कष्ट उठाने पड़े थे; अनेक आपत्तियोका सामना करना पड़ा था। परंतु हमारा अहोभाग्य है कि अब स्वयं सरकारने हमारे लिए स्थान स्थान पर इस प्रकारके बेक खोल रक्खे है जिनमे हर तरहका सुभीता है। हमारे बहुतसे भाइयोका इनमें पहलेसे ही हिसाब होगा। जिनका नहीं है उनसे हम अनुरोध करते है कि वे बिना किसी बिलम्बके

अपना हिसाब खोल दें। इससे साधारण स्थितिके लोगोको बड़ा लाभ पहुँचेगा। थोड़े ही दिनोमें उन्हें मालूम हो जायगा कि हमारा बहुतसा रुपया जो यों ही फिजूलखर्चीमें बर्बाद हो जाता था सेविंग बेंकमे सुरक्षित मौजूद है।

गरज यह कि ये बेंक हमारे लिए बडे ही उपयोगी है। हमें इनकी कदर करनी चाहिए और इनसे यथासाध्य लाभ उठाना चाहिए।

नवाँ अध्याय।

छोटी छोटी चीजें।

(विद्वानोके वाक्य।)

इस बातको याद रक्खो कि कहाँ खर्च करना चाहिए, कहाँ बचाना चाहिए और कब किस चीजको खरीदना चाहिए। ऐसा करनेसे तुम कभी भूखे न रहोगे।

जो मनुष्य छोटी छोटी चीजोको तुच्छ दृष्टिसे देखता है उसका धीरे धीरे सर्वनाश हो जायगा।

यदि तुम चाहते हो कि तुमको सच्चा सुख प्राप्त हो तो सदा छोटी छोटी चीजोंकी रक्षा करो।

संसारमे छोटी छोटी चीजोकी बेपरवाही करनेसे हजारो आदमी बर्बाद हो गये और होते जाते है। ससार छोटे छोटे परमाणुओसे बना हुआ है। हमारा जीवन जरा जरासी घटनाओका समूह है। यदि इनमेसे एक एक पर विचार करे तो वे बहुत ही तुच्छ और अनावश्यक मालूम होती है, परंतु प्रत्येक मनुष्यकी सफलता इन्हीं जरा जरा सी घटनाओ पर निर्भर है। हम किस तरह रहते है और किस प्रकार

इन घटनाओंका सामना करते है, बस इन्हीं वातो पर हमारा सुख अवलम्बित है । चरित्रगठनके लिए छोटी छोटी चीजे बड़ी जरूरी है । छोटी छोटी आदतोंके सुधारनेसे ही हमारा आचरण शुद्ध होता है और छोटे छोटे कामोंके करनेसे ही हमारा जीवन सुधारता है । व्यापारमें वृद्धि उसी समय होगी जव हम छोटी छोटी चीजोकी परवा करेंगे । घरमें आराम तभी मिलेगा जव हम छोटी छोटी चीजोको नियमसे रक्खेगे और वक्त पर तैयार रक्खेगे । राज्यमे उसी समय उन्नति होगी और वही राज्य उत्तम राज्य कहला सकेगा जव उसमें छोटेसे छोटे काम पर भी पूरा पूरा ध्यान दिया जायगा ।

एक एक अक्षर सीखनेसे ही ज्ञान वढता है। जितने वड़े वड़े विद्वान् हुए और है उन्होंने एक दिन किसी न किसी भापाकी वर्णमालाका पहला अक्षर पढा था। आज जो प्रसिद्ध अनुभवी कहलाते है, एक दिन उन्होने अनुभव प्राप्त करनेकी पहली सीढी पर पैर रक्खा था । धीरे धीरे उनका ज्ञान और अनुभव वढता गया । यदि वे एक एक अक्षर न सीखते, उनको तुच्छ समझ कर छोड़ देते तो कदापि आज अनुभवी विद्वान् न कहलाते । जरा जरा सी वातोकी कदर करनेसे ही आज वे इस योग्य हुए ।

जो मनुष्य कुछ नहीं सीखते अथवा कुछ जमा नहीं करते वे इसी कारणसे गिरे रहते है कि उन्होंने छोटी छोटी चीजों पर ध्यान नहीं दिया । वे प्रायः कहा करते है कि क्या करे, संसार हमारे विरुद्ध है, परन्तु वास्तवमें संसार उनके विरुद्ध क्या होगा वे स्वय अपने शत्रु है ।

अवतक दैव पर लोगोंकी वहुत ही अंधश्रद्धा थी । परन्तु अव ज्ञानके प्रकाशसे यह कुछ कुछ हटती जाती है । अव यह विचार होता जाता है कि परिश्रम ही दैवका जनक या पिता है, अर्थात् जितना

मनुष्य श्रम और पुरुषार्थ करेगा तथा छोटी छोटी चीजोंकी ओर ध्यान देगा उतना ही वह सफलताको प्राप्त कर लेगा। "उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः।" निरुद्यमी आलसी पुरुष कभी सफल नहीं हो सकता। जो मेहनत नहीं करता वह कभी लाभ नहीं उठा सकता।

मानवजीवनकी सफलताके लिए दैवकी अवश्यकता नहीं, किंतु श्रमकी आवश्यकता है। दैव सदा वाट देखा करता है और चाहा करता है कि ऐसा हो जाय; परन्तु श्रम जिस कामको करना चाहता है तत्काल उसे दृढ़ संकल्पद्वारा कर डालता है। दैव दो पहरतक पलंग पर पड़ा डाककी जोहमे रहता है—शायद अमुक लाटरीमें मेरा नाम निकल आवे, परंतु श्रम सवेरा होते ही अपने कार्यमें लग जाता है और शामतक अपने निर्वाहके योग्य पैदा कर लेता है। वह अवसर ढूंढ़ा करता है और यह अपने बाहुबल पर खड़ा होता है। वह पीछे और नीचे गिरता है और यह आगे और ऊँचे बढ़ता है।

घरमे वहुतसी छोटी छोटी चीजे होती है। सुख और स्वास्थ्यके लिए उनकी ओर ध्यान देना वड़ा जरूरी है। स्वास्थ्यके लिए सफाई एक मुख्य चीज है। सफाईकी जरूरत वड़ी चीजोंमे उतनी नहीं होती जितनी छोटी चीजोमे होती है। फर्श साफ रखना, कपड़े वर्तन साफ रखना, दीवारो पर गर्द मिट्टी न चढ़ने देना, जाला न लगने देना, नाली साफ रखना, किसी जगह पानी जमा न होने देना, इधर उधर मैला कुचैला न डालना, देखनेमें ये वातें वहुत ही छोटी छोटी मालूम होती है; परन्तु स्वास्थ्य पर इनका वड़ा असर पड़ता है। इनका खयाल रखनेसे वीमारी दूरसे ही भाग जाती है और मन पवित्र रहता है। मनका शरीर और वाह्य पदार्थोंसे घनिष्ठ सम्वन्ध है। जो मनुष्य गंदा रहता है, जिसके घरमे सफाई नहीं होती, उसका मन भी मैला रहता

है। उसके हृदयमें उच्च विचार उत्पन्न नहीं होते। जो हवा हमारे मकानोंमें चलती है वह बहुत ही छोटी चीज माळूम होती है, क्योंकि न हम उसको देख सकते हैं और न उसके विषयमें अधिक जानते हैं; परंतु यदि हमारे मकानोंमें काफी साफ हवा न आवे तो हमें अपनी मूर्खता और असावधानीके कारण जरूर तकलीफ उठानी पड़ेगी। जरासा कूड़ा करकट भले ही माळूम न हो, हमारे मकानोंकी खिड़कियाँ चाहे बंद रहें या खुलीं इसमें कोई भेद भले ही माळूम न हो, परन्तु इनका बहुत ही बुरा परिणाम होता है। कूडे करकटसे अथवा ताजी हवाके न आनेसे बुखारको घरमें आते देर नहीं लगती और एक दफा आने पर उससे पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जाता है। इस कारण जरासी बदबू अथवा जरासी खराब हवा भी बड़ी हानिकर है। गरज यह कि घरमें जितने काम होते हैं, यद्यपि वे सब छोटे छोटे माळूम होते हैं, परन्तु उनका परिणाम बहुत बड़ा होता है। अतएव उनकी ओर हमारा पूरा पूरा ध्यान होना बहुत ही जरूरी है।

पिन कितनी छोटी चीज है परन्तु यदि वह ठीक तौरसे न लगाई जाय तो उससे लगानेवालेकी मूर्खता और फूहड़पन माळूम हो जायगा। ऐसे मनुष्यकी कभी इज्जत नहीं हो सकती। एक पुरुषका विवाह होनेवाला था। एक दिन उसने अपनी होनहार स्त्रीको बाल खोले हुए और बिना पिन लगाये हुए अपने कमरेमें घुसते देख लिया। बस, उसी दिनसे उसके दिलमें यह बात जम गई कि यह स्त्री बड़ी बेपरवाह है—उसका छोटी छोटी चीजोंकी तरफ ख्याल नहीं है। इससे विवाह करना कदापि उचित नहीं है।

उसने सबको एक ही समय पर अपनी दूकान पर बुलाया और हर एकको एक एक पैसेकी नमककी पुडिया बनानेको कहा। जब सब बना चुके, तो सौदागरने तमाम पैकटोंको अपनी मेज पर रक्खा और उनमेसे उस आदमीको पसंद किया जिसने सबसे उमदा पैकट बनाया था। उसने इस जरासे कामसे ही उनकी योग्यताका पता लगा लिया।

छोटी छोटी चीजोकी बेपरवाहीसे बड़ी बड़ी हानियाँ हो चुकी है और बड़े बड़े काम फेल हो गये है। जहाजकी तलीमे जरासा छेद होजानेसे पानी उसमें भर जाता है और लाखों रुपयेका जहाज दमके दममे डूब जाता है। अँगरेजी कहावत है कि घोडेके पैरमे नालके न होनेसे उसका पैर टूट गया, पैर टूटनेसे घोड़ा गिर पड़ा, घोड़ेके गिरनेसे सरदार गिर गया, सरदारके गिरते ही शत्रुने उसको पकड़ लिया और मार डाला, सरदारके मारे जानेसे सारी सेना तितर बितर हो गई। देखिए जरासी लोहेकी नालके न होनेसे कितनी बड़ी हानि हुई!

इसके सिवाय प्रायः लोग कहा करते है कि अजी रहने भी दीजिए, यह ही काफी होगा, क्यों फिजूल झगड़ेमे पड़ते हो। उनका यह कहना बड़ा हानिकर है। ऐसा कहनेसे कितने ही घर जलकर राख हो गये, कितने ही आदमी बिगड गये, कितने ही जहाज डूब गये—जिनकी कोई संख्या नहीं। ऐसा कहना सरासर भूल है। यह असफलताका मूल कारण है। हमको चाहिए कि 'इससे काम चल जायगा' ऐसे शब्द कभी न कहे। इस बातकी कोशिश करें कि वही काम करे जो सबसे उत्तम और उपयोगी हो।

हमारा जरासा आलस हमारे सारे कामको बिगाड़ देता है। कभी कभी जरासी बेपरवाहीके कारण हमे सैकड़ो रुपयोका घाटा उठाना पड़ता है। हमारे साथ बोर्डिंगमे एक महाशय रहा करते थे। वे सदा

इस बातकी शिकायत किया करते थे कि हमारे कमरेमेसे न जाने कौन हमारी चीजे चुरा ले जाता है। उन्होने बहुत कुछ खोज की, परन्तु कुछ भी पता नहीं चला। सबने उन्हे यह सलाह दी कि तुम एक बड़ा लोहेका संदूक लाकर उसमे अपना सारा जरूरी सामान रक्खा करो। बेचारोने उसी रोज १०) रु० की लागतका एक सन्दूक मँगाया। यह तो किया मगर उसके लिए एक रुपयेका ताला मँगानेका आलस कर ही गये। नतीजा यह हुआ कि उसी चोरने मौका पाकर उनका माल फिर निकाल लिया। उनके जरासे आलसने देखिए कितना नुकसान पहुँचाया! इसी तरह बहुतसे लोग चाबियोंको बेपरवाहीसे इधर उधर डाल देते है और जब कोई नौकर वगैरह मौका देखकर उनका माल निकाल भागता है तो हाथ मल मल कर पछताते है।

हमारे जीवनमे प्रतिदिन ही ऐसी घटनाये हुआ करती है। जिस घरमें छोटी छोटी चीजोकी कदर नहीं की जाती—उनको सावधानीसे नियत स्थान पर सुरक्षित नहीं रक्खा जाता, समझ लो कि उस घरका अन्त आनेवाला है। धनवान् वही हो सकता है जो परिश्रमी है। परिश्रमी पुरुप कभी किसी चीजकी बेकदरी नहीं करता। छोटी छोटी चीजोंकी भी पूरी पूरी रक्षा करता है।

देखनेमें कोई चीज कितनी ही छोटी क्यों न हो, परन्तु उसकी ओर हमें उतना ही ध्यान देना जरूरी है जितना बड़ी चीजकी तरफ। उदाहरणके लिए एक पैसेको लीजिए। देखनेमें यह एक जरासे ताँबेका टुकड़ा है परंतु यह कितना उपयोगी है, कितनी चीजें इससे खरीद सकते है और इसको ठीक तौरसे खर्च करनेसे हमे कितना आनंद प्राप्त हो सकता है। एक एक पैसेसे रुपया हो जाता है। यदि हम पैसोंकी बेकदरी करें, एक इधर एक उधर फेंक दें, एककी सिगरेट पी ले

एककी जरासी शराब चख ले, तो हमारी सारी आमदनी यो ही उड़ जायगी। परंतु यदि हम एक एक पैसेको उचित रीतिसे खर्च करे— कुछको सेविंग बेकमे जमा करें, और कुछको बीमा कम्पनीमे लगावे तो बिना किसी कठिनाईके हमारी सब जरूरते पूरी हो जायँगी और हमको किसी प्रकारकी चिन्ता न होगी।

थोड़ा थोड़ा बचानेसे बहुत जमा हो जाता है। दाने दानेसे ढेर हो जाता है। एक एक तिनकेसे गट्ठा बन जाता है। पैसे पैसेसे रुपया हो जाता है। एक एक पैसा बचानेसे रुपये बच जाते है। रुपयेसे सुख, शान्ति, और स्वतंत्रता प्राप्त होती है, परंतु स्मरण रहे कि पैसा ईमानदारीसे कमाना चाहिए। ईमानदारीका कमाया हुआ एक पैसा दूसरेके दिये हुए रुपयेसे अच्छा है।

जो आदमी पैसेका उपयोग नहीं जानता वह सदा दूसरोका मुँह ताकता रहता है। उसकी स्त्री और बच्चे टुकड़े टुकड़ेको तरसते रहते है। परन्तु जो पैसेको उत्तम रीतिसे खर्च करता है, वह सदा आनंदमे मग्न रहता है। उसकी स्त्री और बच्चे अच्छा खाते, अच्छा पहनते और अच्छी शिक्षा पाते है। वे कभी भूख, प्यास और गर्मी सर्दीके दुःख नहीं सहते। अचानक आपत्तिके समय वह कभी भयभीत नहीं होता। नौकरी छूट जाय अथवा बीमारी आजाय तो वह व्याकुल नहीं होता।

अतएव पैसा देखनेमें चाहे जरासा मालूम हो, परन्तु उसकी शक्ति बहुत जियादह है। पैसोकी रक्षा करनेसे रुपयेकी रक्षा होती है। इंग्लैण्डमें ऐसी अनेक सोसायटियाँ है कि जिनमें केवल एक पैसा प्रति दिन जमा करनेसे बड़ी बड़ी रकमे मिलती है। जैसे यदि कोई आदमी जिसकी उम्र २० वर्षकी है ६० वर्षकी अवस्था तक एक एक पैसा प्रति दिन जमा करता रहे, तो उसके मरने पर उसके कुटुम्बियोको २००

रु० के लगभग मिल जायँगे चाहे वह कल ही क्यों न मर जाय। जिसकी आयु १५ वर्षकी हो यदि वह जीवन पर्यंत एक पैसा दिया करे तो उसके मरने पर उसकी औलादको ४०० रु० मिल जायँगे। यदि कोई आदमी अपने बच्चेके पैदा होनेके दिनसे एक पैसा रोज दिया करे तो १४ वे वर्षमे उसे ८५ रु० मिल जायँगे।

यदि कोई आदमी अपने बच्चेके पैदा होनेके दिनसे एक आना रोज दिया करे तो २१ वर्षकी उमरमें उसे ६८५) रु० मिल जायँगे। यदि कोई व्यक्ति—चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष—२५ वर्षकी उमरसे एक आना दिया करे तो जीवनपर्यंत जब कभी बीमार पड़ेगा, उसे बीमारीकी हालतमे १) रोज मिलता रहेगा।

पैसेमे इतनी शक्ति है। देखिए, एक एक पैसेसे 'सहायक फंड' कितना काम कर रहे है। एक एक पैसा लेकर सैकड़ों रु० देते है, फिर भी खूब लाभ उठाते है। भारतवर्षमें भी ऐसे फंडोंके खुलनेकी जरूरत है।

पैसेकी तरह ही मिनिट और सेकंडको समझो; एक सेकंड भी कभी व्यर्थ न खोओ। जरूरतके वक्त एक सेकंड ही बड़ा काम देता है। जरा उस वक्तका अनुमान करो कि जब तुम्हें कहीं रेलमें बैठ कर जाना है और तुम उस समय स्टेशन पर पहुँचते हो; जब गाड़ीने सीटी दे दी और हरी झंडी दिखला दी है। बस, एक सेकंडमें गाड़ी चलनेवाली है। यदि उस समय एक सेकंडकी देर करते हो तो तुम गाड़ीमें नहीं बैठ सकते। समय बड़ा अमूल्य है। जो समय नष्ट हो जाता है वह कभी फिर नहीं आसकता। क्या पैसा और क्या सेकंड संसारमें कोई वस्तु भी व्यर्थ नहीं है। छोटीसे छोटी चीज भी कामकी है। चाहे कितनी ही छोटी चीज हो परन्तु जरूरतके वक्त [illegible]

न होनेसे बड़ी तकलीफ होती है। मान लो कि हमारे गलेका बटन टूट गया। हमको कचहरी जाना है। परन्तु हमको सुई नहीं मिलती। न जाने हमने उसे कहाँ रख दी है। देखिए, सुई कितनी जरासी चीज है। परन्तु इसके भी न होनेसे ऐसे वक्तमे कितनी तकलीफ होती है। अथवा हमने दियासलाईको कहीं बेपरवाहीसे रख दी। आधीरातको जब सब सो रहे है, हमे कुछ डर मालूम हुआ। परन्तु दियासलाईके न होनेसे हम लेम्प नहीं जला सकते। इस वक्त रुपये काम नहीं आसकते। क्योंकि बाजार बंद है, सब जगह अँधेरा हो रहा है, हर कोई सो रहा है। विना दियासलाईके लेम्प नहीं जल सकता; परन्तु दियासलाई मिलती नहीं। इस समयके कष्टका कोई पार नहीं। यदि एक रुपयेमे भी एक सलाई मिल जाय, तो हम सहर्ष ले लें।

अतएव हमे किसी चीजको भी तुच्छ न समझना चाहिए। प्रत्येकको सावधनीसे नियत स्थान पर रखना चाहिए और उसका सदुपयोग करना चाहिए।

दसवाँ अध्याय।
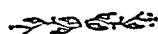
स्वामी और सेवक।

(विद्वानोंके वाक्य।)

श्रमसे धन उत्पन्न होता है, मितव्ययसे बढता है और सावधानीसे सुरक्षित रहता है। जो मनुष्य अपने कार्यको श्रमसे करता है, किंतु सावधानीसे नहीं करता वह एक हाथसे कमाता है और दूसरे हाथसे फेंक देता है।

धनसंचय करना हमारे अधिकारमें है। हमारी आमदनी इतनी अधिक अवश्य है कि यदि हम बुद्धिपूर्वक व्यय करें और संयमका अभ्यास करें तो बहुत जल्द धनवान् बन सकते हैं।

कभी कठिनसे कठिन मार्गद्वारा ही सफलता प्राप्त होती है।

*　　*　　*

स्वामी अपने सेवकोंकी बुरी आदतोंको बहुत कुछ सुधार सकता है। उनमे दूरदर्शिता और मितव्ययता पैदा कर सकता है। यद्यपि मजूर कारीगर यह नहीं चाहते कि कोई उनका संरक्षक हो, परन्तु यदि उनकी कोई सहायता करे तो इसमें उन्हें कोई शंका भी नहीं होती। यह हम पिछले अध्यायोंमें दिखला ही चुके हैं कि पृथक् पृथक् व्यक्ति भी बहुत कुछ कर सकते हैं। मितव्ययताका अभ्यास करके अपनी आमदनीमेसे थोड़ा थोड़ा जरूरतके लिए बचा सकते हैं, परन्तु ऐसा करनेके लिए उन्हें उत्साह, सहायता और सहानुभूतिकी आवश्यकता है।

यह मालिकोंका काम है कि वे अपने नौकरोंकी बढती और लाभका सदैव खयाल रक्खें और उनके साथ जहाँ तक हो सके प्रेम और सहानुभूतिका व्यवहार करे। इसमें उनका खर्च कुछ नहीं होता, किंतु लाभ बहुत जियादह होता है। जिस नौकरके साथ इस प्रकारका वर्ताव किया जाता है वह अपने मालिकके लिए प्राण तक देनेके लिए तैयार रहता है।

नौकर प्रायः कमसमझ हुआ करते हैं। शिक्षाके अभावमे उनमें विचारशक्ति नहीं होती, वे अपने हानि लाभको नहीं देख सकते। जहाँ चाहे खर्च कर डालते हैं। मालिकको चाहिए कि सदा इस बातका खयाल रक्खे कि मेरा नौकर सिगरेट तो नहीं पीता, शराबकी भट्टीपर तो नहीं जाता, इधर उधर वाहियात तो नहीं फिरता और फिजूल खर्च

तो नहीं करता । यदि वह ऐसा करता है तो उसे इस तरह मना करना चाहिए कि जिससे उसके अंतरंगमें मालिककी ओरसे भय अथवा अरुचि पैदा न हो जाय, किंतु प्रेम तथा प्रतिष्ठाका अंकुर जम जाय। उन्हे संयम और दूरदर्शिताका अभ्यास करानेके लिए उनके लिए सेविंग बेक और उनके बच्चोंके लिए पैसाबेक खोलने चाहिए, संशोधक सभाये स्थापित करनी चाहिए और समय समय पर लेखों और व्याख्यानोद्वारा उनको रुपयेका सदुपयोग बतलाना चाहिए, जिससे वे अपनी मजूरीको व्यर्थ न खो दे। जिस कारखानेका मालिक नोकरोके साथ ऐसा वर्ताव करता है, उसका कारखाना सदा उन्नति करता जाता है। क्योकि कारखानेकी उन्नति नौकरोके हाथमे होती है। उस कारखानेके नौकर औरोकी अपेक्षा कम मजूरी लेते है और अधिक काम करते है। उनको अपने मालिकसे एक तरहका प्रेम हो जाता है और वे कारखानेको अपना निजी काम समझने लगते है। उनमे कमी हड़ताल वगैरहका नाम भी सुनाई नहीं देता।

इग्लैड आदि देशोमे ऐसे अनेक उदाहरण मिलेगे, परन्तु भारतवर्षमे इस समय ऐसे उदाहरणोंकी बहुत कमी है। यहाँ स्वामी और सेवकका कोई सम्बन्ध ही नहीं मालूम होता। स्वामीको अपनी धुन है, सेवकको अपनी लगन है। न स्वामीको सेवकसे सहानुभूति है और न सेवकको स्वामीसे प्रेम या प्रीति है। हरएकको अपनी फिक्र है। मालिक चाहता है कि जितना हो सके और जबतक हो सके इससे काम ले लूँ—चार पैसेका काम एक पैसेमे करा लूँ। नौकर चाहता है कि जितनी जल्दी हो सके इसकी बेगारसे अपना पीछा छुड़ा लूँ और एक पैसेकी मजूरीके चार पैसे ले लूँ। चाहे नौकर भूखके मारे मर रहा हो, उसे खाँसी जुकाम बुखार हो रहा हो,

परन्तु मालिक उसे छोड़ना नहीं चाहता । और चाहे कितना ही जरूरी काम क्यो न हो, नौकर उसे करना नहीं चाहता । गरज यह कि यहाँ मालिक और नौकरके बीचमे कोई सम्बन्ध नहीं । इस सम्बन्धके न होनेसे हमारे कार्योंमे बड़ी बाधा पहुँचती है । हर रोज नये नये झगड़े देखनेमे आते है । स्वामी सेवकका सम्बन्ध केवल रुपयेका ही न होना चाहिए, दोनोमे पारस्परिक प्रेम और सहानुभूति होना जरूरी है। अपने कुटुम्बियोसे प्यार करो, अपने पड़ेसियोसे प्यार करो, अपने जातिवालोसे प्यार करो, अपने देशवासियोसे प्यार करो, मनुष्य मात्रसे प्यार करो और प्राणी मात्रसे प्यार करो। इस तरह हमे क्रम क्रमसे प्यारकी सामीको बढ़ाना चाहिए।

नौकर चाहे कितने ही उद्दंड हो पर वे मालिकके अधीन होते है; मालिकका उन पर बहुत कुछ अधिकार होता है। मालिकका काम है कि जहॉ तक हो सके उनका सुधार करे । सदा उनके अभीष्ट पर दृष्टि रक्खें। इंग्लैडमे बहुतसी कम्पनियोंने अपने नौकरोके लिए रातके स्कूल, दिनके स्कूल, पुस्तकालय, औषधालय, बेक आदि खोल रक्खे है और उनके रहनेके लिए वहीं कारखानोंके पास ही मकान बना दिये है । एक कम्पनीमे काम करनेवाले सब लोग प्रायः एक जगह रहते है और वहीं एक गॉंव सा बसा लेते है । उनकी जरूरतोको पूरा करनेके लिए हरएक चीजकी दूकाने खोल दी गई है जिनसे उन्हे लागतके दाम पर शहरसे कहीं सस्ता और अच्छा माल मिलता है। वहॉके रहनेवालोमे धीरे धीरे आपसमे खान–पान और विवाहसम्बन्ध भी हो जाते है और वे सदा दुःख–सुखमे एक दूसरेको सहायता करते है ।

भारतमें भी रेलवे कम्पनियाँ अपने आदमियोके साथ प्रायः ऐसा ही व्यवहार करती है । हरएक स्टेशन पर रहनेके मकान बने होते है

स्थान स्थान पर रेलवे अस्पताल खुले है, जहाँ बिना किसी फीसके इलाज किया जाता है और दवाई भी विना मूल्य दी जाती है। कम्पनीकी ओरसे प्रावीडेट फंड होता है जिसमे समस्त कर्मचरियोंका रुपया धीरे धीरे जमा होता है। बड़े बड़े शहरोंमे रेलवे स्कूल भी खुले हुए है। रेलवे कम्पनियोके समान अन्य कम्पानियोको भी अपने आदमियोका खयाल रखना चाहिए और जहॉ तक बन सके उनकी शारीरिक, मानासिक और आत्मिक शक्तियोको बढाते रहना चाहिए। जिन कारखानोंमे केवल शारीरिक काम लिया जाता है उनके स्वामियोंको चाहिए कि अपने सेवकोंके लिए रातकी पाठशाला और पुस्तकालय भी खोल दे, तथा समय समय पर उनके लिए व्याख्यानोंका भी प्रबन्ध कर दे कि जिससे उन्हें मानसिक और आत्मिक उन्नति करनेका भी अवसर मिले। इसी तरह पृथक् पृथक् व्यक्तिको अपने अपने नौकरकी भी दशा सुधारनी योग्य है। बहुधा देखनेमें आता है कि हमारे घरोमें जो नौकर काम करते है उनमे चुरट पीने, झूठ बोलने, मैला रहने और चोरी करनेकी बुरी आदते होती है। उनकी देखादेखी हमारे बालक भी बिगड़ जाते है। यदि हमें नौकरोंकी भलाईका खयाल न हो तो न सही, परन्तु अपने बालकोकी भलाईका खयाल तो अवश्य होना चाहिए। इसी खयालसे ही उनकी बुरी आदतोंको छुड़ाना चाहिए। इसके अतिरिक्त उनको कुछ शिक्षा भी देनी जरूरी है। इसके लिए सबसे अच्छा उपाय यह है कि एक मोहल्लेके आदमी मिलकर उनके किए रातका स्कूल खोल दे जिसमे उनको एक एक दो दो घटे रोज पढाया जाय। धीरे धीरे वे पढना लिखना सीख जायँगे और बहुत कुछ उन्नति कर सकेंगे। उनके वेतनमेसे एक आना रुपया काटकर तथा आध आना रुपया अपने पाससे मिलाकर किसी बेंकमे उनके

नामसे अपनी मार्फत जमा करते रहना चाहिए। जब उनके पास थोड़ासा रुपया जमा हो जाय, तब वह किसी व्यापार आदिमे लगा दिया जाय, अथवा उससे किसी कम्पनीका एकाध हिस्सा खरीदवा दिया जाय। ऐसा करनेसे उनकी पूँजा धीरे धीरे बढती जायगी और उनकी दशा बहुत कुछ सुधर जायगी। उनके विचार उच्च हो जावेगे और उनसे देशको बड़ा लाभ पहुँचेगा। नौकरोकी दशा सुधारनेके लिए एक बातकी और जरूरत है और वह यह कि उनको घृणाकी दृष्टिसे नहीं देखना चाहिए। यद्यपि वे आपके नौकर है, आपके अधीन है पर इस कारणसे उन्हे तुच्छ समझना ठीक नहीं है। नौकर तो शायद आप भी हो। अंतर केवल इतना है कि आप अधिक वेतन पाते है और वे बेचारे थोड़ा। नौकर होनेकी दृष्टिसे दोनो बराबर है। जिस तरह एक १००) मासिक वेतन पानेवाला बाबू यह पसंद नहीं करता कि उसका अफसर उसे गाली दे, मारे अथवा दिक करे, इसी तरह जिस नौकरको आप ७) रु० मासिक देते है वह भी यह पसंद नहीं कर सकता कि आप उसे 'बे' 'तू' करके बोले अथवा हर समय डाँटे-डपटें और मारे। अपनी जान सबको प्यारी है। आत्मगौरवका विचार प्रत्यक व्यक्तिके हृदयमे होना आवश्यक है। यदि ७) रु० मासिकका नौकर गाली सुनना पसंद नहीं करता तो इससे यह न समझ लेना चाहिए कि वह पाजी अथवा धूर्त है। नहीं, उसे अपनी इज्जतका खयाल है। वह अपनेको और नीच बनाना पसन्द नहीं करता। जब तक यह भाव मनुष्योंके हृदयमे न आयगा वे उन्नति नहीं कर सकते। अतएव यदि आप देशके सच्चे शुभचिन्तक है, और साथमें यह इच्छा रखते है कि आपका काम ठीक ही चलता रहे तो आपको नौकरोंके साथ चाहे वे कितने ही छोटे दर्जेके हों और उनका

वेतन कितना ही न्यून हो उत्तम रीतिसे व्यवहार करना चाहिए। उनके सुख दुखका पूरा पूरा खयाल रखना चाहिए। उनको अपना दास और गुलाम न समझना चाहिए, किंतु अपना सहायक और रक्षक समझना चाहिए। उनको भूलकर भी गाली-गलोज न देना चाहिए। उनकी भूलोको उसी तरह क्षमा करना चाहिए जिस तरह आप अपने अधिकारियोसे अपनी भूलोंकी क्षमाकी आशा रखते है। परन्तु हाँ, यह जरूर है कि उन्हें इतनी स्वतत्रता न दे देनी चाहिए कि जिससे वे मुँहलगा हो जायँ। आवश्यकतासे अधिक किसीसे भी बातचीत नहीं करना चाहिए। फिजूल बातोके करनेसे नौकर तो नौकर घरके आदमी भी खराब हो जाते है और फिर पीछेसे उनका सुधारना कठिन हो जाता है। नौकरोको उनकी जिम्मेदारियोका पूरा पूरा बोध करा दो और उनके हृदयमे इस बातको जमा दो कि आप उनके सच्चे शुभचिंतक है।

ग्यारहवाँ अध्याय।

अपव्यय।

— ० —

(विद्वानोके वाक्य।)

कर्ज कभी मत लो, सदा हिसाबसे खर्च करो।
कर्ज लेकर खर्च करनेसे मनुष्यका गौरव कभी नही बढ़ता।

आयसे अधिक व्यय करनेको अपव्यय कहते है। जितनी आय हो वह सबकी सब खर्च कर देनेको भी अपव्यय कहते है। अमितव्यय, व्यर्थव्यय आदि इसीके पर्यायवाची नाम है। अपव्ययके कारण यह देश

दिनो दिन निर्धन होता जाता है। यह एक ऐसी बुरी आदत है कि इसमे फँस कर लखपतीको भी भिखारी होते देर नहीं लगती। भारतमे केवल धनिक पुरुप ही अपव्ययी नहीं होते, किंतु साधारण स्थितिके मनुष्य भी विवाहादिमें हजारो रुपये कर्ज लेकर खर्च कर डालते है।

जहाँ देखो वहाँ फिजूलखर्चीकी ही चर्चा है। इस फिजूलखर्चीने हजारो घरोका सत्यानाश कर दिया, लाखोंको पैसे पैसेका भिखारी बना दिया। जो कभी सेठ साहूकार कहलाते थे, जिनके घर कभी हाथी घोड़े बँधे थे, जिनकी कभी बँधी बँधती थी और खुली खुलती थी, आज उन्हींकी संतान टुकड़े टुकड़ेको तरसती है और मेरे तुम्हारे आगे हाथ पसारती फिरती है। यह आदत घटती नहीं, दिनो दिन बढ़ती ही जाती है। गाँवके आदमी शहरवालोंकी देखादेखी करते जाते है और फिजूलखर्चीमे ही अपना गौरव समझते है। इंग्लैंड आदि पश्चिमी देशोंमे तो केवल कपड़े और फेशन वगैरहमे ही फिजूलखर्ची होती है, किन्तु भारतवर्षमे जियादहतर विवाह—शादियोमे, उत्सवोमे, मेले—प्रतिष्ठाओमें, जन्म—मरणमें और धनिकोके नानाप्रकारके भोगविलासोमे होती है। गरीबसे गरीब भी अपने बेटे—बेटीकी शादीमे कर्ज लेकर खर्च करना जरूरी समझता है। गाँठमें चाहे कौड़ी न हो और न भविष्यमे होनेकी आशा हो, किन्तु शादीके खर्चके लिए वह जेवर बेच देता है—घर दूकान तक गिरवी रख देता है। इसमे ही वह अपना गौरव समझता है। चाहे कुछ हो, परन्तु भाई बन्धुओं और जाति बिरादरीमे सिर नीचा न हो। अमुक व्यक्तिने अपने लड़केकी शादीमें ५,००० रु० खर्च किये, मुझे भी उतना ही खर्च करना जरूरी है; नहीं तो लोग क्या कहेगे? बिरादरीमे नाक कट जायगी, इस विचारने ही हमको अमितव्ययी बना रक्खा है।

दैनिकचर्यामे भी हमारा सदा यही विचार रहा करता है कि किसी तरह हम दूसरोसे कम न समझे जावे। लोग हमारा उतना ही आदर करे जितना दूसरोंका करते है और हमारे पास उतनी ही इष्ट सामग्री हो जितनी दूसरोंके पास है। इन्हीं वस्तुओंके संग्रह करनेमे हम अपनी सारी आमदनी खर्च कर डालते है। कभी कभी जरासी चीजके लिए भी कर्ज तक लेते नहीं डरते। न जाने हमारे अंदर यह बुरा विचार कबसे पैदा हो गया है कि जैसा दूसरे करें वैसा हम भी करे। यदि हमारा दूसरा भाई घोड़े-गाडी रखता है, बहुतसे नौकर रखता है, बड़े बढिया मकानमे रहता है, प्रतिदिन नये नये कपड़े बदलता है, अच्छे अच्छे खाने खाता है और दूसरोंको खिलाता है तो हमे भी ऐसा ही करना चाहिए-तब ही हमारी बात रहेगी। परन्तु यह कभी नहीं विचारते कि इतना खर्च करनेकी हमारी शक्ति भी है या नहीं; उसकी आमदनीके बराबर हमारी आमदनी भी है या नहीं। दूसरोंके समान हम प्रतिष्ठा पाना तो जरूरी समझते है किन्तु उसके कारणो और साधनो पर कभी विचार नहीं करते।

चाहे हम कितने ही निर्धन हो, चाहे हमारी आमदानी कितनी ही थोड़ी हो, चाहे हम अपनी आमदनीसे कुटुम्बका अच्छी तरह पालन भी न कर सकते हो परन्तु हम संसारमे अपनेको अमीर ही दिखलाना चाहते है। लोग यह कदापि न जानें कि हम गरीब है, इसीको हम अपने जीवनका उद्देश्य समझते है। इस दिखलावेके लिए ही हम कर्ज लेकर विलायती दूकानोंके बने हुए सूट पहनते है, यार-दोस्तोको अच्छे अच्छे खाने खिलाते है और कमी पैदल चलना पसद नहीं करते। परन्तु जब कर्ज बढ जाता है, बाप-दादाका जमा किया हुआ माल खतम हो जाता है, बेकमे पैसा नहीं रहता, घर दूकान दूसरेकी हो

करके किसी रस्मको छोड़ भी देता है, तो जातिवालोकी ओरसे उसका उत्साह बढाया नही जाता है उलटा वह हतोत्साहित किया जाता है। उसका प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूपसे विरोध और अपमान किया जाता है। न उसके यहॉ कोई जाता है और न उसकी किसी प्रकारसे सहायता की जाती है। तमाम जाति उसको कृपण और दरिद्र कहकर पुकारती है। यह देखकर किसीका साहस नही होता कि कोई काम भी प्रचलित प्रथाओके विरुद्ध करे। परंतु यदि विचारपूर्वक देखा जाय, तो यह हमारी निर्बलता और अज्ञानता है। हमको चाहिए कि हम किसीकी परवा न करे। दूसरे लोग हमसे क्या कहेगे इसका विचार तक भी दिलमे न लावे। वे जो चाहे कहे, हमारा कुछ नहीं बिगड़ सकता। यदि वे हमारा साथ नहीं देते तो न सही, परतु हमे कोई काम अपनी बितसे बाहर नहीं करना चाहिए। यह हमारा दृढसंकल्प होना चाहिए। इसमे सदेह नही कि इसके लिए बड़े साहसकी जरूरत है परतु अतमे हमारी ही विजय होगी, इसमे भी कोई सशय नहीं। आज अज्ञानताके कारण लोग हमारा भले ही विरोध करे, परतु थोड़े दिनोके बाद हमारा सत्य सब पर प्रकट हो जायगा और सब कोई हमारा अनुकरण करने लगेगे। पहले हरएक कार्यमे बाधाये आती है, परंतु बादमे सब काम सरल हो जाते है। इतिहास इस बातका साक्षी है। जितने नये नये काम हुए, प्रारम्भमे लोगोने उनका घोर प्रतिकार किया, परन्तु अब सभी उनकी मुक्तकंठसे प्रशसा करते है। केवल साहस और श्रद्धाकी अवश्यकता है।

संसारमे सब मनुष्य एकसे नहीं है। धनवान् भी है, निर्धन भी है, बलवान् भी है, निर्बल भी है। एकसे बढकर एक है। यदि हम दूसरोंका ही अनुकरण करनेमें अपना गौरव समझते है तो कदापि गौरव प्राप्त नहीं कर सकते। गौरव बुरी चीज नहीं है; प्रत्येक मनुष्यका

कर्तव्य है कि गौरव प्राप्त करे। जिस मनुष्यका गौरव नहीं उसका जन्म लेना ही संसारमे निष्फल है। भेद केवल इतना ही है कि हम गौरवके वास्तविक अर्थको नहीं समझते। हमारा विचार है कि अच्छे अच्छे कपड़े पहनने और बढिया बढ़िया मकानोमें फेशनसे रहनेमें ही गौरव है। अँगरेजी लिबास और अँगरेजी ढंगमें रहना तो मानो गौरवकी उच्चतम सीढीपर चढ जाना है। चाहे हमारा आचरण कैसा ही हो, चाहे हम दिनों दिन कर्जके भारसे दबते जाते हो; परंतु हमारी समझमें इन बातोका गौरवसे कोई सम्बन्ध नहीं। गौरव केवल फेशन और स्टाइलमे है। इस अज्ञानताने ही हमारा सत्यनाश कर दिया और यही अब भी करती जाती है।

यह बाहरी फेशन और दिखलावा दिनोदिन बढता जाता है। फ्रांस और इंग्लैड तो पहले ही इन बातोमे प्रसिद्ध थे परंतु अब भारत भी कुछ कम नहीं रहा। उन देशोंमे तो केवल कपड़े वगैरहमे ही फिजूलखर्ची की जाती है, परन्तु भारतमे न केवल कपड़ेमें किंतु जेवरमे भी लाखो रुपया प्रतिदिन नष्ट किया जाता है। चाहे कोई आदमी कितना ही निर्धन हो परन्तु वह भी जेवरको एक प्रकारकी आवश्यक चीज समझता है। प्रमाणके लिए इस देशके गरीबसे गरीब घरको ले लीजिए। अनाज उसमे भले ही न निकले, परन्तु जेवर कुछ न कुछ अवश्य निकलेगा। विवाह–शादियोंमे हजारो रुपये केवल जेवरके लिए ही खर्च किये जाते है। बिना जेवरके विवाह हो ही नहीं सकता। बेटीवाला पहले यह पूछ लेता है कि कितना जेवर चढाओगे, पीछे मँगनी करता है। सैकड़ा पीछे आठ मनुष्य ही ऐसे निकलेगे जिनको अपने बेटे–बेटियोके विवाहमे कुछ कर्ज नहीं लेना पड़ता हैं और दस ऐसे निकलेगे जिनको अपनी जायदाद बेचनी अथवा गिरवी नहीं रखनी पड़ती है। इस तरह लोगोंको जेवरके

लिए कर्ज लेना पड़ता है। फिर सुनारको घडाई देनी पड़ती है। सुनार कभी असली चीज नहीं बनाता, कुछ न कुछ खोट अवश्य मिला देता है। यदि न भी मिलावे, तो भी जेवर दिनो दिन घटता जाता है। पहननेसे घिसता है और रखनेसे खराव होता है। लाभ कुछ नहीं होता, पत्थरकी तरह रक्खा रहता है। यदि कभी बेचा जाय, तो घड़ाई और खोटके अतिरिक्त कम दाममे कम भावसे विकता है। लाभके स्थानमे उलटी हानि होती है और रुपयेका दुरुपयोग होता है। यदि इतना रुपया जेवरमे खर्च न करके किसी व्यापार आदिमे लगाया जाय अथवा बेकमे जमा किया जाय, तो दिनो दिन बढ़ता जायगा और कुछ वर्षोंके वाद दूना होजायगा। इसमे संदेह नहीं कि प्राचीन कालमे जेवर वनवानेकी प्रथा एक उपयोगी सिद्धात पर प्रचलित की गई थी। दुःख आपत्तिके समय—टोटे घाटेमें जेवर बड़ा काम आता था; परतु उन दिनोमे जेवर उसी रुपयेका बनवाया जाता था जो फालतू होता था, जिसकी जरूरत नहीं होती थी। कर्ज लेकर जेवर कभी नहीं बनवाया जाता था। आजकल भी यदि किसीके पास फालतू रुपया हो तो वह जेवर बनवा सकता है। हमें इसमे कोई एतराज नहीं; परंतु कर्ज लेकर जेवर बनवाना सरासर मूर्खता है। जेवर उपयोगी अवश्य है, किन्तु आवश्यक नहीं है।

जिस तरह पेरिसकी स्त्रियाँ उधार लेकर नये नये फेशनके कपड़े बनवाती है, उसी तरह भारतीय स्त्रियाँ अपने पुरुषोको तरह तरहके फेशनके जेवर बनवानेके लिए तग करती रहती है। यदि पुरुष अपनी निर्धनताके कारण उनकी इच्छा पूर्ण नहीं करते, तो मानो घरमे युद्ध खड़ा कर लेते है।

इंग्लैंडमे जब कोई मर जाता है तब बड़ी सज–धजके साथ उसका क्रियाकर्म किया जाता है और सैकड़ो रुपये खर्च कर दिये जाते है। इसी तरह भारतमे जब किसीके पुत्र पैदा होता है अथवा कोई बड़ा आदमी मर जाता है, तब सैकड़ो रुपये नाच तमाशो, नुकतो और ज्योनारोमें खर्च कर दिये जाते है। कहीं कहीं तो ऐसा रिवाज है कि चाहे बूढा मरे चाहे जवान, चाहे छोटा मरे चाहे बड़ा, सब भाइयोको तेरहवीं खिलानी ही पड़ती है। विवाहोमे पैसे पास न होते हुए भी भाजी देनी पड़ती है और दहेजमे सैकड़ो रुपयेका सामान देना पड़ता है। किसी किसी जातिमे जबतक लड़कीवाला हजार पाँचसौ रुपया लड़केवालेको नहीं दे देता विवाह ही नहीं हो सकता।

इन प्रथाओके कारण झूठी नामवरीके खातिर लोगोको लाचार होकर कर्ज लेना पड़ता है, परन्तु यह उनकी निर्बलता है। वे कर्ज लेते डरते नहीं, उनको कर्ज लेते भय नहीं मालूम होता। वे समझते है कि कर्ज लेना अच्छा है परंतु जातिमे अपमानित होना अच्छा नहीं। उनके दिलमे कभी यह विचार नहीं आता कि विवाहादिक कार्यके लिए कर्ज लेना अनुचित है। वे इसको जरूरत समझे हुए है। यही उनकी भूल है। जातिमे जितनी प्रथाये है वे सब मनगढ़ंत है। किसी नियम पर भी स्थिर नहीं है। हम क्यो उनकी नकल करे, यह समझमे नहीं आता। कुछ अमीरोने फिजूलखर्ची करके उनको प्रचलित कर दिया है; हमारा काम है कि हम उन्हे हानिकर समझकर तोड़ दे। इसमे कोई पाप नहीं। यह धर्मके विरुद्ध नहीं। सभ्यता और शिष्टाचारके प्रतिकूल नहीं। भावी जीवनके लिए बाधक नहीं। केवल कुछ लोगोके भयसे वास्तविक गौरवको नष्ट करना, ऋण और चिन्ताका असह्य भार अपने सिर पर उठाना, अपनी स्वतंत्रताका नाश करना

और अपनी संतानको उत्तम शिक्षासे वंचित रखना निरी मूर्खता है। यदि हम किसी विवाहमे १००० रु० खर्च न करके १०० रु० मे ही काम कर ले, सारे शहरके खाते-पीते लोगोको न खिलाकर कुछ अपने इष्ट मित्रो और भूखोको ही खिला दें, जेवर और चमकीले भडकीले रेशमी मखमली कपड़ोमे हजारो रुपये नष्ट न करके साफ और सादे कपड़ो पर ही संतोष कर ले, तो हमे कोई शहरसे नहीं निकाल देगा; न कोई धर्मसे पतित कर सकेगा और न कोई जातिसे बाहर कर देगा। कुछ दिन जातिके मूर्ख लोग भड़भड़ करके रह जायँगे। हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी लड़कीके विवाहमे लड़केवालेसे जेवरका नाम भी न ले, किन्तु उसे यह समझावे कि जेवरमे रुपया लगाना रुपयेको बर्बाद करना है। हमको वे काम करने चाहिए जिनसे रुपया बढे और रुपयेको ऐसे कामोमे लगाना चाहिए कि जो जीवनके लिये आवश्यक हो। जेवर जरूरी चीज कदापि नहीं है। पौष्टिक पदार्थ खाना, साफ सुथरे कपड़े पहनना, स्वच्छ मकानमे रहना, सतानको उत्तम और उच्च शिक्षा दिलाना, रोग, शोक और अकालमृत्यु आदिके लिए रुपया जमा करना और अनाथो विधवाओंकी सहायता करना, ये जीवनकी आवश्यकताये है। पहले इनको पूरा करना हमारा सर्वोपरि कर्तव्य है। यदि इन सबसे रुपया बच जाय और इन सम्बन्धी कोई इच्छा न रहे, तो भले ही हम जेवरमे रुपया खर्च कर दे; परंतु इन सब बातोका विचार न करते हुए कर्ज लेकर जेवरमे रुपया लगाना अथवा और फिजूलखर्ची करना मानो अपनी नींवमे कुल्हाड़ी मारना है।

हमे तो कर्जको सुनकर भय माळूम होता है। इसके नामसे ही डर लगता है। यह वह बला है कि जिसके पीछे एक बार लग जाती है फिर उसको कठिनाईसे छोड़ती है। कर्ज लेना क्या है, अपनी ईमानदा-

रीको बेचना और झूठ और बेईमानीको मोल लेना है। कर्ज वाले सदा वादे किया करते है, परन्तु उन्हे पूरे कभी नहीं कर पाते। वे हरएककी निगाहमें गिर जाते है और सब गौरव खो बैठते ह। उनकी स्वाधीनता नष्ट हो जाती है, मनोबल क्षीण हो जाता है, प्रतिष्ठा जाती रहती है। कोई उन पर विश्वास नहीं करता और किसीके आगे वे मुँह उठाकर बोल नहीं सकते।

अतएव हमें कदापि कर्ज न लेना चाहिए। भूखों मरना अच्छा है; परन्तु कर्ज लेकर पेट भरना अच्छा नहीं। हमारी जितनी आमदनी हो, उसीके अनुसार खर्च करे। आमदनीसे जियादह खर्च करनेका विचार तक भी कभी दिलमे न लावें। कोई चीज चाहे कितनी ही सस्ती मिले, उधार न ले। स्मरण रक्खो, उधारमे तुम्हे कभी कोई भी चीज सस्ती नहीं मिल सकती। दूकानदार इस बातको खयालमें रखता है कि तुम इतने दिनोमे रुपया दोगे, वह उससे दूनी मुद्दतका सूद लगा लेता है। कुछ व्यापारी छह छह महीनेके उधार पर कपड़ा वगैरेह बेचा करते है। लोग खुशी खुशी उनसे माल लेते है और समझते है कि इसमे हमको लाभ रहेगा, पर वे मितव्ययताके नियमोसे अपरिचित है। उन्हे एक रुपयेके मालके तीन रुपये देने पड़ते है। यदि वे अपनेको छह महीनेतक किसी तरह वशमे कर लेवे, तो छह महीनेके बाद वही चीज एक रुपयेमें बाजारसे नकद दाम देकर खरीद सकते है और दो रुपया बचा सकते है। इसके लिए कठिनाई कोई नहीं है, केवल संकल्पकी आवश्यकता है। हम यह संकल्प कर ले कि हम कोई चीज उधार नहीं लेगे, चाहे हमे कोई कितना ही लोभ दे हम उसके लोभमे न आवेंगे और अपने विचार पर जमे रहेगे। यही बात हमे अपनी स्त्री और बच्चोंको समझा देना चाहिए। प्रायः बहुतसी फिजूलखर्चियॉ स्त्रियोंके

आग्रहसे हुआ करती है। यदि स्त्रियोंको हमारी दशाका अच्छी तरह ज्ञान होगा, वे आयव्ययसे परिचित होंगी और साधारण गणित जानती होंगी तो कदापि फिजूलखर्चके लिए जोर न देंगी और न स्वयं करेंगी।

यह बात भी सदा याद रखनी चाहिए कि यदि हमारी आमदनी इतनी थोड़ी है कि हम कोई इच्छित पदार्थ नहीं ले सकते, तो हमे अपनेको वशमे करना चाहिए और इस बातका उद्योग करना चाहिए कि हम उस योग्य हो जावे। हमारे पास इतना रुपया हो जाय कि हम उस पदार्थको ले सके। ऐसा करनेसे अवश्य एक दिन हमारी मनोकामना पूर्ण हो जायगी। मान लो, हमारी आमदनी केवल १०रु० मासिककी है जिसमे हमारा बड़ी मुश्किलसे पूरा पड़ता है। ऐसी दशामे हमको कदापि विवाह न करना चाहिए। जब हम अपना ही निर्वाह इतनी थोड़ी आमदनीमे मुश्किलसे कर पाते है तब अपनी स्त्रीका कैसे कर सकेगे? फिर थोड़े दिनो वाद यदि बच्चे हो गये, तो क्या करेंगे? न उनको खिला सकेंगे, न पढा सकेंगे। परिणाम यह होगा कि वे घर घर भीख मॉगते फिरेंगे, अंतमे चोर और डाकू बनेंगे और कुल जाति और देशको कलंकित करेंगे। यदि हम देखते है कि हमारा लड़का मूर्ख है, कुछ कमाता धरता नहीं, तो हमारा धर्म है कि हम उसका भी कभी विवाह न करें। अभी तो वह स्वयं हम पर और देश पर भार है, उस दशामे उसकी स्त्री भी भारस्वरूप हो जायगी और उस बेचारीका जीवन बड़ा ही दुःखमय हो जायगा। अतएव साराश यह है कि जितनी आमदनी हो उससे कम खर्च करना चाहिए और थोड़ा थोड़ा सदैव बचाते रहना चाहिए। जितनी चादर हो उतने पैर फैलाओ। आमदनीके अनुसार खर्च करो। दूसरोकी रीस करके अथवा रीति-रिवाजोका खयाल करके एक पैसा भी अधिक खर्च न

करो। कोई चीज उधार न लो और पास मौजूद हो उसको सावधानीसे खर्च करो। फिजूल न खोओ।

बारहवाँ अध्याय।
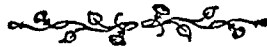
ऋण (कर्ज)।

(विद्वानोंके वाक्य।)

हिसाब रक्खे विना जीवन निरर्थक और दुःखमय है।

ऋण बुरी बला है। यह झूठ, नीचता, कुटिलता, चिंता और मायाचारकी जननी है। प्रतिष्ठितसे प्रतिष्ठित व्यक्तिको भी क्षणभरमे अपमानित कर देना इसका एक साधारण काम है।

" दिवसस्याष्टमे भागे शाक पचति यो गृहे।
अनृणी चाप्रवासी च स वारिचर मोदते॥ "

—महाभारत।

*   *   *   *

जब लोग कर्ज लेते है तब बेचारे यह नहीं जानते कि हम कर्ज लेकर अपनेको किन किन दुःखों और आपत्तियोंमे डालते है। चाहे किसी कामके लिए कर्ज लिया जाय जबतक वह चुकाया नहीं जाता-चक्कीके पाटकी तरह कर्ज लेनेवालेके गलेमे लटका रहता है। एक सेकंडके लिए भी उसको आराम नहीं लेने देता। रातको सोते समय भी भूतकी तरह उसकी छाती पर सवार रहता है। न कभी वह भर पेट भोजन कर पाता है और न कभी अपने बालबच्चोंकी जरूरतोको पूरा कर सकता है। कर्ज क्या लिया मानो अपनेको बंधनमे डाल लिया और सारे घर-गृहस्थीके सुखको खो दिया।

जिनकी आमदनी अच्छी खासी है वे भी प्राय: कर्जके भारसे वर्षों दबे रहते है। न जाने यह कैसा रोग है कि पीछा ही नहीं छोड़ता, और न जाने कैसा भूत है कि चढकर उतरना ही नहीं जानता। क्या तो कोई आगेके लिए बचावे और क्या कोई जान मालका बीमा करावे, इसके मारे चैन तो पड़ती ही नहीं। सूखा-रूखा खाकर और फटा-पुराना पहन कर जो कुछ बचता है, वह सब इसीकी भरतीमे भरा जाता है।

जिनके यहाँ बड़ी बड़ी रियासते और जागीरे है, वे भी प्राय: कर्जके भारसे दु:खी रहते है। किसी बुरी आदत अथवा फिजूलखर्चीके कारण जागीरोको गिरवीं रखकर कर्ज लेते है। मगर जहॉ एक बार कर्ज लिया कि बस फिर उमर भर उससे छुटकारा नहीं पा सकते। कम होनेके स्थानमे कर्ज उलटा दिनो दिन जियादह होता जाता है और थोड़े ही दिनोमे जागीरकी हैसियतसे भी बढ जाता है। इसका परिणाम यही होता है कि जागीरे हाथसे चली जाती है और जो कल बड़े अमीर कहलाते थे, वे आज भिखारी बन जाते है।

इतिहाससे पता लगता है कि बड़े बड़े आदमी भी कर्जदार रहते है। कर्जका बड़ाईसे घना सम्बन्ध है। संसार बडे आदमियो पर भरोसा करता है, इसी कारण उन्हें कर्ज मिल जाता है। यही हाल बडी बडी जातियोका है। उनकी बडाईके कारण उन्हे कर्ज देते कोई नहीं डरता। कर्ज किन्हे नहीं मिलता? जो छोटे है, जिनपर कोई भरोसा नहीं करता। वे जैसे पैदा होते है वैसे ही मर जाते है, उनको कोई जानता भी नहीं। परन्तु कर्जदारोका नाम सारी दुनियामे फैल जाता है। किताबों और समाचारपत्रोमे लिखा जाता है। उनके विषयमे तरह तरहके विचार किये जाते है। सबकी आँख उनपर लगी रहती है, वे

कैसे हैं, उनका स्वास्थ्य कैसा है, सदा ही ये सवाल होते रहते है और यदि वे कभी विदेशमे चले जाते है तो सब कोई उनके लौटनेकी बाट देखा करते है।

संसारकी कैसी अनौखी दशा है। बेचारे कर्ज देनेवालेकी ही आपत्ति है। हर कोई उसे ही कड़ा और कठोर ठहराता है। कर्जदारको सब कोई भला और सीधा कहते है। उसकी दशा पर शोक करते है और उससे सहानुभूति रखते है। जब कोई कर्जदार कर्ज नहीं चुका सकता और लेनदारका उस पर तकाजा होता है, तब कर्जदारसे कोई नहीं कहता कि तूने कर्ज क्यो लिया था, अब जिस तरह हो अदा कर। बेचारे साहूकारको ही सब कहा करते है कि इसको कर्ज क्यों दिया था? अब आधा चौथाई जो कुछ मिले उस ही पर संतोष कर। कर्ज देना बुरा है।

चाहे कुछ हो, लोग चाहे जो कहे, पर असली बातको कोई नहीं मेट सकता। कर्ज लेना बुरा ही नहीं, किंतु घृणा और नीचताका काम है। कर्जदारके घर पर सदा साहूकारका आदमी और दीवानीका चपरासी समन लिये खड़ा रहता है। ज्योंही कोई उसके दर्वाजेको खटखटाता है, त्योंही उसका चेहरा पीला पड़ जाता है। उसके यार दोस्त अब उसकी तरफ देखते भी नहीं और उसके रिस्तेदार उससे बोलते भी नहीं। उसकी सारी आबरू मिट्टीमे मिल जाती है। उसको बाहर जाते शर्म मालूम होती है और घरमे रहते कोई आराम नहीं मिलता। वह मिजाजका कड़वा और चिड़चिड़ा हो जाता है और जीवनका आनंद खो बैठता है। उसे सदा रुपयेकी जरूरत रहती है, परन्तु पिछला कर्ज न चुकानेके कारण कोई एक पैसा भी नहीं देता। वह सदा झूठे हीले और बहाने किया करता है। किसीका उस पर

विश्वास नही रहता। वह अपनी स्वाधीनताको नष्ट कर देता है और उसकी दशा बड़ी ही शोचनीय हो जाती है। वह सदा यह चाहा करता है कि किसी दूसरेसे कर्ज मिल जाय जिससे पहला कर्ज चुका दूँ। ऐसा करनेसे कुछ दिनोंके लिए जान बच जायगी। परंतु कब तक? आज बची तो कल खैर नहीं। एक न एक दिन अवश्य घर-बार नीलाम हो जायँगे और खुदको जेलखानेकी सैर करनी पड़ेगी।

अब सवाल यह है कि जब कर्ज ऐसी बुरी चीज है तब हमें इससे बचनेके लिए क्या करना उचित है और किस तरह हम अपनी स्वाधीनता और प्रतिष्ठाको सुरक्षित रख सकते है। इसका केवल एक उपाय है जो हम पिछले अध्यायमे बता चुके है, अर्थात् हमे अपने वितके अनुसार खर्च करना चाहिए। आमदनीसे एक कौड़ी भी अधिक खर्च करना अनुचित है। परतु इसी बातकी हममे कमी है। हम आमदनीकी कुछ परवा नहीं करते और खर्चका कोई हिसाब नहीं रखते। जितना चाहे उधार लेकर खर्च किये जाते है। झूठी नामवरी और दिखलावेके लिए कितना ही रुपया फिजूल कामोमे बर्बाद कर देते है जिनसे कोई भी लाभ नहीं होता। हम अपनी मूर्खतासे समझते है कि सज-धजसे रहने और लोगोको दावते खिलानेसे नाम होता है। परन्तु एक अँगरेजी कहावत है कि "मूर्ख खिलाया करते है और चतुर खाया करते है।"

हमे कदापि कोई चीज उधार न लेना चाहिए और दूकानदारोको भी कोई चीज उधार न देना चाहिए। उधारको जहाँ तक हो, बंद करना ही उचित है। हरएक चीजके लिए नगद दाम देना चाहिए। जब दाम न होगे तब हम खुद ही कोई चीज न लेगे। उधारमें कुछ ऐसा जादू है कि बिना जरूरतकी चीजें भी ले ली जाती है। यह खयाल

कि 'कौन दाम नकद देना है, फिर दे देंगे,' हमारी बहुतसी फिजूलखर्चियोंका कारण होता है। हरएक चीजको नकद दाम देकर लेनेसे हम सिर्फ वे ही चीजे खरीद सकेगे जिनके विना काम चलता ही नहीं। ऐसा करनेसे कभी तकलीफ नहीं हो सकती।

उधार और कर्ज लेनेकी आदत मूर्ख और निर्धन लोगोमे ही नहीं, उन लोगोंमे भी पाई जाती है जो बड़े विद्वान् और बुद्धिमान् कहलाते है। वे दूसरोको उपदेश देते है किंतु स्वयं उससे उलटा करते है। इतिहास ऐसे उदहारणोसे भरपूर है। विश्वविख्यात उपदेशक बेकनका नाम कौन नहीं जानता? उसके तत्त्व और सिद्धान्त कौन नहीं मानता? परन्तु उसकी जीवनीको सुनकर हृदय काँप उठता है। ऐसा विद्वान् शिक्षक और उपदेशक होने पर भी उसने मितव्ययताका अभ्यास नहीं किया। सदा फिजूलखर्चियोके कारण वह कर्जपर कर्ज लेता गया। कर्ज चुकानेके लिए तथा बढे चढ़े खर्चके लिए उसने अंतमें घूँस तक लेना पसंद कर लिया। परन्तु पाप कभी छिपा नहीं रहता। उसका घूँस लेना किसी तरह उसके शत्रुओं पर प्रकट हो गया। उन्होंने तुरन्त उसको दोषी ठहराकर बड़ा ही लज्जित और अपमानित किया और उसके जीवनको नष्ट-भ्रष्ट कर दिया।

बेचारा बेकन निरा तत्त्ववेत्ता विद्वान् था। हिसाब-किताव और लेन-देनके विषयमे अधिक न जानता था। उससे ऐसी भूल होना कोई अचंभेकी बात नहीं। अचंभा तो मिस्टर पिटका है। यद्यपि मिस्टर पिटने कठिनसे कठिन आपत्तिके समयमे भी राष्ट्रीय धनकी रक्षा की है और उसका यथेष्ट प्रबंध किया है, परंतु वे स्वयं सदा कर्जमे ही फँसे रहते थे। हजारो रुपयेकी आमदनी होते हुए भी वे कर्जसे छुटकारा न पा सके। उनके घरेलू खर्च इतने बढे चढे थे कि एक लाख

रुपया सालनासे भी काम न चलता था। उनके मरने पर छह लाख ६,००,००० रु० कर्ज उनकी तरफसे जातिने चुकाया।

यही दशा लार्ड मेलविल, फाक्स, शेरीडन, बाईरन, कूपर, वेन्स्ट-ग्रीन, पील, मारलो, बेनजानसन, बर्न्स, गोल्डस्मिथ, सर वाल्टर स्काट आदि अनेक बड़े बड़े विद्वानो, लेखको और कवियोकी थी। एक नहीं, दो नहीं, सैकड़ो उदाहरण उनकी असावधानी और फिजूलखर्चीके मिलते है। कर्जदारोंने इनके नाकमे दम कर दिया, तिस पर भी इन्होंने अपनी आदतोको न सुधारा और मरते मरते भी फिजूलखर्चीको न छोड़। हमारे इस देशमे भी ऐसे उदाहरणोकी कमी नहीं।

यद्यपि ऐसे लोगोकी सख्या बहुत अधिक है, परन्तु मितव्ययी पुरुषोका भी सर्वथा अभाव नहीं है। हरएक देश और हरएक कालमे अमितव्ययी पुरुषोके साथ साथ मितव्ययी भी होते रहे है। शेक्सपियरने कभी कर्जका नाम भी नहीं लिया। डाक्टर जानसनका जीवन मितव्ययता और दूरदर्शिताका मानो एक स्पष्ट चित्र था। उसने रुपयेके अभावसे आपत्ति पर आपत्ति झेलना स्वीकार किया, बिना मकानके सड़को पर ही रात बिता देना और भूखा रहना पसंद किया, किन्तु कर्ज लेना गवारा न किया। शुरूसे ही गरीबीने उसको दबा लिया था, परन्तु वह उसकी कोई परवा न करता था। उसको लोग क्या कहेगे, दूसरे कैसे रहते है, ऐसी बातोका उसे कभी स्वप्नमे भी खयाल न होता था। वह अच्छी तरह जानता था कि मनुष्यको कभी अपने वितसे वाहर खर्च न करना चाहिए। इन प्रारम्भिक दुःखोने ही उसके हृदयमे प्रेम और सहानुभूति पैदा कर दी थी। घोर आपत्तिमे भी वह अपनेसे जियादह गरीबोकी सहायता करना अपना मुख्य धर्म समझता था।

कर्जके बारेमे डाक्टर जानसनने एक बार अपने एक मित्रको लिखा था—" भूल कर भी कभी कर्ज न लो। इसको एक कठिनाई ही मत समझो, किंतु एक विपत्ति जानो। सदा अपनी आमदनीसे कम खर्च करो। छोटे छोटे कर्ज छोटी छोटी गोलियोके समान है जो चारों तरफसे तुम पर आ रही है। तुम कदापि इनसे नहीं बच सकते। कही न कहीं तुम्हारे घाव जरूर हो जायगा। बड़े बड़े कर्ज गोलोके समान है जो शोर तो बहुत करते है परंतु हानि उतनी नहीं पहुँचाते। पहले तुम्हें चाहिए कि छोटे छोटे कर्जोंको चुका दो। पीछे शान्तिके साथ बड़ोंको चुकानेकी चिंता करो। यदि तुम शांति और संतोषके साथ रहोगे और कभी आमदनीसे जियादह खर्च न करोगे, तो कभी धोखा न खाओगे। "

प्रत्येक मनुष्यका कर्तव्य है कि वह अपनी आमदनी और खर्चका ठीक ठीक हिसाब रक्खे और महीनेके अंतमें कुछ न कुछ बचाकर आगेके लिए किसी बेंकमे जमा कर दे। लेखकों और कवियोंको यह खास तौरसे याद रखना जरूरी है। यदि वे अंधाधुन्ध खर्च करेंगे, तो कर्जदार हो जायँगे। फिर उनका समाज और कालको उलहना देना किसी मतलबका न होगा। जैसा करेगे, वैसा फल पावेंगे। थेकरेने लिखा है कि " जो कोई अपनी आमदनीसे जियादह खर्च करे और उचापतका रुपया न चुकावे, उसे उसी दम जेलखानेमे भेज देना चाहिए—चाहे वह कोई हो। चाहे वकील हो, चाहे लेखक और चाहे कवि। " थेकरेका यह कथन बहुतोंको बुरा मालूम हुआ होगा, परंतु इसकी सचाईमे तनिक भी सन्देह नहीं है।

लेखकोको यह समझ कर कि हम समाज और देशका उपकार कर रहे है मनमाना खर्च न करना चाहिए। इसमें संदेह नहीं कि समाज

उनका कृतज्ञ है, किंतु यह नहीं हो सकता कि वे सामाजिक अन्याय करते जावे और समाज मौन धारण किये रहे। समाजकी तथा स्वयं अपनी खातिर उनके लिए यह बड़ा ही जरूरी है कि वे आपत्तिकालके लिए कुछ जमा करते जावे। देशको और सर्वश्रेष्ठ पुरुषोको उनकी सहायता अवश्य करनी चाहिए; किंतु सर्वोत्तम यह है कि उन्हे स्वयं अपनी सहायता करनी चाहिए।

तेरहवाँ अध्याय।

—:०:—

धन और दान।

(विद्वानोके वाक्य।)

संसारमे ऐसे बहुतसे आलसी पुरुष हैं जिनको भीखका एक पैसा भी कमाईके एक रुपयेसे अच्छा लगता है।

यदि तुम्हारे पास धन है, परन्तु तुम उसको अच्छी तरह खर्च करना नहीं जानते, तो वह धन तुम्हारे सिर पर एक बोझा है जो मरते समय ही उतरेगा।

बुरी तरहसे पैदा करके दान देनेकी अपेक्षा न देना ही अच्छा है।

* * * *

दानी और दयालु होनेके लिए कमखर्च होना जरूरी है। कम खर्च करनेसे अपनेहीको नहीं किंतु दूसरोको भी बहुत कुछ लाभ पहुँचता है। इसकी ही बदौलत औषधालय, शिक्षालय, अनाथाश्रम और विधवाश्रम आदि सार्वजनिक संस्थाओंकी स्थापना होती है।

यदि रुपया न हो तो दूसरोकी सहायता करना तो एक तरफ रहा, अपना भी निर्वाह नहीं हो सकता। ऐसी दशामें बेचारे अनाथों अपा-

हजों और विधवाओंका मरण ही समझना चाहिए। संसारमें कितने ही प्राणी ऐसे है जिन्हें एक बार भी भर पेट भोजन नहीं मिलता। जिन्हें रहनेको मकान नहीं और पहननेको कपड़ा नहीं। ऐसे लोगोंकी सहायता करना, भूखोंको आहार दान देना, अन्धे, लूले, लँगड़े, भयभीत पुरुषोको अभयदान देना, और अज्ञानियोको ज्ञानदान देना मनुष्यमात्रका धर्म है। जिनके हृदयमे जरा भी प्रेमकी धारा बहती है, जिनको ईश्वरभक्तिमें किंचित् भी अनुराग है, वे कदापि दयालुता और परोपकारतासे मुँह नहीं मोड़ सकते। व्यक्तिकी और समाजकी अपेक्षा प्रत्येक मनुष्यका सर्वोपरि कर्तव्य है कि वह यथाशक्ति दूसरोकी सहायता करे। समाज अनेक व्यक्तियोंका समूह है। समाज तब तक उन्नतिशील नहीं कहला सकता, जबतक उसका पृथक् पृथक् व्यक्ति उन्नति न कर रहा हो। यदि समाजमें एक भी व्यक्ति निर्धन या असहाय है और समाजका उसकी ओर लक्ष्य नहीं है तो समझना चाहिए कि समाज अभी अवनतिकी दशामें है। समाजोन्नतिके लिए समाजके प्रत्येक सदस्यको अपनी और अपने कुटुम्बियों तथा अपनी जातिके भाइयोकी उन्नति करना, उनके कार्योंसे सहानुभूति रखना परमावश्यक है।

दूसरोंकी सहायता करनेके लिए यह जरूरी नहीं कि मनुष्यको धनवान् ही होना चाहिए। परोपकारके लिए धन सहायक अवश्य है किन्तु आवश्यक नहीं। कितने ही व्यक्ति ऐसे हो गये है जिनके पास धनका नाम भी न था, परन्तु परोपकारमे वे लखपती और करोड़पतियोंसे भी बढ़ गये थे। उन्होंने पैसा पास न होते हुए भी वे वे काम किये है, जो अटूट लक्ष्मीके धनी भी न कर सके। ऐसे लोगोंकी इतिहासमें कमी नहीं। प्रत्येक युग, प्रत्येक काल और प्रत्येक देशमें ऐसे महात्माओंने जन्म

लेकर अपने सदुपदेश तथा बाहुबलसे संसारका उपकार किया है। जहाँ कहीं जितने महात्मा परोपकारी पुरुष हुए, वे प्रायः सब धनहीन थे। उन्होंने धन देकर असहाय पुरुषोकी ही सहायता नहीं की, किन्तु अपनी कोमल उपदेशभरी वाणीसे उनको वे वे मार्ग बतलाये जिनके द्वारा असंख्यात पुरुषोने आलसको त्यागकर श्रम साहस और उद्योगकी शरण लेकर स्वावलम्बका पाठ सीखा, तथा अपव्ययी असयमी पुरुषोने अपनी विषयवासनाओको तिलाञ्जुली देकर आत्मकल्याणके लिए सम्यक् चारित्रको धारण किया। ईसा, गौतम, महावीर आदि महापुरुष इन्हीं महात्माओंमेसे थे। इसी प्रकार जितने बड़े बड़े तत्त्ववेत्ता, विद्वान्, विज्ञानवारिधि संसारमें हुए, वे सब धनहीन थे; परंतु उन्होने अपने बाहुबलसे सर्वसाधारणके हितार्थ अनेक विद्यालय, पुस्तकालय आदि स्थापित करके तथा पुस्तकें निर्माण करके ससारको अपार लाभ पंहुचाया। वाट, न्यूटन, आचार्य हेमचंद्र, कबीर, रामदास, तुकाराम, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, सर सय्यद अहमद, दयानन्द सरस्वती, गोपाल कृष्ण गोखले आदि इन्हीं महापुरुषोमेसे थे। अब भी महात्मा गाँधी, मिसेस एनी बीसेन्ट आदि अनेक व्यक्ति विद्यमान् है जो अपनी विद्याद्वारा समस्त संसारका उपकार कर रहे है। कुछ समय पहले यूरुपमे डाक्टर डान नामके एक पुरुष हुए है। वे पहले बड़े ही गरीब थे, परंतु बादमें उनकी आमदनी कुछ बढ़ गई थी। उन्होने अपने मनमे विचार किया कि मेरी आमदनी इस लिए नहीं बढी कि मै इसे फिजूलके कामोंमें खर्च कर दूँ, किंतु परमात्माने इस लिए मेरी आमदनी बढाई है कि मै इसके द्वारा अपने सहधर्मियो और सजातियोंका कुछ भला करूँ। तदनुसार वे आमदनीमेसे खर्चके लिए निकाल कर शेष गरीबोके लिए खर्च कर डालते थे और खर्च भी इस तरह करते थे कि किसीको मालूम भी न

होता था। उनका विचार था कि दूसरेसे कहकर किसीकी सहायता करना, सहायता नहीं किंतु केवल लोगोंमें अपनेको बड़ा कहलवाना है। जब दूसरोंकी सहायता करना हमारा धर्म है, तब यह समझमें नहीं आता कि हम क्यों झूठे नामकी खातिर लोगोंमें अपने तुच्छ कार्योंको प्रकट करके अपने किये हुए पर पानी डाले। ईश्वर उन्हीं लोगोंसे प्रसन्न होता है, जो बिना नामवरीकी इच्छाके कुछ शुभ कार्य करते है। इसी अभिप्रायसे कितने ही कैदियोंको उन्होंने रुपया देकर कैदसे छुड़ाया, कितनोंहीको पढा लिखा कर विद्वान् बनाया और कितने ही अनाथों विधवाओं और अपाहजोंको गुप्तदान देकर उनका पालन पोषण किया। उन्होंने एक नौकर खास इसी मतलबसे रख छोड़ा था कि जहाँ जिस किसीको जरूरत समझी जाय, तुरन्त सहायता दी जाय। एक बार उनका एक मित्र किसी कारणसे निर्धन हो गया। उनको किसी तरह यह बात मालूम हो गई। उन्होंने तुरंत उसके पास १५०० रु० भेजे। मित्रने लेनेसे इन्कार किया, परंतु उन्होंने आग्रहपूर्वक कहा कि "मित्रवर, मैं जानता हूँ कि उदरपूर्तिके लिए तुम्हें जरूरत नहीं है; परन्तु मैं इस बातको सहन नहीं कर सकता कि मेरा एक मित्र जो पहले धनी रह चुका है और जिसने अपने धनसे अनेक असहायोंकी सहायता की है निर्धन अवस्थामें रहे। मै प्रार्थना करता हूँ कि आप इसको सहर्ष स्वीकार कीजिए।"

यही हाल ईश्वरचंद्र विद्यासागरका था। जहाँ कहीं उन्होंने सुना कि अमुक व्यक्ति ऋणके भारसे दब रहा है—वह ऋण नहीं चुका सकता—कि वे तुरंत गुप्त रीतिसे उसकी ओरसे रुपया जमा कर दिया करते थे। उन्होने लाखों रुपया गरीबोंकी सहायतामें खर्च किया है।

देखा जाता है कि हम लोग रुपयेकी प्रशंसा करनेमें बहुत ही अत्युक्ति करते है। हम रुपयेको सर्वशक्तिमान् समझते है। हमारा विचार है कि रुपयेकी बराबर संसारमे कोई भी चीज नहीं है। सब कुछ रुपयेहीसे हो सकता है, इसी कारण हरएक कामके लिए रुपया जमा करते है। पापी दुराचारी पुरुषोके सुधारनेके लिए भी चदे किये जाते है, परंतु चंदोंसे कुछ नहीं हो सकता। बुरे लोगोको सुधारनेके लिए रुपयेकी जरूरत नहीं है। इसके लिए सदाचार और सच्चरित्रकी जरूरत है। धनके द्वारा जातिमें कदापि महान् परिवर्तन नहीं हो सकते। लोगोको अधर्म, असंयम, अदूरदर्शितासे रोकनेके लिए और उनको उत्तम समीचीन उपायोके द्वारा सुख सम्पादन करनेको उत्तेजित करनेके लिए शुद्ध अंतःकरण, निस्वार्थ आत्मसमर्पण और कठिन परिश्रमकी जरूरत है। रुपयेसे निस्सन्देह बहुत कुछ सहायता मिल सकती है, परन्तु रुपया स्वयं कुछ नहीं कर सकता। महात्मा पालने आधे रोम देशमे ईसाई धर्मका प्रचार किया था, तथापि वह स्वय डेरे तम्बू बनाकर अपना निर्वाह करता था; उसने कभी एक पैसा भी चंदेका जमा नहीं किया। दान देनेवाले धनिकोकी अपेक्षा सत्यपरायण, धर्मनिष्ठ और शुद्धहृदय मनुष्योंकी अधिक आवश्यकता है।

जहाँ देखो, लोग रुपयेको सर्वोत्तम और श्रेष्ठ पदार्थ समझते है। कहीं कही तो रुपयेको साक्षात् देवी लक्ष्मी कह कर आराध्यदेवके समान पूजते है। भारतवर्षमे तो घर घर दिवालीके दिन लक्ष्मीकी पूजा होती है। इसरायली और यूनानी लोग भी रुपयेकी पूजा करते थे। बच्चेसे लेकर बूढेतक प्रत्येक व्यक्ति रुपयेका नाम सुनते ही मनमे फूला नहीं समाता। रात दिन रुपये पर ही दृष्टि रहती है। रुपया ही धन है। रुपया ही प्रतिष्ठाका कारण है। जिनके पास रुपया है वह

अपनेको सब कुछ समझता है। जिसके पास नहीं, वह हरवक्त इसीकी धुनमें रहता है। जहाँ दो आदमी खड़े होते है और कोई सामनेसे गुजरता है, तो यही प्रश्न होता है कि यह कौन है—इसकी क्या आमदनी है? यदि तुम कहो कि यह एक सज्जन धर्मात्मा पुरुप है, तो कोई उसको देखेगा भी नहीं; जाने दो, सैकड़ो फिरा करते है। परंतु यदि तुम यह कह दो कि यह बड़ा धनवान् है, इसके यहाँ लाखों और करोड़ोकी सम्पत्ति है, तो हरएककी निगाह उसपर पड़ेगी। लोग आगे बढ़ बढ़ कर उसे देखेगे। इंग्लैडमे एक समय था, जब धनवान्को अपने सामनेसे निकलते हुए देखनेके लिए, सड़क पर सैकड़ों आदमी इकट्ठे हो जाया करते थे। यही दशा इस देशकी अब तक है। जहाँ लोगोने सुना कि आज अमुक राजा महाराजा निकलेगे, घंटों पहले पैर जमा कर खड़ा होना शुरू कर देते है।

रुपयेका नाम सुनते ही लोगोंके मुँहमे पानी भर आता है। रुपयेके लिए झूठ बोलते, चोरी करते लज्जा नहीं आती तथा जीवनके सारे उद्देश्योको और स्वयं जीवनको भी अर्पण करनेमे शंका नहीं होती। १०० पीछे ९० बल्कि इससे भी जियादह मनुष्य रुपयेकी जोहमे ऐसे बेसुध रहते है कि उन्हें संसारमें क्या हो रहा है, इसकी खबर भी नहीं रहती। वे रातदिन अपनी धुनमें लगे रहते है। उन्हे क्या माळूम है कि हमारे कितने भाई दाने दानेको तरस रहे है और कितने रुपयेके अभावसे अज्ञान अवस्थामें पड़े हुए है। उन्हे अपने भोगविलास प्रिय है। उनके जीवनका उद्देश खाना पीना मजे उड़ाना ही है। कोई हाँ ऐसा धनी होगा, जो धनका बोझ सिर पर उठाते हुए भी संयमी और परिश्रमी हो। नहीं तो प्रायः सब ही आलसी असंयमी और भोगविलासप्रिय होते हैं।

एक अनुभवी विद्वान्का कथन है कि यदि धनके कारण मनुष्य मनुष्यको न भूले, तो संसारसे आधा पाप एकदम उठ जावे। यदि स्वामी सेवकसे सहानुभूति रक्खे आर सेवक स्वामीसे प्यार करे, तो हमको कदापि शिकायत करनेका मौका न मिले। धनिकोंका काम है कि अपने नौकरोकी भलाईके लिए उनसे जो कुछ हो सके उसमें कदापि ढील न डालें। अपनी वढीचढ़ी आमदनीमेंसे कुछ भाग सर्वसाधारण और विशेष कर अपने यहाँ काम करनेवालोंके हितार्थ विद्यालय, पुस्तकालय, औषधालय स्थापित करनेमे, अच्छे मकान, अच्छी सड़कें बनानेमें व्यय करे। ऐसा करनेसे न केवल वे, किन्तु उनके पुत्र पौत्र भी, जन्म जन्मान्तरों तक उनका आभार मानेंगे। साथमे समाज और देशका भी कल्याण होगा।

चाहे मनुष्यके पास कितना ही अधिक रुपया हो जाय, परन्तु उसकी तृप्ति नहीं होती। वह रात दिन अधिकाधिक जोड़नेहीकी फिक्रमें रहता है। तन तोड़कर जिस तरह होता है पैसा पैसा जोड़ता है और पैसे पैसेके लिए तुच्छसे तुच्छ काम करते हुए भी नहीं शरमाता। चाहे उसके पास इतना रुपया हो जाय कि उसको वह अपने जीवनमें खर्च भी न कर सके, तो भी वह और जियादह पैदा करनेके विचारको नहीं छोड़ता। जान पड़ता है कि इसका कारण शिक्षाका अभाव है। धनिकोंको उच्चशिक्षा नहीं मिलती। वे धनके नशेमें न स्वयं पढ़ते है आर न अपनी सन्तानको पढ़ाते है। न उन्हे किसी पुस्तकसे शौक होता है और न किसी साहित्यसे प्रेम होता है। उनको केवल रुपयेकी लगन होती है। उसी पर वे आसक्त होते है। रुपया ही उनका धर्म और रुपया ही उनका आराध्य देव होता है।

उनके हृदयमें रुपयेका कुछ ऐसा महत्त्व होता है कि विद्या, धर्म नीति आदि उनकी दृष्टिमे सब कुछ तुच्छ होते हैं। इसी कारणसे वे अपने बालकोंको शिक्षा दिलाना फिजूल समझते है। देखा जाता है कि अमीरोंकी औलाद प्रायः फिजूलखर्च होती है। बाप जैसे कंजूसीसे रुपया जोड़ता है, बेटा वैसी ही फिजूलखर्चीसे उसे उड़ा देता है। किसीने सच कहा है कि रुपयेके पर होते हैं। ऐसे हजारों उदाहरण मौजूद है कि पहली पीढीने रुपया कमा कर जमा किया, दूसरीने फिजूल बर्बाद किया और तीसरी फिर ज्योंकी त्यों हो गई। दादाने कमाया, बापने उड़ाया और बेटेने भीख और चोरी पर गुजर किया। व्यापारियोंका तो यह हाल नित्य ही देखनेमें आता है। जो कल बड़े कोठी कारखानेवाले बन रहे थे, जिनके यहाँ लाखोंका लेन-देन हो रहा था, कल शामको उनका दिवाला निकल गया और आज वे दीवालिया और कंगाल होगये।

बुढापेमें आनन्दसे जीवन वितानेके लिए यह जरूरी है कि जीवनीमें समय और धनका सदुपयोग किया जाय। प्रत्येक युवकका कर्तव्य है कि वह ज्ञान, विज्ञान, कला कौशल्यमें निपुणता प्राप्त करनेका उद्योग करे। हमारे जीवनमें कितना ही समय प्रतिदिन व्यर्थ नष्ट हो जाता है।

रुपयेकी लालसा नहीं छोड़ता। जवानी कड़ा परिश्रम करके रुपया कमानेके लिए है, परन्तु बुढापा शान्तिके साथ एकातमे किसी ऐसे विषय पर विचार करनेके लिए है, जिससे ससारका उपकार हो और आत्माका कल्याण हो। यदि कोई अमीर आदमी बुढ़ापेमे भी रुपयेकी लालसा नही छोड़ता, तो हम कह सकते है कि उसको कदापि सुख नहीं मिल सकता। उसका जीवन दुःखमय जीवन हो जाता है। वह रात दिन चक्कीकी तरह पिसता रहता है। सम्भव है कि उसका धन प्रतिदिन बढता जाय, परन्तु ऐसे धनसे क्या लाभ? वह उस धनको न तो खा सकता है और न खर्च कर सकता है। उसका धन लाभदायक होनेके स्थानमे उलटा उसके लिए चिंता और आपत्तिका कारण हो जाता है। सचमुच ही वह मनुष्य लालचका गुलाम हो जाता है। लालचके वश नीचसे नीच कार्य करता हुआ भी नहीं लजाता। सब कोई उसे घृणाकी दृष्टिसे देखते है और वह स्वयं भी अपनी नीच अवस्थाका अनुभव करता है।

कहते है कि एक अमीर आदमीने मरनेसे कुछ दिन पहले बेंकसे कुछ रुपये और अशर्फियॉ मँगाई। जब वह मरने लगा, तब उसने अपने हाथ उन अशर्फियोंसे भर लिये। उसके प्राण निकल रहे थे, परन्तु उसके हाथोंसे रुपये न छूटते थे। वह बेहोशीकी हालतमें भी रुपयोंको गिनता था और एक एकको चूमता था। वह मर गया, परन्तु रुपये उसके हाथमे ही रहे। एक दूसरे महाशय मरते मरते यही कहते रहे कि "मेरा रुपया मेरे साथ जायगा। मै अपने रुपयेका अधिकारी हूँ। मुझसे मेरे रुपयेके विषयमे कोई कुछ नहीं पूछ सकता।"

महमूद गजनवी जिसने हिन्दुस्थान पर १८ वार चढाई की और जो हर वार यहॉके नगरों और मदिरोंसे अतुल्य लक्ष्मी लूटकर ले गया उसके

विषयमे प्रसिद्ध है कि उसने अपनी तमाम जिंदगी रुपया पैदा करनेमे ही व्यतीत की। मरते समय उसे यह खयाल हुआ कि यह रुपया जिसे मैंने इतनी मार धाड़ और जुलमसे पैदा किया, जिसके लिए मैंने अपने धर्म कर्म सबको नष्ट कर दिया, शोक, यहीं छोड़कर जाता हूँ। हाय! मुझे क्या मालूम था कि एक दिन मेरा इससे वियोग हो जायगा। मै समझता था कि मै सदा ही जीवित रहूँगा और यह मेरा धन भी सदा मेरे साथ रहेगा। इसी कारण 'येन केन प्रकारेण, जिस तरह हुआ मैंन रुपया पैदा किया, परन्तु अब यह ज्ञात हुआ कि यह धन, यह सम्पदा विनश्वर है और जीवनका उद्देश्य रुपया पैदा करना नहीं है।

धन उपयोगी अवश्य है परंतु यह खयाल कि धन प्रतिष्ठाका कारण है, मिथ्या है। मूर्ख और गँवार लोग ही धनकी प्रशंसा किया करते है। विद्वान् विद्याके सामने धनको तुच्छ समझते है। कितने ही लखपती धनाढ्य ऐसे है जिन्हें कोई जानता भी नहीं और भूल कर भी पूछता नहीं। संसारमे प्रतिष्ठा उसीकी होती है, जिससे संसारका कुछ भला होता हो। जिनसे कुछ भला नहीं होता, चाहे वे कोट्याधीश ही क्यों न हो, न होनेके बराबर है। इस विषयमे इतिहास हमारे कथनका साक्षी है। कहीं भी आजतक किसी निरे धनवान्का कोई स्मारक चिह्न नहीं बनाया गया। विद्वानोंके, परोपकारी राजाओंके, देशहितैषियो और जातिनेताओंके सर्वत्र ही चिह्न, चरित्र और स्मारक मिलते है, परंतु निरे धनवान्का कहीं कोई चिह्न ढूंढ़े भी न मिलेगा। किसीने सच कहा है कि यश कहीं बाजारमें नहीं बिकता। यह केवल उत्तम कार्योंके सम्पादनसे प्राप्त होता है।

धन और सुखका एक दूसरेसे कोई संबंध नहीं। कभी कभी तो धन दुःख और आपत्तिका कारण होता है और सुख निर्धनतामें

ही देखनेमें आता है। महापुरुषोंके जीवनचरित पढनेसे मालूम होता है कि सबसे जियादह सुख उनको उस समय मिला, जब वे निर्धनतासे धीरता और वीरताके साथ युद्ध कर रहे थे। उसी समय उन्होंने दूसरोंके हितार्थ अपने स्वार्थका त्याग किया, भावीमे स्वतंत्रता प्राप्त करनेके लिए मितव्ययताका अभ्यास किया, अपने मन और हृदयको विषयवासनाओंसे रहितकरके पवित्र किया और ज्ञान विज्ञानके द्वारा अपना तथा देशका उपकार किया। एक विद्वान् लिखते है , कि "मै अपनी युवावस्थाको कभी नहीं भूल सकता। उस समयका स्मरण होते ही मै अंगमे फूला नहीं समाता, जब मेरे पास एक पैसा भी न था और मै एक दानशालामे रहकर पढा करता था।"

धनी और निर्धन दोनोकी दशा एक सी नही है। दोनोंमे बड़ा अंतर है। धनीको धनी होनेके कारण कितना ही रुपया निर्धनसे जियादह खर्च करना पड़ता है। हर एककी निगाह उस पर रहती है—हर कोई उसे ठगना चाहता है। उसे स्वयं अपनी स्थिति रखनेके लिए अधिक खर्च करना होता है; परंतु उसे अपने धनकी रक्षाकी सदा चिंता रहती है। चोर वगैरहका सदा भय रहता है। इसी चिंतामें उसे रातको नींद नहीं आती, रात-दिन जागते ही बीतते है। उसका मन सदा इसी झंझटमे परेशान रहता है।

देखा जाता है कि प्रायः धनिक पुरुष तरह तरहके रोगोमे ग्रसित रहते है। मोटापा और अजीर्ण तो कभी उनका पीछा ही नहीं छोड़ते। वे रात दिन गद्दे-तकिये लगाये पड़े रहते है, देरमे पचनेवाले बढ़िया बढिया खाने खाते है और श्रम कुछ भी नहीं करते। इसी कारण सदा पेटकी शिकायत किया करते है। श्रम और पाचनशक्तिका गहरा संबंध है, श्रमसे पत्थर भी हजम हो जाता है, परंतु निठल्ले एक जगह पड़े

रहनेसे और शरीरसे कुछ भी काम न लेनेसे हलकोसे हलकी चीज भी हजम नहीं होती। एक विद्वान्का कथन है कि "प्रकृतिके नियमोमें जरा भी रिआयत नहीं होती। उसका व्यवहार सबके साथ एकसा होता है। यदि धनी पुरुषको धनद्वारा सुख मिलता है तो अजीर्णके कारण कष्ट भी उसे सहना पड़ता है और यदि निर्धन पुरुष निर्धनताके कारण कष्ट सहता है तो हाजमे और नीरोगताके कारण आराम भी उसे ही मिलता है। संसारमें ऐसा एक भी पुरुप नहीं जिसको सब तरहसे सुख ही सुख हो। न कोई ऐसा ही पुरुप है, जिसे दुःख ही दुःख हो।"

बहुतसे आदमी दूसरेके धनको देखकर जला करते है, पर यह उनकी नीचता है। धन कोई आसान चीज नहीं। इसका प्राप्त करना कठिन काम है। इसके लिए अनेक दुःख और कष्ट उठाने पड़ते है। जिन्होंने धन कमाया है उन्हें बड़ी बड़ी तकलीफे उठानी पड़ी है। पग पग पर आपत्तियोंका सामना करना पड़ा है। अनेक वार इंद्रियोको दमन करना और इच्छाओको वशमें रखना पड़ा है। मोटा खाना, मोटा पहनना, और पैदल चलना पड़ा है। ऐसी ऐसी अनेक आपत्ति-योको सह कर उन्होने धन कमाया है। परंतु देखा गया है कि उन्होने तो इतने कष्ट सहकर कमाया, पर उनकी औलादने उसे इने-गिने दिनोमे ही मटियामेट कर दिया।

अनक व्यक्ति निर्धनताको बहुत बुरा समझते है; परंतु यह भी उनकी भूल है। निर्धन होना पाप नहीं। निर्धनतामें कोई निंदा या अपमान भी नहीं। बल्कि बहुतोने तो निर्धनताकी प्रशंसा तक की है। जो मनुष्य कोई पापकार्य नहीं करता और रुपयेके लोभके वशमें आत्मसम्मानको नष्ट नहीं करता, वह निर्धन होते हुए भी महान्

ष्ठित है। वह पुरुष निर्धन नहीं कहा जाता, जो अपना खर्च चला-
कर कुछ बचा सकता है और हरएक चीजको नकद दामोसे खरी-
दता है। वह उस आलसी धनीसे जियादह सुखी है, जो सदा
मोदी और दर्जीका कर्जदार रहता है। एक विद्वान्का कथन है कि
" वह आदमी गरीब नहीं जिसके पास कुछ नहीं; किंतु वह आदमी
गरीब है जिसके पास कुछ काम नहीं, या जो, कुछ कर नहीं सकता।
जो आदमी काम करनेके योग्य है और काम करता है, वह उससे
कहीं अच्छा है जिसके पास हजारो रुपये है परन्तु कुछ काम करनेको
नहीं है। "

निर्धनतासे मनुष्यकी बुद्धि बढती है। जितने बड़े बड़े पुरुष हुए
उनमें बहुतसे शुरूमे निर्धन थे। निर्धनतासे आचरण सुधरते है और
चरित्र गठित होता है। साहसी आदमियोको कठिन काम ही प्रिय होते
है। इतिहास इस बातका साक्षी है कि जितने परोपकारी दयालु और
सत्यवक्ता पुरुषोत्तम हुए हैं, वे प्रायः निर्धन थे। एक धर्मोपदेशकने एक
बार कहा था कि " ईश्वरने निर्धनताको पैदा किया है, परंतु दीनताको
पैदा नही किया। इन दोनोंमे बड़ा अंतर है। निर्धनता आदरणीय और
दीनता घृणित है। निर्धनतासे मानहानि नहीं होती, किन्तु दीनतासे
मानहानि होती है। "

संसारमे गरीब ही सबसे जियादह सुखी है। धनवान् रातदिन चि-
न्ताओमे फँसा रहता है। गरीबको अपनी थोड़ीसी आमदनी पर संतोष
होता है और उसीके अनुसार वह खर्च करता है; परंतु अमीरको कभी
संतोष ही नहीं होता। वह धनका अनुचर बना रहता है। धनके का-
रण वह अभिमानके शिखर पर चढ़ा रहता है और धनके लिए झूठ भी

बोल देता है । एक विद्वान्का कथन है कि "संतोषी आदमीका एक रुपया असंतोषीके हजारसे कहीं अच्छा है।"

अब प्रश्न यह है कि दानका धनसे क्या सम्बन्ध है और दानमें धन कहाँतक उपयोगी हो सकता है? आज कल जिधर देखो उधर दानकी ही चर्चा है। हर कोई अपने उपदेशमें किसी न किसी दान-शालाके लिए ही अपील किया करता है। जहाँ देखो वहाँ भिखारियोका झुंड दीख पड़ता है। यद्यपि प्रतिदिन हजारो लाखोंके चन्दे होते हैं, तथापि भिखारियोकी संख्यामे कोई कमी नजर नहीं आती—दिन दिन बढती ही होती जाती है। अबसे दस वर्ष पहले जितने भिखारी थे अब उनसे दुगने तिगुने हो गये है। इसका मूल कारण यदि विचार कर देखा जाय तो यह मालूम होगा कि हमारे देशमे जो लाखो रुपया सदावर्त आदि कामोंमें भूखे नंगोंको दिया जाता है, वह ही भूखोंकी संख्या बढानेवाला है। जबतक सड़क पर फिरनेवालों और पैसा माँगनेवालोंको पैसे मिलते रहेगे और सदावर्तमें बे-पूछ भोजन मिलता रहेगा, इनकी संख्या कदापि कम न होगी। इन पर जो रुपया खर्च किया जाता ह वह कदापि दान नहीं हो सकता—वह कु-दान है। इससे पुण्य नहीं होता, उलटा पाप बढता है। लोगोको श्रम, संयम और साहससे घृणा होती है और आलस और असंयमसे प्रेम होता जाता है।

इस देशमें भीख माँगना एक पेशा हो गया है। यहाँ भिखमंगोकी संख्या ५२ लाखसे भी अधिक है। आठ आठ नौ नौ वर्षके बच्चे भी दूसरोकी देखादेखी भीख माँगने लगते है। धूर्त बाबा लोग उनके कानोंमें मुंदरे डालकर तथा उन्हें भगवें वस्त्र पहिनाकर जन्म-पर्यन्तके लिए भिखारी बना दते है। यदि ये लोग कुछ काम करते, तो इनसे संसारको कितना लाभ पहुँचता? परन्तु जब इनको विना मेहनत किये और

पढ़े लिखे ही रुपया मिल जाता है, तब फिर क्या जरूरत है कि मेहनत करे । इनकी देखादेखी बहुतसे मेहनती लोग भी मेहनतको छोड़ देते है और इन्हींका पेशा करने लगते है । मेहनती दिनभरमे कहीं दो चार आने ही कमा पाता है, परन्तु यदि इनका दाव लग जाय तो ये कभी कभी रुपया रुपया रोज भी कमा लेते है ।

ये भिखमगे दो तरहके होते है । कुछ तो ऐसे होते है जो अपने रुपयेको जोड़ते जाते है, कौड़ी भी खर्च नही करते । यहाँ तक कि कई कई दिनके फाके तक कर लेते है, पर पैसा खर्च नहीं करते । इनको रुपयेसे एक प्रकारका तीव्र मोह होता है । ऐसे कितने ही भिखारियोके पास मरने पर बड़ी बड़ी रकमे निकली है । कुछ भिखारी एसे होते है कि वे दिनभरमे जो कुछ माँग कर कमाते है, रातको सबका सब फिजूल उड़ा देते है । खोज करनेवालोने पता लगाया है कि ये लोग शराबी और विषयी होते है । ये भीखके पैसेसे ऐसे कुकर्म करते है जिनको कहते हुए लज्जा आती है । दुनिया भरके अवगुण और विषय इनके अंदर मौजूद है । दिनमें तो ये भेड़की भोलीभाली गरीब शकल बनाये रहते है, परन्तु रातको भेड़ियेका रूप धारण कर लेते है । दिनमें फटे पुराने चीथड़े लपेटे रहते है, परंतु रातको नवाब बन जाते है । ऐसे ही लोगोंके कारण पाप और दुराचार दिन दिन बढ़ते है । हिंसा झूठ चोरी कुशीलके ये ही नेता और उत्तेजक होते है । इन बहुरूपियोने संसारको खूब ही ठग रक्खा है ।

यदि विचार कर देखा जाय, तो इनके कारण हम ही लोग है । यदि हम इनको पैसा न दें, तो ये कुछ नहीं कर सकते । हमारा यह खयाल रहता है कि ये भूखे है । इनके देनेमें बड़ा पुण्य होगा । आहार दानकी बराबर कोई दान नहीं । इसी विचारसे हम इनको कुछ

न कुछ दिये बिना नहीं रहते। परन्तु यह हमारी भूल है। इनके देनेमें कोई पुण्य नही होता, उलटा पाप होता है। इनको देना दान नहीं, किन्तु कुदान है। ये दानके पात्र नहीं; किन्तु कुपात्र है। कुपात्रोको देनेसे कई हानियाँ होती है। एक तो फिजूलखर्ची, दूसरे लोगोंको कामसे हटाकर आलसी बनाना, तीसरे पापकार्य और दुराचारका प्रचार कराना। शास्त्रकारोंने जो दानका उपदेश दिया है, उसका यह अभिप्राय है कि आहारदान उन लोगोको दिया जाय जो वास्तवमे भूखे है। अर्थात् जो ऐसे रोगी अपाहिज और निर्बल है कि जिनसे कुछ काम नहीं हो सकता। ऐसे आदमी बहुत ही कम निकलेंगे और उनको भरपेट भोजन करानेमे अथवा उनकी औपध आदिका प्रबन्ध करनेमें बहुत ही कम खर्च होगा। उनके लिए स्थान स्थान पर अस्पताल और औपधालय बने हुए है, जहाँ उनको खाना कपड़ा दिया जाता है और बिना कुछ लिये उनका इलाज किया जाता है। इंग्लैण्ड आदि देशोंमे कोई बाजारमे अथवा सड़कपर भीख नहीं माँग सकता। वहाँ पर खैरातखाने और गरीबोंके लिए घर बने हुए है। जो वास्तवमें गरीब होते है, जो स्वयं अपने हाथसे कमा नहीं सकते वे इन घरोंमें भेज दिये जाते है और वहाँ उन्हें खाना कपड़ा दिया जाता है। भारतमें भी इनकी आवश्यकता है। भारतमें एक और बड़ी खराबी है और वह यह कि यहाँ धर्मके नाम पर उन संडे मुसंडोंको खिलाया जाता है जो हर तरहसे सुखी है, जिन्हे दूसरोंकी सहायताकी जरा भी जरूरत नहीं है। हमें चाहिए कि ऐसोको खिलाना छोड़कर वास्तविक भूखोंको खिलावें।

आहारदानके सिवाय आजकल सबसे उत्तम दान विद्यादान है। विद्यासे मनुष्यको अपने कर्तव्य और अकर्तव्य मालूम होते है। क्या हेय है और क्या उपादेय है, इसका ज्ञान विद्यासे ही होता है।

ही मनुष्य सभ्य और प्रतिष्ठित कहलाता है और विद्यासे ही वह अपने आत्मगौरवको सुरक्षित रख सकता है। ऐसी विद्याका प्रकाश करना और जिस तरह हो सके उसका सर्व साधारणमे प्रचार करना, धनिकोंका कर्तव्य है। विद्यावृद्धिके लिए स्कूल पाठशालायें खोलना, वाचनालय और पुस्तकालय स्थापित करना. उत्तमोत्तम पुस्तकें, मासिकपत्रों और समाचारपत्रोका निकालना सर्वोत्तम दान है। यदि प्रत्येक मनुष्य एक वार एक पैसा भी देवे तो ३० करोड़ भारतवासियोसे ५० लाख रुपया एकदम एक मिनिटमे जमा हो जावें। किसी भिखारीको शराव और भंगके लिए पैसा देनेके स्थानमें यदि विद्याके लिए पैसा दिया जाय, तो कितना उपकार हो सकता है?

आज कल चारों और अज्ञानान्धकार फैल रहा है। इसके कारण इस देशमें अनेक हानिकारक प्रथाओंने अधिकार जमा रक्खा है। इस अज्ञानको दूर करनेके लिए प्रत्येक मनुष्यका कर्तव्य है कि अपनी आमदनीमेसे कुछ भाग दा॰के नामसे निकालकर विद्याप्रचारमे व्यय करे। धनिकोको इस ओर विशेष लक्ष्य देना चाहिए। उन्हे अपनी लक्ष्मीको इस कार्यमें लगाकर दानके लिए यशका भागी बनना उचित है। इसके समान संसारमे कोई पुण्यकार्य नहीं। इतना यश और कीर्ति भी किसी दूसरे कार्यमें नहीं। जिन लोगोंने अपने रुपयेको ऐसे कार्योंमे लगाया, चाहे आज उनका शरीर इस संसारमे विद्यमान न हो, परन्तु उनका नाम इतिहासमें अजर अमर है। बम्बईके स्वर्गवासी सेठ रायचन्द्र प्रेमचन्द्रका नाम सर्वत्र विख्यात है। जबतक कलकत्ता विश्वविद्यालयका अस्तित्व है, तबतक उनका नाम सूर्यके समान प्रकाशित रहेगा। जबतक मोहमडन कालेज अलीगढ और मुसलमान जातिका अस्तित्व है, तबतक सर सैयद अहमदका नाम इतिहासके पृष्ठोंमें सुनहरे

-अक्षरोंमें लिखा रहेगा। जगत्प्रसिद्ध धनी कारनेगीका नाम क्यो इतना -मशहूर है? इसी कारणसे कि उसने अपनी अतुल्य लक्ष्मीको जहाँ तहाँ विद्याप्रचारमे व्यय किया। इसी प्रकार जिन्होने अपने रुपयेको विद्याके कार्योंमे लगाया, वे महान् पुण्य और यशके भागी हुए।

भारतवर्षमे विद्याकी बड़ी जरूरत है। स्वयं हमारे महाराजाधिराज राजराजेश्वर जार्ज पंचमने भी यही समझकर शिक्षार्थ अतुल्य दान दिया है। महाराज बड़ोदाने विद्याप्रचारमे करोडो रुपया खर्च किया है। अब भारतीय राजा महाराजाओ और धनिकोका काम है कि देशमें मुफ्त शिक्षाका प्रचार करे। शिक्षार्थ दान देकर महाराजका अनुकरण करे। असमर्थ दीन छात्रोको छात्रवृत्तियाँ देकर पढाया जाय, उनके हितार्थ छात्रालय, पुस्तकालय, औषधालय, और व्यायामशालायें स्थापित की जायें। सर्व-साधारणका कर्तव्य है कि ऐसे भिखारियोंको जो अपने हाथसे कमा सकते है एक पैसा भी न दें, किंतु उनको यही उपदेश दें कि मेहनत करके कमाओ। इसी कारण सरकार दुर्भिक्षादिके अवसर पर लोगोंके लिए कोई काम खोल दिया करती है। यदि इन लोगोको काममें न लगाया जाय, तो इन सबकी भिक्षावृत्ति हो जाय। जो लोग वास्तवमे अपाहज है और अपने हाथसे कमानेको असमर्थ है, उनके लिए ऐसे अपाहजखाने बनाये जायें जहाँ उनको भरपेट भोजन मिले। सदाव्रतमें हर कोई आकर ले जाता है, परन्तु अपाहजखानोमें केवल उन्हींको मिल सकेगा जो वास्तवमे पात्र है।

बड़े विद्वान् होकर निकलते है। इस देशमे भी ऐसे ही कार्योंमे दान देनेकी जरूरत है।

इससे यह न समझ लेना चाहिए कि जितना रुपया भारतवासी वर्तमानमे दानके नामसे खर्च कर रहे है, उससे अधिक रुपया खर्च करना पड़ेगा। नहीं, कदापि नहीं। आजकल लाखों और करोड़ों रुपया आलसी अकर्मण्य लोगोंको—जो सर्वथा अपात्र है—दानके नामसे दिया जाता है। जो लोग श्रम करके कमा सकते है उन्हे कदापि दान न देना चाहिए, इस सिद्धातको सामने रखकर यदि प्रवृत्ति की जाय तो वह सब रुपया बच सकता है और सुपात्रोंके हितार्थ उत्तम कार्योंमें व्यय हो सकता है।

चौदहवाँ अध्याय।
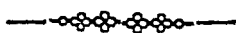
नीरोग घर।

—:०·—

(विद्वानोके वाक्य।)

सभ्यताका सर्वोत्तम साक्षी वह घर है, जिसमे हम रहते हैं।
स्वच्छता स्वास्थ्यका मूल है, अर्थात् सफाई तन्दुरुस्तीकी जड़ है।
दुर्गंध और मैलेपनसे सद्गुण कोसों दूर भागते हैं।
धर्मार्थकाममोक्षाणा शरीरं साधन परम्।

स्वास्थ्यको लोग धन कहा करते है। उर्दूमे भी कहावत है कि "तन्दुरुस्ती हजार न्यामत है।" वास्तवमे स्वास्थ्य बिना सारी सम्पत्ति व्यर्थ है। हरएक आदमी—चाहे वह मस्तकसे काम करता हो चाहे हाथ पॉवसे—स्वास्थ्यको एक बहुमूल्य पदार्थ समझता है। निस्संदेह स्वास्थ्यके बिना जीवन निष्फल और भारस्वरूप है। प्रकृतिने हमारे

शरीरको कुछ इस तरहसे बनाया है कि यदि किसी अंग या उपांगमें जरा भी तकलीफ हो, तो हमको कभी सुख नहीं मिल सकता। सुख ही जीवनका मूल अभीष्ट है।

सुख उसी समय मिल सकता है, जब हमारी सारी इन्द्रियाँ और सारे अंग नीरोग अवस्थामे हों। यद्यपि केवल शारीरिक सुख ही जीवनका उद्देश्य नहीं है, किन्तु यह बात अवश्य है कि शारीरिक सुख अर्थात् स्वास्थ्य पर ही जीवन निर्भर है। जितना जिसका स्वास्थ्य अच्छा है उतना ही जियादा वह जीता है और जितना जिसका स्वास्थ्य खराब है उतना ही जल्द वह मर जाता है। दूसरे शब्दोंमें, मनुष्योंकी शारीरिक सुखकी बढ़तीसे आयु बढती है और घटतीसे आयु घटती है।

सुख स्वास्थ्यका सूचक है और दुःख मौतका हलकारा है। परन्तु याद रहे कि दुःख बिलकुल बुरी चीज नहीं है। यह एक प्रकारसे हमारा बड़ा हितैषी है। यदि हमको कोई शारीरिक दुःख अथवा कष्ट होता है, तो हम तुरन्त जान जाते है कि हमने अवश्य किसी नियमका उल्लंघन किया है और किसी प्राकृतिक सिद्धान्तकी अवज्ञा की है। रोग क्या है? एक प्रकारसे हमारा निरीक्षक है, जो सदा हमारी अवस्थाकी जाँच करता रहता है। जहाँ हमने कोई गड़बड़ की, जरा भी असावधानी की, तुरन्त आकर हमें घेर लेता है और जोर जोरसे चिल्लाकर कहता है कि "यदि तुम सुख चाहते हो, तो अपनी अवस्थाको ठीक करो। प्रकृति माताकी शरणमें आओ, उसकी आज्ञाओं और शिक्षाओंका पालन करो" इससे मालूम होता है कि दुःख और रोग भी एक अपेक्षासे स्वास्थ्यके लिए उपकारी और हितकर हैं।

अतएव शारीरिक सुख अथवा स्वास्थ्यके लिए यह जरूरी है कि प्रकृतिके नियमोंका पूरी तरहसे पालन किया जाय। अब प्रश्न यह है कि वे नियम कौनसे है ? उनके जाननेके लिए प्रकृतिने हमको विवेक और बुद्धि दी है। यदि हम इनको काममे न लावे और अंधाधुंधीसे रहे तो परिणाम यह होगा कि हमको बीमार पड़ते देर न लगेगी। प्रकृति हमारी जरासी भी असावधानीको सहन नहीं कर सकती। यदि राज्यका कोई अपराध हमसे हो जाय, तो शायद हमको क्षमा भी मिल जाय; परन्तु प्रकृतिके दर्बारमे माफीका नाम नहीं। लाख चिल्लाओ, कोई सुननेवाला नहीं। कोई भी अपराध विना दडके खाली नही जाता। कुसूर करते देर लगती है, परतु सजा मिलते देर नहीं लगती। पाठकोंको यह पढकर आश्चर्य होगा, परंतु इसमें वाल वरावर भी झूठ नहीं है। प्रतिदिन हम इसे अपनी ऑखोसे देखते है। जहॉ किसी आलसी निरुद्योगी पुरुपने जरा अधिक खा लिया कि कब्ज और मंदाग्निरोग उसे तत्काल दवा लेते है। कोई चिकनी चीज खाकर पानी पीलो, तुरंत खॉसी हो जायगी। एक रात भी ओसमें सो जाओ तमाम वदनमे पीड़ा होने लगेगी। इसी तरह और अनेक रोग हो जाते है और इनकी वदौलत एक दिन मरना पड़ता है।

जिस तरह स्वास्थ्यसवंधी नियमोका पालन न करनेसे हमारे शरीरको दुःख पहुँचता है, उसी तरह हमारी सोसायटी या समाजको भी हानि पहुँचती है। प्लेग, हैजा वगैरेह महामारियॉ प्रायः उन्हीं घिचपिच मोहल्लो और गलियोंमें शुरू होती है, जो गन्दी और घिनावनी होती हैं। जहां न कभी धूप पहुँच पाती है और न साफ हवा। ऐसा वहुत कम सुननेमें आया होगा कि अमुक शहरमे प्लेग पहले उस मोहल्लेमें हुई, जहॉ अँगरेज लोग रहा करते हैं। जहॉ कहीं देखा और

सुना होगा, पहले उन्हीं मोहल्लेमें हुई, जहाँ कसाई, चमार वगैरह गंदा काम करनेवाली जातियाँ रहती है, अथवा जो इतने तंग और अँधेरे है कि वहाँ धूप और हवाका प्रवेश भी नहीं होने पाता। इन बीमारियोसे जितने आदमी मरते है, उन सबके कारण हम ही लोग है। यदि हम सफाईका खयाल रक्खें, तो इतने आदमी कभी नहीं मर सकते।

स्वास्थ्यके लिए सबसे आवश्यक चीज हवा है। हवाके बिना एक मिनिट भी जिंदा रहना असम्भव है। खाना और पानी चाहे न मिले; परन्तु हवाकी हर समय जरूरत रहती है। जहाँ जियादह आदमी रहते है, वहाँ यदि ताजी हवा हरघड़ी आती जाती न रहे, तो वहाँकी हवा विषैली हो जाती है। यदि हवाके आनेके लिए काफी खिड़कियाँ और दरीचे नहीं है तो हवा कारबोनिक हो जाती है। जो हवा शरीरमेसे एक बार निकलती है, यदि वही फेफड़ोमेंसे होकर दोबारा चली जाय, तो विषरूप हो जाती है। इस कारण साफ हवाकी बड़ी भारी आवश्यकता है। कितने ही आदमी साफ हवाके न मिलनेसे घबड़ाकर मर जाते है। कलकत्तेकी 'कालकोठरी'* का हाल आप लोगोने इतिहासमे पढ़ा ही होगा। वहाँके नवाब सिराजुद्दौलाने एक रातको १४६ अँगरेजोको एक बहुत छोटीसी तंग और अँधेरी कोठरीमे ठूँस दिया था। प्रातःकाल जब कोठरीका दर्वाजा खोला गया, तो केवल २३ आदमी जिन्दा निकले। वे भी अधमरे हो रहे थे। बाकी सब हवा न मिलनेके कारण घुटकर मर गये। ऐसे और भी अनेक उदाहरण मिलेगे इनकी सत्यतामे कुछ भी सन्देह नहीं। एक चूहेको एक बोतलमें बन्द

---

* ऐतिहासिकोंका मत है जो कि अब प्रायः निर्विवाद सिद्ध हो चुका है कि कलकत्तेकी 'काल-कोठरी' वाली घटना बिलकुल असत्य और कपोलकल्पित है।—प्रकाशक।

कर दो, ऊपरसे ऐसी डॉट लगा दो कि बोतलमें बिलकुल हवा न जाने पावे। थोड़ी देरके बाद चूहा मर जायगा।

अतएव साफ हवाका खयाल रहना प्रत्येक मनुष्यका सबसे पहला नियम और सबसे पहला कर्तव्य है। साफ हवा उसी समय मिल सकती है जब हमारे रहने, सोने, खाने पीनेके मकान बडे और खुले हुए हों। हरएक आदमीके लिए काफी जगह हो और प्रकाशके लिए काफी द्वार हो। खानेमे चाहे हम गेहूँ खायॅ चाहे चने, परन्तु रहनेके लिए वही मकान चाहिए जो साफ और सुथरा हो। चाहे हमे कितना ही किराया देना पड़े, पर मकान स्वास्थ्यप्रद हो। अच्छे घरसे ही हम मनुष्य कहला सकते है। सच पूछा जाय तो घर ही संसारमें सबसे अच्छा स्कूल है। यहीं पर बच्चा पैदा होता है और यहीं पर पलकर बड़ा होता है। यहॉकी प्रत्येक वस्तुका उस पर प्रभाव पड़ता है। यहॉके जलवायुसे उसका जीवन बनता है। यहॉकी सभ्यता और यहॉके आचरणसे ही उसका चारित्र गठित होता है। यदि यहॉकी हवा खराब है, मकान छोटा और गन्दा है, पड़ोसमे नीच जातिके मनुष्य रहते है, तो यहॉ पर जिस बच्चेका पालन होगा, वह कदापि स्वच्छ और निरोगी नहीं रह सकता। उसको मैले और गन्देमें रहनेका अभ्यास पड़ जायगा। वह रातादिन कारबोनिक हवाका ही सेवन करता रहेगा। परन्तु जैसा हम ऊपर कह आये है दण्डसे वह कभी नहीं बच सकेगा। वह जबतक जीता रहेगा, किसी न किसी रोगसे ग्रसित रहेगा। परन्तु इसके विपरीत जो बच्चा साफ सुथरे मकानमे पैदा होगा, जिसका स्वच्छ और निरोगी मनुष्योसे सम्बन्ध होगा, सभ्य और शिक्षित मातासे पालन होगा, वह कभी गन्दा और मैला न रहेगा। वह सदा शुद्ध जलवायुके कारण स्वस्थ और निरोगी रहेगा। कहनेका तात्पर्य यह है कि अच्छे

घरमे रहनेसे स्वास्थ्य अच्छा रहता है, आचरण सुधरते है और आयु दीर्घ होती है, परन्तु बुरे घरमे रहनेसे रोग सताते है, आचरण बिगड़ता है और आयु घटती है।

बच्चा घरमें माताकी गोदमे जो कुछ सीख लेता है वह उम्र भर कभी नहीं भूलता। जितनी आदतें होती है, वे सब उसी वक्त पड़ जाती है। हमको यह कहनेमें जरा भी संकोच नहीं होता है कि बच्चेमे जो बुरी आदते बालकपनमे हो जाती है, उनको बादमे छुडानेका उद्योग करना बिलकुल व्यर्थ जाता है। बच्चोके चरित्रका सुधारना स्कूलमास्टरोके हाथमे नहीं है। उनका एक प्रकारसे इस विपयमें कोई सम्बन्ध ही नहीं। बालकोके चरित्रगठनका काम केवल उनके माता पिता और उनके पास रहनेवाले भाई बहनो तथा अड़ोसी पड़ोसियोका है। स्कूलमें बच्चेको चाहे कितनी ही उच्च शिक्षा दी जाय, उच्चसे उच्च कक्षा क्यों न पास करा दी जाय; परन्तु यदि वह स्कूलसे पढ़कर शामको गन्दे, मैले, तंग और अँधेरे घरमे जाता है, तो उसकी सारी शिक्षा निरर्थक है। स्वास्थ्य और आचरण घरकी शिक्षा पर निर्भर है। यदि शुद्ध जलवायुके अभावसे अथवा असभ्यता और दुराचरणके कारण स्वास्थ्य और आचरण बिगड़ जाय, तो स्कूलमे प्राप्त की हुई शिक्षा भी लाभके स्थानमें हानिकर ही सिद्ध होगी। अतएव घरको केवल खाने और सोनेहीकी जगह न समझना चाहिए, किंतु वह स्थान समझना चाहिए जहाँ आत्मगौरवकी रक्षा होती है और सांसारिक सुखोकी प्राप्ति होती है। घरमे सुख उसी समय मिल सकता है और कुटुम्बियो और विशेपकर बालको पर उसी समय अच्छा प्रभाव पड़ता है जब वहाँ पर स्वच्छता और बुद्धिमत्ताका खयाल रक्खा जाता हो। उनका खयाल तब ही रक्खा जा सकता है, जब घरकी प्रबन्धिका गृहिणी स्वयं, स्वच्छ, नियमबद्ध, परि-

श्रम करनेवाली और शिक्षिता हो। घरका सुख दुःख केवल गृहिणी पर निर्भर है। यदि गृहिणी स्वच्छ है, तो घर अवश्य स्वच्छ रहेगा। परंतु इसके विपरीत यदि गृहिणी मूर्खा और गन्दी है, तो लाख यत्न करने पर भी स्वच्छ नहीं रह सकता। घर पूर्ण रूपसे स्त्रीके अधिकारमे है। पुरुष २४ घंटे घरमे नही रहता, परन्तु स्त्री आठो पहर वहीं रहती है। वह चाहे तो बिना किसी कष्टके बड़ी आसानीसे प्रत्येक वस्तुको साफ और सुथरी रख सकती है।

जबतक पृथक् पृथक् घर उन्नति न करे तबतक कोई जाति उन्नति नही कर सकती और घरकी उन्नति स्त्रीके हाथमे है। अतएव स्त्रियोंके लिए यह जानना बड़ा जरूरी है कि किस तरह अपने घर अच्छे रक्खे जा सकते है। यह जाननेके लिए शिक्षाकी जरूरत है। उनको शुरूसे ही स्वास्थ्यरक्षा और गृहप्रबन्धकी शिक्षा दिलाना आवश्यक है। जिससे वे बड़ी होकर योग्य रीतिसे अपने घरका प्रबन्ध कर सकें। परन्तु खेद है कि भारतवर्षमे इसकी ओर लोगोका लक्ष्य ही नहीं है। यहाँके लोग कुछ दिन पहले तो स्त्री-शिक्षाके कट्टर विरोधी थे। अब कुछ दिनोंसे विरोध तो प्रायः जाता रहा परन्तु प्रचारके लिए यथेष्ट उद्योग नही होता। कहनेके लिए अनेक कन्या-पाठशालाये है, परन्तु वास्तविक शिक्षा शायद ही कही दी जाती हो। जो अवस्था शिक्षाके लिए योग्य होती है, उस अवस्थामें यहाँ विवाह कर दिया जाता है। विवाह होते ही शिक्षाका द्वार एकदम बन्द हो जाता है। उस समय तक जो दो चार पुस्तके पढ ली जाती है, उन्हीं पर सन्तोप कर लिया जाता है। इस प्राप्त हुई शिक्षासे विशेष लाभ नही किन्तु कभी कभी हानि पहुँचती है। 'अर्द्धविद्या भयंकरी' होती है। यही कारण है कि भारतवर्षमें

अशिक्षित स्त्रियोकी अज्ञानता और असावधानीसे सैकड़ो घर दुःखमय हो रहे है; हजारो बच्चे गर्भहीमे मर जाते है और प्लेग, हैजा आदि महामारियाँ पीछा नहीं छोड़ती।

यद्यपि स्त्रियोकी अज्ञानतासे कितने ही कष्ट उठाने पड़ते है; परन्तु यदि विचार किया जाय तो स्त्रियोंकी अज्ञानताका कारण बेचारी स्त्रियाँ नहीं, किन्तु पुरुष है। वे ही इस ओर लक्ष्य नहीं देते। साधारण स्थितिके लोग यदि कुछ न करें, तो आश्चर्य नहीं, आश्चर्य तो उन पर है जो उच्चशिक्षा प्राप्त किये हुए है, सब कुछ सामर्थ्य रखते है, देश और समाजके नेता बनते है, परन्तु स्वयं अपनी लड़कियोकी आठ दस वर्षकी उमरमे ही शादी कर देते है। वे इस बात पर कभी विचार तक नहीं करते कि ये लड़कियाँ जिनको हम दूसरे घरोंमे वहाँका भार उठानेके लिए भेज रहे है, उस भारके उठानेके लिए समर्थ भी है या नहीं। परिणाम यह होता है कि वे दूसरे घरोमे जाकर अज्ञानताके कारण हास्य और निन्दाकी पात्र बनती है और घरका कुछ भी प्रबन्ध नहीं कर सकतीं। न स्वयं करना जानती है और न दूसरोसे कराना जानती है। थोड़ी ही अवस्थामे उन्हे प्रायः गर्भका असह्य भार उठाना पड़ता है। गर्भरक्षा और सन्तानपालन जैसे महान् कार्य उनके सिरपर आजाते है, जिनसे वे सर्वथा अनभिज्ञ है।

सन्तानपालन और स्वास्थ्यरक्षा साधारण काम नहीं है। इनके लिए बड़ी चतुर बुद्धिमती और शिक्षित स्त्रियोकी आवश्यकता है। हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी लड़कियोको शुरूसे ही इन बातोकी शिक्षा दें और उनको स्वच्छ जलवायुका सेवन करावे तथा अच्छे मकानोमे रक्खें। चाहे किराया कितना ही अधिक देना पड़े, चाहे कुछ हो, परन्तु रहनेका मकान जैसा हम ऊपर कह आये है साफ सुथरा और हवादार होना चाहिए।

बहुतसे आदमी बढिया मकानमें रहनेको फिजूलखर्ची समझा करते है, परन्तु यह उनकी बड़ी भूल है। जियादह किराया देकर अच्छे मकानमे रहना फिजूलखर्ची नहीं, किन्तु कमखर्ची है और इसके विपरीत थोड़े किरायेके गन्दे मकानमे रहना फिजूलखर्ची है और ऐसी फिजूलखर्ची है कि जिसमें रुपया भी नष्ट होता है, चिन्ता भी रहती है और जानके भी लाले पड़े रहते है। उदाहरणके लिए मान लो कि यदि खराब हवा और बदबूके कारण बीमारी आ गई, तो अच्छे मकानके किरायेसे कितना ही जियादह दवाई और डाक्टरोंकी फीसमें लग जायगा।

इसके सिवाय गन्दी हवामे रहनेसे एक और बड़ी भारी खराबी होती है। वह यह है कि कारबोनिक गैसकी अधिकतासे शरीर शिथिल पड़ जाता है और इन्द्रियॉ निर्बल हो जाती है। इनको उत्तेजित करनेके लिए—शरीरसे कड़े काम लेनेके लिए—प्रायः लोग अफीम गॉजा शराब वगैरह नशेकी चीजोका सेवन करने लगते है जिनसे तन, मन, धन, तीनो नष्ट होते है। एक दिनमे जितनेकी शराब या अफीम खर्च हो जाती है, उतना जियादह किराया देनेसे अच्छा मकान मिल सकता है, परन्तु इस पर कोई विचार नहीं करता। लोग रुपयेके लोभके कारण खराबसे खराब मकानमे रहना पसन्द कर लेते है, चाहे परिणाम कुछ भी हो। इस लोभका मुख्य कारण अज्ञानता है। अज्ञानताके कारण ही यहॉके लोग ऐसे मकान बनाते हैं कि जिनमे हवा और धूप भूलकर भी नहीं आने पाती। हम नही समझते कि ऐसे मकानोंके बनानेमे क्या लाभ होता है। खर्च कुछ कम नहीं होता, मेहनत भी कम नहीं लगती। यदि अच्छे खुले हवादार मकान बनाये जायँ, कुरसी ऊँची दी जाय, हर एक मकानमे हवाके लिए दरवाजे और

खिड़कियाँ रक्खी जायँ, तो जहाँतक हिसाब लगा कर देखा गया है, एक पाई भी जियादह खर्च न हो। कारण कि हवा और रोशनी जिनकी कि जरूरत है, बिना मूल्य ही मिलती है।

यद्यपि स्वास्थ्यरक्षाके नियमोका पुस्तको और व्याख्यानोद्वारा बहुत कुछ प्रचार किया गया है, परन्तु अभीतक लोगोंका इसकी ओर पूरा पूरा ध्यान आकर्षित नहीं हुआ। इसका कारण यदि विचार करके देखा जाय तो यही माळूम होगा कि यहाँके ग्रामीण लोग प्रायः इसके लाभोसे अपरिचित है और इसके नियमोंको बहुत कठिन समझते है। पर यह उनका केवल भ्रम है। स्वास्थ्यरक्षाके लिए कुछ खर्चकी जरूरत नहीं और कोई कठिनाई भी नहीं। केवल शुद्ध जलवायुकी जरूरत है और ये दोनो चीजें बिना मूल्य मिलती है। जहाँ कहीं मैल और गन्दगी हो तुरन्त पानी डाल कर साफ कर दो। जिस मकानमे हवाका मार्ग न हो, वहाँ दीवारमे एक छोटासा छेद कर दो। मकानके समान अपनी गली अपने शहर और अपने बदनका भी खयाल रक्खो। शरीरको साफ न रखनेसे सिरमें जूँ पड़ जाते हैं, बदनमे दाद और खुजली हो जाती है और गलियोंको साफ न रखनेसे प्लेग वगैरहके कीड़े पैदा हो जाते हैं अथवा मलेरिया बुखार फैल जाता है, जिससे हजारो आदमी प्रतिवर्ष मर जाते हैं।

बुरी गन्दी गलियोंमे रहनेसे केवल मलेरिया आदिका ही भय नहीं, किन्तु और भी बहुतसी बुराइयाँ पैदा हो जाती है। देखनेसे माळूम होता है कि ऐसी जगहमें रहनेवालोको गन्दगी और बदबूसे घृणा नहीं रहती। उन्हें रातदिन बुरे बुरे शब्द सुनने और लोगोको शराब पीकर बकते हुए देखनेका अभ्यास पड़ जाता है। उनके चारों ओर वे लोग रहते है, जिनका पेशा दुराचार है। ऐसी दशामें रहनेसे उनका आचरण

कभी ठीक नही रह सकता और उनका चरित्रगठन कदापि नहीं हो सकता। ऐसी जगहमें रहना मानो बालको और स्त्रियोंके चरित्रको जान बूझकर बिगाड़ना है।

शरीररक्षा आर चरित्रगठन तथा गृहसुख और सार्वजनिक (पब्लिक) सुखमे घनिष्ठ सम्बन्ध है। बुरी गन्दी जगहमे रहनेसे चरित्र पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। वह प्लेगसे भी अधिक हानिकर है। ताजी हवाके न मिलनेसे अथवा बदन साफ न रहनेसे बदन ही कमजोर नही होता, किन्तु दिल भी गिर जाता है और कोई मानसिक उन्नति नही हो सकती। आत्मसम्मान नष्ट हो जाता है। बुरी बुरी वासनायें चित्तमे पैदा होने लगती है, आचरण बिगड़ जाते है, मन चंचल हो जाता है। कभी शराब पीनेको जी चाहता है और कभी व्यभिचारकी इच्छा होती है। इसी तरह पाप और दुराचार दिन दिन बढता जाता है।

स्वास्थ्यरक्षाके नियमोका पालन न करनेसे क्या अमीर, क्या गरीब, प्रत्येकको आर्थिक दण्ड भी भोगना पड़ता है। अमीरोंको उन अनाथो विधवाओकी रक्षार्थ चन्दे देने पडते है, जिनके माता पिता और रक्षक हैजे वगैरहमे अचानक मर जाते है। बीमारीमें भी उनका बहुत खर्च पड़ता है। क्योंकि रोग गरीबोके घरोसे निकलकर अमीरोंके घरोमे जाता है और किसी न किसीको उसकी भेट होना पड़ता है। इसके अतिरिक्त कितना ही रुपया औपधालयो, अनाथाश्रमो और विधवाश्रमोमे खर्च करना पड़ता है। गरीबोको भी कुछ कम खर्च नहीं करना पड़ता। यदि अमीरोका धन खर्च होता है तो गरीवोंकी जान जाती है। यही उन बेचारोके लिए सबसे बड़ा धन है। यही उनका सर्वस्व है। इसी पर सब कुछ निर्भर है और यदि वह ही चला गया, तो उनका सब कुछ खो गया।

इस पर भी यह देखकर बड़ा आश्चर्य होता है कि लोग स्वास्थ्यर-
क्षाकी कोई चिन्ता नहीं करते। यद्यपि स्वास्थ्यरक्षा और आरोग्यताके
लिए बड़े बड़े शहरोमे म्यूनीसिपाल्टियाँ है, लेकिन म्यूनीसिपाल्टियोकी
गलियो और सड़को तक ही पहुँच है। वे गलियोकी गन्दगी और
मैलेपनको तो दूर करा सकती है, परन्तु अन्दर घरोमे उनकी पहुँच
नहीं। घरोंमे जो मलमूत्रके स्थान है, अथवा गाय भैस बाँधनेके
मकान है, अथवा वर्तन भाँडे साफ करनेके स्थल है, वे इतने गन्दे
और मैले रहते है कि यदि कोई अच्छे साफ हवादार मकानमे रहने-
वाला मनुष्य वहाँसे निकल जाय, तो दुर्गन्धके कारण उसका साँस
घुट जाय। इन स्थलोंकी सफाई म्यूनीसिपाल्टियोके अधिकारसे बाहर
है। इनको साफ रखना इन रहनेवालोका काम है। यदि वे इस ओर
ध्यान न दें, तो केवल अपनेको ही हानि नहीं पहुँचाते किन्तु तमाम
मोहल्लेवालो और धीरे धीरे तमाम शहरवालोको हानि पहुँचाते है।
एक शहरमे बीमारी होनेसे दूसरे शहरमे फैल जाती है। दूसरेसे
तीसरेमे और तीसरेसे चौथेमे, इस तरह एक आदमीकी असावधानी
और गन्देपनसे सारे समाज और सारे देशको हानि पहुँचती है।
परन्तु यदि प्रत्येक व्यक्ति सफाई और तन्दुरुस्तीका खयाल रक्खे, तो
कहीं बीमारीका नाम भी सुनाई न दे। बीमारीके कारण हम ही है।
जितने भयंकर रोग है, उन सबके छोटे छोटे कीड़े होते है जो
शरीरमें प्रवेश करके शरीरको विषरूप कर देते है। संसार भरके
डाक्टर इस बात पर सहमत है कि ये कीड़े गन्दी, और बदबूदार हवासे
पैदा होते है। गन्दगी और बदबू हमारी ही बेपरवाही और मैलेपनसे
फैलती है। यदि हम हरएक चीजको सफाईसे रक्खें—बदनको, कपड़ोको,
मकानको, माल-असबाबको साफ रक्खें, कहीं कूड़ा-करकट इकट्ठा —

होने दें, बदबू न होने दे, कोई चलितरस, अभक्ष्य पदार्थ न खावें; तो कभी भी बीमारी न हो।

इन बातोका खयाल रखना कोई कठिन बात नहीं। यह केवल हमारी इच्छा और प्रतिज्ञा पर निर्भर है। यदि हम दृढ संकल्प कर ले, तो कुछ भी कठिन नही। बिना सकल्प और प्रतिज्ञाके कुछ नहीं हो सकता। चाहे हमको कितना ही अच्छा मकान मिले, साफ सुथरा और हवादार भी हो, परन्तु यदि हमारी आदत सफाईकी नहीं, हमको स्वच्छतासे प्रेम नहीं, हमारी स्त्री मैली और फूहड़ है, तो हम उसको भी थोड़े ही दिनोंमे खराब कर देंगे। शराबी, जुआरी, फिजूलखर्च आदमी अच्छेसे अच्छे महलको भी डरावना और घिनौना बना देगा परन्तु इसके विपरीत यदि खराबसे खराब मकान भी उस आदमीको दिया जाय जो कमखर्च और मेहनती है और जिसकी आदतमे सफाई है, तो वह उसे भी अपनी मेहनत और शौकसे साफ सुथरा और अच्छा बना लेगा।

जब मकानका अच्छा बुरा बनाना उसमें रहने वालोंके हाथमे है, तब उनका कर्तव्य है कि अपने और दूसरोंके फायदेके लिए मैलेपनकी आदतको छोड़कर सफाईकी आदत डाले। इसमें संदेह नहीं कि जिन लोगोंकी आदत शुरूसे मैलेपनकी पड़ गई है, उनको सफाई एकदम नहीं भा सकती; परंतु यह अवश्य है कि यदि वे उद्योग करे तो बहुत जल्दी सीख सकते है। शुरूमे कठिनाई होगी, परन्तु थोड़े दिनोमे ही सफाईका शौक हो जायगा—जरासा मैलापन भी न दिखलाई देगा।

सबसे जियादह जरूरी यह है कि बच्चोको शुरूसे ही सफाईका अभ्यास कराया जाय। इसके लिए पुस्तकोंकी जरूरत नहीं, केवल नमूनेकी जरूरत है। कोई बुरी मैली और गन्दी चीज उनके सामने

न आना चाहिए, वे स्वयं मैलेपनसे घृणा करने लगेंगे। बच्चोंको बोलना कौन सिखाता है? इंग्लैंडके बच्चे अँगरेजी और हिंदुस्तानके बच्चे हिंदुस्तानी किस भाँति सीख जाते है? जैसा उनके माता, पिता, भाई बहिन बोलते है, वैसा ही वे भी बोलने लगते है। इसी प्रकार यदि वे आपको साफ सुथरा देखेंगे, मैल और बदबूसे घृणा करते देखेंगे, हररोज कपड़ों और घरोंको साफ होते देखेंगे, आपको स्नान करते, हाथ पैर धोते हुए देखेंगे, तो वे भी आप जैसे हो जायँगे।

किसीने क्या ही अच्छा कहा है कि "सफाई तन्दुरुस्तीकी जड़ है। मितव्ययता, सदाचार और आत्मसम्मानकी कल है। जिस घरमे सफाई है, वह सदा सुखी और निरोगी है और जिसमे मैलापन है, वह दुःखी और रोगी है। सफाईमे भलाई और आराम है, मैलेपनमें बुराई और तकलीफ है। सफाई सभ्यताकी सूचक है और उन्नतिका द्वार है। मैलापन असभ्यताका सूचक और अवनतिका कारण है। सफाईसे मन पवित्र होता है और मैलेपनसे अपवित्र हो जाता है।"

शरीर आत्माका मन्दिर है। उसमे आत्मा विराजमान है। आत्माका पवित्रताके लिए शरीरका पवित्र होना आवश्यक है। बिना शरीरकी पवित्रताके आत्माका शुद्ध होना दुस्साध्य है। इसी कारण देवदर्शन पूजापाठ आदिके पूर्व शौचादिसे निवृत्त होना आवश्यक है। जहाँ देखिए वहींके मन्दिरों, मसजिदोंमे कुए बने हुए है। ये इसी लिए बनाये गये है कि पूजा प्रार्थना करनेके पहले शरीरको शुद्ध करना योग्य है। कोई हिन्दू बिना स्नान किये पूजा नहीं कर सकता है और कोई मुसलमान बिना हाथ, पैर मुँह धोये नमाज नहीं पढ सकता। धर्मशास्त्रोमे आत्मशुद्धताके लिए शरीरशुद्धताकी आवश्यकता दिखलाई है।

क्योंकि बिना शरीरकी शुद्धिके मन शुद्ध नहीं हो सकता और मनकी शुद्धिके बिना आत्माकी शुद्धि नहीं हो सकती।

इस लिए अन्तमें फिर कहा जाता है कि सफाई एक मुख्य चीज है। स्वास्थ्यरक्षा, सन्तानपालन, आत्मसम्मान तथा गृहप्रबन्धके लिए प्रत्येक मनुष्यको और विशेषकर प्रत्येक गृहिणीको इसका अभ्यास करना चाहिए। रहने सहने, खाने पीने वगैरह हरएक काममे इसका खयाल रखना चाहिए। इसके विना स्वप्नमें भी सुख नहीं मिल सकता।

परन्तु इस देशमे स्त्रियोको बहुत ही तुच्छ दृष्टिसे देखा जाता है। उनके पढाने लिखानेमे एक पैसा भी खर्च नहीं किया जाता। यह सरासर भूल है। शिक्षा क्या स्त्री क्या पुरुष सबके लिए जरूरी है, बल्कि स्त्रियोके लिए तो और भी जरूरी है। पुरुष यदि न पढ़े तो अधिक हानि नहीं, परन्तु यदि स्त्रियॉ न पढें तो वे कदापि गृहप्रबन्ध और सन्तान पालन जैसे महत् कार्योंका सम्पादन योग्य रीतिसे नहीं कर सकतीं। शिक्षिता स्त्रियोंकी सन्तान ही स्वच्छ और निरोगी रह सकती है और संसारमे कुछ करके दिखला सकती है। यह प्रत्यक्ष देखनेमें आता है कि शिक्षिता माताओंकी सन्तान प्रायः शिक्षित होती है। उनको प्रारंभसे ही शिक्षा, विद्या और स्वच्छतासे स्वाभाविक प्रेम होता है। परन्तु इसके विपरीत अशिक्षिता माताकी सन्तान बहुत कम सभ्य और शिक्षित होती है।

धन प्राप्त करनेकी इच्छा प्रत्येक मनुष्यमें पाई जाती है और वास्तवमे जीवनके लिए धनकी बड़ी आवश्यकता है। परतु धनका मूल श्रम है। अर्थात् श्रमसे—मेहनत करनेसे धन प्राप्त होता है और मेहनत भी तभी हो सकती है जब स्वास्थ्य अच्छा हो। अतएव स्वास्थ्य सबसे बढ़कर है। सब उन्नतियोंसे पहले स्वास्थ्यलाभ करना आवश्यक है। स्वास्थ्यके विना-

किसी प्रकारकी उन्नति नहीं की जा सकती। इस लिए स्वास्थ्यलाभके नियमों पर प्रत्येक व्यक्तिको ध्यान देना चाहिए।

पन्द्रहवाँ अध्याय।
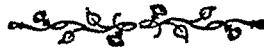
सुखी जीवन।

(विद्वानोंके वाक्य।)

गुण कर्मसे मनुष्यको ऊँच नीच समझो। उत्तम कुलमे उत्पन्न होनेसे कोई उत्तम नही कहला सकता। उत्तम वही है, जो उत्तम कार्य करता है—चाहे नीच कुलमें ही उत्पन्न हुआ हो।

उत्तम स्वभाववाले मनुष्यकी सेवा करना श्रेष्ठ है, चाहे वह दारिद्र ही क्यों न हो। वह समय अवश्य आयगा, जब वह तुम्हें तुम्हारे कामोंका बदला देगा।

जो चीज तुम्हे नहीं मिल सकती, ऐसा प्रयत्न करो कि उसका अभाव तुम्हारे हृदयके उल्लासको नष्ट न करे।

*   *   *   *

जिस तरह संसारमे और अनेक कार्य है, उसी तरह सुखपूर्वक जीना भी एक महान् कार्य है। इसका करना उतना ही कठिन है, जितना किसी गूढ विपयका अध्ययन करना अथवा और कोई चातुर्यका कार्य करना। प्रत्येक वस्तुका सदुपयोग करना और जीवनके उच्चतम उद्देश्यकी पूर्ति करना सुखीजीवन पर ही निर्भर है।

सुखपूर्वक रहनेके लिए कुछ कम बुद्धिकी जरूरत नहीं है। यद्यपि यह गुण किसी किसी मनुष्यमे स्वाभाविक होता है, तथापि इसका

अभ्यास प्रत्येक व्यक्ति कर सकता है। माता पिता तथा अध्यापकोंके द्वारा बालकोंके हृदयमें इसका संस्कार बाल्यावस्थामें ही करा दिया जा सकता है और अभ्यास और आचरण द्वारा समय पाकर इसका पूर्ण ज्ञान हो सकता है। परन्तु विना बुद्धिके यह ज्ञान कदापि स्थिर नहीं रह सकता।

संसारमे सुख चिन्तामणि रत्नके समान ऐसा दुर्लभ नहीं है कि इसके लिए इच्छा करना अथवा इसकी प्राप्तिके लिए उद्योग करना ही निष्फल हो। नही, यह ऐसे अनेक छोटे छोटे रत्नोका सग्रह है, जो एक साथ जुड़े हुए है और देखनेमें सुंदर माद्धम होते है। हमारे जीवन-मार्गमे चारो ओर पग पग पर जहाँ देखिए वहाँ ही साधारणसे साधारण घटनाओमे भी सुख व्याप्त है। उनसे आनंदित होना ही परम सुख है। परतु हम किसी महान् सुखकी प्राप्तिकी जोहमे लगे रहते है और उन साधारण पदार्थोंमे रहनेवाले सुखकी ओर ध्यान भी नहीं देते। इसका परिणाम यह होता है कि हमको कोई भी सुख नहीं मिलता। इसी कारण हम सदा दुखी रहते है। वास्तवमे छोटे छोटे कामोको कर्तव्य और आनंदका कारण मानकर रहनेमे ही सुख है।

जो मनुष्य जीवनको आनंदपूर्वक व्यतीत करना जानता है, उसको कभी दुःख नहीं होता। वह सदा हर्षित और प्रसन्नचित्त रहता है। प्रकृति उसके लिए सदा सुदरतासे परिपूर्ण रहती है। वह वर्तमानको देखकर, भूतका स्मरण करके और भविष्यका अनुमान करके प्रसन्न होता रहता है। वह अच्छी तरह जानता है कि जीवन अमूल्य पदार्थ है। उसको सार्थक बनानेके लिए विवेकानुसार आनंदपूर्वक कर्तव्यपालनकी जरूरत है। वह निरन्तर अपनी उन्नति करता रहता है तथा पतित और असहाय मनुष्योको उपदेश द्वारा उत्साहित करता और यथाशक्ति धनसे उनकी

सहायता करता रहता है। वह प्रत्येक उन्नतिके कार्यमे योग देता है और परोपकारसे मुँह कभी नहीं मोड़ता। उसका सम्पूर्ण समय अपनी और दूसरोकी उन्नातिके विचारमे ही व्यय होता है। वह कभी हताश नहीं होता। वह आपत्तियोको प्रसन्नतासे सहन कर लेता है। आपत्तियाँ उसके कार्यमे बाधक नहीं होतीं, उलटा उसको सदा उत्तेजित करती रहती है। उसकी बुद्धिका दिनोदिन विकाश होता जाता है और उसका अनुभव बढता जाता है। वह प्रत्येक पदार्थमें प्रतिदिन एक अपूर्व आनंदका अनुभव करता है। चौबीस घंटोमें उसको क्षणभरके लिए भी दुःख नहीं होता। उसका जीवन सच्चा सुखी जीवन है। न उसे इस बातकी इच्छा है कि लोग मेरी प्रशंसा करे और न इस बातकी चाह है कि मरने पर लोग मेरे लिए स्मारक स्थापित करे। मृत्युका भी उसे डर नहीं। वह बडी प्रसन्नतासे उसका स्वागत करता है और मृत्युके आने पर हर्षपूर्वक उसकी गोदमे सो जाता है। लोग उसके उपकारोका स्मरण किया करते है और वह स्मरण ही मानो उसका स्मारक होता है। उसके आदर्शजीवनसे लोगों पर जो प्रभाव पड़ता है, वही मानों उसकी प्रशंसा है।

एक वह मनुष्य है जिसका जीवन दुःखसे परिपूर्ण है। रात दिनमें क्षण भरको भी उसे सुख नहीं। समस्त संसार उसकी दृष्टिमें शून्य है। किसी चीजसे भी उसको आनंद नहीं मिलता। उसकी आनंदानुभवकी शक्ति ही मानों सर्वथा नष्ट हो गई है। यद्यपि रुपया बहुत है, तो भी उसका मन प्रसन्न नहीं होता। भ्रमण उसको अच्छा नहीं लगता और प्रकृतिके दृश्य उसको प्यारे नहीं लगते। यदि उसको कभी पहाड़ों या जंगलोंमें जानेका अवसर मिलता है, तो वह एक वेगारसी समझता है और यह ख्याल करके कि यह सफर नी

काटना ही है ज्यों त्यों करके समयको बिता देता है। जब जवानीमें ही उसका यह हाल है, तब बुढापेके विषयमें तो कहा ही क्या जाय। यद्यपि उस समय उसको जिंदगी भारी माल्म होती है, परंतु फिर भी वह मरना नहीं चाहता—मौतसे वह सदा डरता रहता है। अचानक मौत आजाती है और उसकी अतुल्य लक्ष्मीकी कुछ भी परवा न करके उसको हवाकी तरह उड़ा ले जाती है। इस तरह यद्यपि उसके पास धन बहुत था, तो भी सुखी जीवनके सिद्धांतोंसे अपरिचित होनेके कारण उसको सफलता न हुई।

जीवनको आनन्दमय बनानेके लिए रुपया आवश्यक नहीं है। इसके लिए प्रत्येक पदार्थको देखकर उससे आनन्द प्राप्त करनेकी शक्ति होना चाहिए। हमारे सामने ऐसे सैकड़ो पदार्थ विद्यमान है, जिनसे हम आनन्दानुभव कर सकते है। परन्तु हमारे नेत्र और हमारा हृदय उक्त शक्तिसे शून्य है और इस कारण वे हमारी दृष्टिमें रूखे और फीके माल्म होते है। आनन्दानुभव शक्तिके होते हुए एक क्षण भी दुःख और चिन्तामे नहीं बीत सकता। निर्धनसे निर्धन भी अपनेको महान् सुखी समझता है। वास्तवमे सुखी वे ही है जिनको कोई चिन्ता नहीं, जो प्रत्येक पदार्थमे एक अनुपम सौन्दर्यका अनुभव करते है और जो सदा पवित्र विचार और उच्च वासनाओंसे अपने मनको प्रसन्न रखते है। ऐसे मनुष्य बड़े परिश्रमी साहसी और उद्योगी होते है। वे अपने अथक उद्योगसे घरकी छोटी छोटी चीजोंको भी ऐसी अच्छी तरह रखते है कि सदा उन्हें देखकर प्रसन्न होते है। उनके घरमे जाकर देखिए, सब चीजे ठीक ठीक जगह पर सफाईसे रक्खी होगी। कहीं कूड़ा-करकट नामको भी न होगा। कपड़े साफ और सुफेद होंगे। बर्तन चॉदी सोनेके समान चमकते होगे। सम्भव है कि उनके कमरोंमे दस बीस तसवीरें

न हों, बढ़िया बढ़िया मेज कुरसियाँ न हों, नीचे चादरें-गलीचे न बिछे हों, परन्तु जो कुछ भी होगा, वह साफ़ सुथरा होगा। यदि एक भी तसवीर होगी, तो वही देखनेमें सुन्दर और प्रिय मालूम होगी। फर्श यदि बोरिये या चटाईका भी होगा, तो भी वह साफ़ होगा।

सुखी जीवन घरकी छोटी छोटी बातों पर निर्भर है। खाना सादा और जल्दी पचनेवाला हो, गरिष्ठ न हो। हवा साफ़ आती हो, मकानोंसे नमी न हो, धूप आती हो, कूड़ा-करकट न पड़ा हो, सफाई रहती हो।

जैसा हम पिछले अध्यायोंमें कह आये हैं, सुख और स्वास्थ्यके लिए सफ़ाई बहुत ही जरूरी चीज है। सफाईमे जियादह रुपया खर्च नहीं होता, सिर्फ़ खयाल रखनेकी जरूरत है। देखा जाता है कि बहुतसे आदमी जिनकी आमदनी पचास रुपयेकी भी नहीं, उनसे कहीं अच्छे रहते हैं जिनकी आमदनी डेढसौ या दो सौ रुपयोंकी है। इसका कारण यही है कि पहले आदमीके घरमे सफाईका खयाल रक्खा जाता है, परन्तु पिछलेके घरमें इसकी कोई परवा नहीं की जाती। पहले घरके बच्चे सदा अच्छा खाते पीते हैं, साफ़ सुथरे रहते है और उत्तम शिक्षा पाते हैं; वह स्वयं आनंदपूर्वक रहता है, कभी कोई चीज उधार नहीं लेता, कभी बिना जरूरतकी चीज नहीं खरीदता, उपयोगी सार्वजनिक कार्योंमें योग देता है, अनेक संस्थाओंका सभासद है और अनेक समाचार पत्रोंका ग्राहक है। परन्तु पिछला पुरुष अधिक आमदनी होते हुए भी सदा तंगहाल रहता है। महीनेकी बीस तारीख होने नहीं पाती कि उसकी जेब खाली हो जाती है और किसी तरह जल्दी जल्दी समय जैसा अमूल्य पदार्थ पूरा हो जाय, इसीका खयाल रखता है। उसके बच्चे बुरेहाल रहते है। यद्यपि उन्हें कपड़े बढ़िया बढ़िया पहिनाये जाते हैं, परन्तु सफाईकी ओर ध्यान न होनेसे वे

उन्हे जल्द खराब कर देते है । यद्यपि मकानोंमे दरियॉ बिछाई जाती है, परन्तु वे जल्द मैली कुचैली हो जाती है । लेम्प जलाये जाते है, परन्तु असावधानीके कारण उनकी चिमनियॉ हर रोज टूटा करती है । इन्हीं बातोमें फिजूल खर्च होता है । इस फिजूलखर्चीका कारण एक मात्र बेपरवाही है । ऐसे आदमी ससारमे कभी बड़े नही हो सकते । चाहे उनकी आमदनी कितनी ही हो जाय, परन्तु वे सदा दुखी रहेंगे । सुख उन्हे स्वप्नमे भी नहीं मिल सकता । ससारमे सुख तो सभी चाहते है, परन्तु असल बात यह है कि सुखी रहनेके उपाय सब नहीं जानते। सुखपूर्वक रहना कोई आसान बात नहीं है । इसके लिए गहरे ज्ञान और अनुभवकी जरूरत है । परतु यह कोई कठिन बात भी नहीं है । मनुष्य मात्रका कर्तव्य है कि वह सुखी रहनेके उपाय सीखे ।

लोगोंका यह खयाल कि ससारमे दुःख है, ठीक नहीं है । सुख दुःख हमारे अधीन है । हम चाहे तो स्वर्गको नरक कर दे और नरकको स्वर्ग बना दे । सुख दुःखका अनुभव करना मनका काम है और मन हमारे अधिकारमे है । हम चाहे तो अपने विचारोको शुद्ध रख सकते है, इद्रियोको वशमे कर सकते है, हृदयको पवित्र कर सकते है, कपायोंको शमन कर सकते है, शिक्षासे अव्यक्त गुणोंका विकाश कर सकते है, समीचीन ग्रन्थोका स्वाध्याय कर सकते है और सद्गुणोकी प्राप्ति भी कर सकते है ।

सुखी जीवनका सच्चा और सबसे अच्छा दृष्टात घरमें मिल सकता है । वह घर कदापि फला फूला नहीं कहला सकता—उस घरकी कभी बढती नहीं हो सकती, जिसमे सुख और शाति न हो । जहॉ सदा झगड़ा-टटा रहता हो, मैला कुचैला पड़ा रहता हो और आलस फैला रहता हो, वहॉ न तो पुरुप ही सुखी रह सकता है और न स्त्री

ही। दोनोंका जीवन निष्फल और दुःखप्रद होता है। वह पुरुष—जो दिन भर दफ्तर या कारखानेमे कड़ा परिश्रम करता है—यही आशा करता है कि शामको घर पर आराम मिलेगा और इसी आशा पर उस श्रमकी कोई परवा नही करता। वड़ेसे वड़ा आराम जो उसकी पत्नी उसको दे सकती है यही है कि उसके घर आनेसे पहले पहले उसके लिए मकानको साफ और सुथरा करके रक्खे और अच्छा खाना वना कर तैयार रक्खे। यही गृहिणीका कर्तव्य है—इसीका नाम गृहप्रबन्ध है—इसीको मितव्ययता कहते है। इसीसे वह घर ऐसा सुखी हो जाता है कि गृहस्वामी घर पर आते ही सब दुःख भूल जाता है और अपने मनमे समझता है कि मानो मै स्वर्गमे आ गया; फिर उसे कोई भी लोभ वहाँसे नही हटा सकता।

ऐसे घरको ही सुखी घर कहते है। वे लोग वड़े दुखी है, जिनके घर नहीं। परन्तु उनसे भी जियादह दुखी वे है, जिनके घरमे सुख नहीं। घरके लिए सुख ऐसा ही जरूरी है जैसे शरीरके लिए आत्मा। जैसे विना आत्माके शरीर नहीं रह सकता, वैसे ही विना सुखके घर नहीं रह सकता।

केवल वढिया सामान और अच्छे अच्छे खाद्य पदार्थोंसे ही सुख नहीं होता। सुखके लिए स्वच्छता और मितव्ययता चाहिए। संक्षेपमें गृहशासन और गृहप्रवन्ध भी सुखके लिए वहुत आवश्यक है। सुख वह भूमि है जिसमें मनुष्य वृद्धिको प्राप्त होता है और शारीरिक तथा मानसिक दोनों प्रकारकी उन्नति करता है। सुख वास्तवमें अनेक गुणोकी जड़ है।

ऐसे सुखके लिए धनकी जरूरत नहीं। भोगविलासके लिए रुपयेकी जरूरत हुआ करती है, किंतु सुख और भोगविलासमें आकाश पाताल-

का अन्तर है। वह घर सुखी है, जिसमे जरूरतकी तमाम चीजे पाई जाती हो और जिसका प्रबन्ध किसी स्वच्छ स्वस्थ मितव्ययी गृहिणीके द्वारा होता हो—चाहे वह किसी साधारण पुरुषका ही क्यो न हो। प्रायः रुपयेके अभावसे इतना दुःख नहीं होता, जितना गृहप्रबंधकी अनभिज्ञतामे होता है।

यह निश्चय करके नही कहा जा सकता कि सुख किन किन चीजोसे होता है। जिस चीजसे एकको सुख होता है सम्भव है कि उसीसे दूसरेको दुःख होता हो। सुख मनुष्यो पर भी उतना ही निर्भर है जितना कि पदार्थों पर।

सुखी मनुष्य सरलस्वभावी और दयालु होते है। दयालुता सुखका एक आवश्यक अग है। क्षमा, शान्ति, सहानुभूति और प्रत्येक पदार्थको उपयोगमे लानेकी शक्ति उसके साधारण उपाग है। कहावत है कि जहाँ प्रेम है, वहाँकी सूखी रोटी भी उस जगहके माल मलीदोसे अच्छी है जहाँ अरति और द्वेष है। सुखी मनुष्य विचारशील, दूरदर्शी और मितव्ययी होते है। उनको न्याय और सत्यसे स्वभावतः प्रेम होता है। वे कदापि ऋण नहीं लेते। सदा आमदसे कम खर्च करते है और आगेके लिए कुछ बचाकर रख छोडते है। वे जरूरी चीजोके लिए कजूसी नहीं करते और समय आने पर पीछे नहीं हटते। वे जो कुछ करते है, वह किसी दिखलावेके लिए नहीं करते। वे सदा नियमपूर्वक कार्य करत है। सुखपूर्वक खाते पहनते है। न जाडेमे ठिठुरते है और न गर्मियोंमे पसीनोसे सराबोर होते है। स्वास्थ्यरक्षाके लिए जिस चीजकी जरूरत होती है चाहे वह कितने ही मूल्यकी हो, उसे खरीद लेते है। परन्तु फिजूल चीजको चाहे वह सस्ती ही क्यो न हो भूलकर भी नही लेते। स्वास्थ्योपयोगी खाने पहननेमे उन्हे खर्च करते बुरा नहीं मालूम होता,

किन्तु फिजूलकी तुलायशी चीजों पर एक पैसा खर्च करते हुए भी उनका दिल दुखता है।

घरका प्रबन्ध प्रायः स्त्रीके हाथसे होता है। वह घरकी मालिकिन होती है। घरका सुख उस पर अर्थात् उसके स्वभाव, उसके प्रबन्ध और उसके कार्य पर निर्भर होता है। अतएव इस बातकी बड़ी जरूरत है कि स्त्री पुरुषका आपसमें मेल हो। वे एक दूसरेके सहायक हों। एकके विचारों और कार्योंका दूसरा अनुमोदक और समर्थक हो। अकेला पुरुष कुछ नहीं कर सकता। वह भले ही मितव्ययी हो, परन्तु उसकी मितव्ययता कुछ भी कार्यकारी नहीं हो सकती, यदि उसकी स्त्री भी उसके समान मितव्ययी न हो। कहावत है कि कोई पुरुष उन्नति नहीं कर सकता, जब तक उसकी स्त्री उसको उन्नति नहीं करने देती।

यह कहनेकी जरूरत नहीं कि गृहप्रबन्ध कितना उपयोगी और लाभदायक है। इससे अनेक पुरुषोंको सुख मिलता है, पृथक् पृथक् व्यक्तिको लाभ होता है और परम्परासे समस्त जातिको लाभ पहुँचता है। सुखसम्पादनके लिए इससे बढ़कर और कोई उपाय संसारमें नहीं है। इसके विना समस्त नियम, उपनियम, दान और उदारता व्यर्थ और निष्फल है।

वह मनुष्य कितनी प्रसन्नतासे अपने काम पर जाता है और कितना आनन्दित होता हुआ वहाँसे शामको घर लौटता है, जिसके घरमें एक चतुर विदुषी और प्रबन्धिका स्त्री है—जो घरकी आमद- ठीक ठीक हिसाब रखती है और प्रत्येक कार्यको देख भालकर है। ऐसी स्त्रीसे केवल उसी घरको लाभ नहीं पहुँचता, किन्तु सब औरतें उसका अनुकरण करने लगती हैं और उसको

समझती है। उसके बच्चोंकी आदतें ठीक उसीके सदृश होती हैं और उनका जीवन उसीके जीवनके आधार पर बनता है। क्योंकि कहनेसे कर दिखाना जियादह असर रखता है। यद्यपि वह किसीसे कुछ नहीं कहती, तथापि उसका जीवन ऐसा नियमपूर्वक और शांतिसे बीतता है कि लोग उसे देखकर स्वयमेव उसका अनुकरण करने लगते है।

अतएव स्त्रीके लिए सबसे प्रथम और आवश्यक बात यह है कि वह अपने हाथो और ॲगुलियोको ठीक ठीक तौरसे काममे लाना सीखे। क्योकि बहुतसे काम उसे इन्हींसे करना होते है। यह सर्व-साधारणको विदित है कि गृहसुखके लिए चतुर प्रबन्धिका स्त्रीकी कितनी आवश्यकता है। एक विद्वान्का कथन है कि स्त्रीकी आधी शिक्षा उसके हाथो द्वारा होती है। अर्थात् सीना पिरोना, खाना बनाना वगैरह जितने कार्य स्त्रियोको करने होते है, वे प्रायः हाथोसे ही होते है। इसके कहनेकी कोई जरूरत नहीं कि बुद्धि और मितव्ययताके साथ रहना आवश्यक है। स्त्रीको केवल हाथोके काममे ही चतुर न होना चाहिए, किन्तु उसमे गृहप्रबन्धकी योग्यताका होना भी जरूरी है।

दूसरा गुण जो स्त्रियोके लिए जरूरी है वह यह है कि प्रत्येक कार्यके करनेके लिए कोई विधि या व्यवस्था होनी चाहिए। स्त्रियॉ प्रायः इस गुणसे शून्य होती है। वे काम तो बहुत करती है किन्तु किसी नियम या आधार पर नहीं, जो करती है, अंधाधुंध करती है। वे समयकी भी कोई कदर नहीं करतीं। अमुक काम कितनी देरमे होना चाहिए, अमुक काम कब होना चाहिए, पहले कौन काम करना चाहिए, किस समय क्या करना चाहिए, इत्यादि बातोका उन्हे कोई विचार नहीं ता। यद्यपि ये बड़े भारी दोष है, परन्तु ये सब शिक्षा और अभ्याससे

दूर हो सकते हैं। प्रत्येक पिता और पतिका मुख्य कर्तव्य है कि जितनी जल्दी हो सके वह अपनी कन्या और स्त्रीमेसे इन दोषोको दूर कर दे।

घरके प्रबन्धके लिए व्यवस्थाकी बड़ी भारी जरूरत है। घर ही क्या संसारके सभी कार्योंके लिए व्यवस्थाकी जरूरत है। बिना व्यव-स्थाके कोई काम ही नहीं चल सकता। कामका विभाग करनेसे, हरएक कामको ठीक समय पर करनेसे बहुतसा काम हो सकता है और बहुतसा समय बच सकता है। विना व्यवस्थाके काम करनेसे बहुतसा समय नष्ट हो जाता है और काम भी होता नहीं दीखता—आलस कुछ भी नहीं करने देता। परन्तु जब प्रत्येक कार्यके करनेका नियम बँधा हो और समय नियत हो, तो वह कार्य स्वयमेव हो जाता है। समय उसको विना प्रेरणाके स्वयं करा लेता है। रुपयेके जमा खर्च करनेमें भी नियमकी जरूरत है। नियम न होनेसे किसी किसीके हाथमेसे तो रुपया इस तरह उड़ता है जैसे कपूर। हम पहले बतला चुके है कि पुरुष कितने फिजूलखर्च होते है। स्त्रियाँ भी कुछ कम फिजूलखर्च नही होतीं। सौ पीछे दसको भी यह मालूम नहीं होता कि हम अपनी आमदनीको किस तरह खर्च करे। हमको क्या चीज खरीदना चाहिए और किस चीजकी आशा हमे छोड़नी चाहिए, कौन चीज हमको मिल सकती है और कौनसी चीज हमारे लिए जरूरी है। हमारे देशकी स्त्रियोंको प्रायः इस बातका खयाल भी नही होता। चाहे किसीके स्वामीकी पचास रुपयेकी आमदनी हो, किसीके स्वामीकी सौकी और किसीके पतिकी दसकी, परन्तु उनकी स्त्रियाँ प्रायः यही चाहती हैं कि हम समान रूपसे रहें। यदि अमुक स्त्रीके पास सोनेके कड़े हैं, अमुक स्त्रीके गलेमे जड़ाऊ गुलूबन्द है, तो मेरे पास भी वे ही चीजें होनी चाहिए। यदि अमुक स्त्रीने अपनी लड़कीके विवाहमें इतना दहेज दिया,

तो मै भी इतना ही दूँ। इस फिजूलखर्चीके कारण यह देश दिनों दिन निर्धन होता जाता है।

स्त्रीके लिए परिश्रम जरूरी चीज है। परिश्रम कामकी जान है। परन्तु बिना व्यवस्थाके परिश्रम कुछ कार्यकारी नहीं है। वह स्त्री जो निरा परिश्रम ही करती है, कभी कभी घबरा जाती है, परन्तु जो परिश्रमके साथ साथ व्यवस्थाका भी ध्यान रखती है और नियमानुसार चलती है वह बिना किसी घबराहटके शान्तिके साथ हरएक कामको कर लेती है।

गृहप्रबन्धके लिए परिश्रमके अतिरिक्त और भी कई बातोंकी जरूरत है। दूरदर्शिताका होना बड़ा जरूरी है। यह गुण बड़े विचार और अनुभवसे प्राप्त होता है। इसका अर्थ ही बुद्धिमत्ता है। इसके द्वारा ही हमको योग्य अयोग्य, हेय उपादेयका ज्ञान होता है। क्या करना चाहिए और कैसे और कब करना चाहिए, ये बाते इसीसे मालूम होती है। यह प्रत्येक कार्यके लिये समय और व्यवस्था नियत कर देता है। यह गुण ज्ञान और अनुभवसे बढता है। इसका अभ्यास करना प्रत्येक गृहिणीका कर्तव्य है।

दूसरा गुण जो स्त्रीके लिए आवश्यक है वह यह है कि हरएक काम नियत समय पर किया जाय और एक मिनिट भी व्यर्थ न खोया जाय। यदि इस नियमकी ओर तनिक भी लक्ष्य दिया जाय, तो अनेक आपत्तियॉ जो देरमे खाने, देरमे सोने, देरमे उठने वगैरह असमय काम करनेसे होती है, बहुत जल्द दूर हो सकती है। जो स्त्री समयका आदर नहीं करती, अपने वचनोको पूरा नहीं करती, वह सबकी दृष्टिमें गिर जाती है। उसके कारण उसके घरवालोका बहुतसा समय नष्ट होता है। वह उनके कार्यों, उनके संकल्पो और उनके विचारोमे

बाधक होती है, उनके लिए दुःखका कारण बन जाती है। समय कोई साधारण वस्तु नहीं है। समय अमूल्य वस्तु है। इसका आदर करना—इसको उपयोगमें लाना स्त्री मात्रका कर्तव्य है। यह सुख, शांति और वृद्धिका मूल कारण है।

स्त्रीमे साहस और दृढ़प्रतिज्ञाकी भी अत्यन्त आवश्यकता है। जिस बातका निश्चय करो, जो नियम स्थिर करो और जो व्यवस्था स्थापित करो, उसपर सदा दृढ रहो। बिना कारणके कदापि उससे विमुख न होओ। चाहे शुरूमे कठिनाई माल्रम हो, परन्तु इसकी कोई परवा न करो। धीरताके साथ उसे किये जाओ और शुद्ध अंतःकरणसे उसका पालन किये जाओ। एक दिन तुमको उसका फल अवश्य मिलेगा।

जीवनको आनदमय बनानेके लिए और भी कई उपाय है। अपने स्वभावको वशमे करना यह भी एक महान् उपाय है। ऐसा करनेसे जितनी बुरी वासनाये है, वे सब नष्ट हो जायँगी और वासनाओका नष्ट होना ही वास्तविक सुख है। व्यर्थ वासनाओने ही हमको दुखी कर रक्खा है।

क्षमा, प्रफुल्लता और दयालुतासे हम जब चाहे तभी आनन्दित हो सकते है। इच्छामात्रकी देरी है। केवल इनसे हम अपने ही लिए नहीं किन्तु हम अपने चारो ओर औरोके लिए भी आनन्दवृष्टि कर सकते हैं। हम अपनेमे और अपने निकटवर्तियोमें आनन्ददायक विचारोंको प्रकाश कर सकते है, अपनी इच्छाओको शुद्ध कर सकते है और सभ्य भापा और सभ्यताके नियमोका प्रचार कर सकते है।

सभ्यता भी एक अमूल्य गुण है। जिस व्यक्तिमें इसका अभाव है मानो उसमे मनुष्यत्वका भी अभाव है। सभ्यतासे ही मनुष्यकी पह चान है। यद्यपि और गुण भी आवश्यक है; परन्तु सभ्यताके विना

सब व्यर्थ है। असभ्य पुरुष चाहे कितना ही शुद्धहृदय और सदाचारी हो; परन्तु सभ्यताके अभावसे उसके सर्वगुण ढक जाते है। सभ्यतासे मनुष्य सर्वप्रिय और प्रसन्नचित्त रहता है। अतएव गृहिणीके लिए इस बातकी बड़ी आवश्यकता है कि वह सभ्यतासे विभूषित हो। उसके भाव, उसके शब्द और उसके कार्य सम्पूर्ण सभ्यतानुकूल हो। यह स्मरण रखना चाहिए कि सच्ची सभ्यता वही है जिसमे शिष्टाचार और प्रीतिपूर्ण व्यवहार हो।

सभ्यतासे ही जेटलमेन या सभ्य पुरुषकी पहचान होती है। जो सभ्यताका व्यवहार करता है, वह इस बातका प्रमाण देता है कि मैं उच्चकुलमे उत्पन्न हुआ हूँ। परन्तु इसका धन-सम्पदासे कुछ सम्बन्ध नही है। एक धनवान् निर्धनसे निर्धनके साथ भी इसका व्यवहार कर सकता है। इसमे कुछ खर्च नहीं होता। बिना कौड़ी पैसा खर्चे इसका व्यवहार किया जा सकता है। परन्तु बात यह है कि इसको सीखना पड़ता है। कुछ आदमी तो जन्महीसे सभ्य पैदा होते है। परन्तु अधिक आदमी इससे शून्य होते है। अतएव बाल्यावस्थामे ही बालकोको इसका अभ्यास करा देना आवश्यक है और इसके लिए सबसे उत्तम उपाय यह है कि बालकके माता-पिता, भाई-बन्धु तथा गुरु स्वय उदाहरणस्वरूप बनकर उसे सिखलावे। इस विषयकी कोई किताब पढानेकी आवश्यकता नहीं है। केवल नमूना बनकर उसको दिखा देनेकी जरूरत है।

केवल धनिकोके लिए ही सभ्यताका अभ्यास करना आवश्यक नहीं है; इसकी आवश्यकता मनुष्य मात्रके लिए है। हमको सदैव दूसरोके साथ-चाहे वे किसी स्थिति और किसी जातिके मनुष्य हों-शिष्टतापूर्वक व्यवहार करना उचित है। इस विषयमे हमको फ्रान्स-निवासियोसे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। वहाँके लोग एक दूसरेसे

केवल मित्रताका ही व्यवहार नहीं करते—उनके भावोंका ही आदर सत्कार नहीं करते, किन्तु एक दूसरेकी चीजकी रक्षा करना भी अपना कर्त्तव्य समझते है। वहाँके बालकोको प्रारम्भसे ही शिष्टताका अभ्यास कराया जाता है। क्या स्वदेशी, क्या विदेशी वे सबके साथ मित्रके समान व्यवहार करते है। भूलकर भी कभी किसीसे कठोर शब्द नहीं कहते। वहाँकी भूमि मानो सभ्यताकी खानि है। ऊँचेसे नीचे तक, बूढेसे बच्चे तक प्रत्येक व्यक्तिमे सभ्यता कूट कूट कर भरी रहती है। उनके भाव, उनके वचन, उनके काम सम्पूर्ण सभ्य और परिष्कृत होते है। शोक है कि भारतवर्षमे इस गुणकी बहुत कमी हो गई है। जो देश कभी सभ्यशिरोमणि समझा जाता था, वहीं अब सभ्यताकी ओर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। स्वयं माता पिता ही अपने बालकोको असभ्यताका पाठ पढाया करते है। किसका आदर करना, किसके प्रति मैत्रीभाव रखना, किस असहाय मनुष्यकी रक्षा करना, किसके साथ मीठे शब्द बोलना, किसीका जी न दुखाना इन गुणोकी प्रायः शिक्षा ही नहीं दी जाती। बालक प्रारम्भसे अपने घरोमे अपने माता पिता भाई वन्धुओंको इन गुणोसे विपरीत चलते देखते है, इसलिए वे भी बड़े होकर उन्हींके अनुयायी हो जाते है। इसी कारण हमारी दिन पर दिन अवनति होती है। यदि हमको अपनी उन्नति अभीष्ट है, तो हमे चाहिए कि हम सभ्यताको ग्रहण करे और प्रारम्भसे ही अपनी सन्तानको इसका अभ्यास करावे।

सभ्यताका हम अपने जीवनमे समय समय पर उपयोग कर सकते है। खाते पीते, उठते बैठते, चलते फिरते, घर पर, स्कूलमें, आफिसमे अदालतमें, सर्वत्र प्रत्येक कार्यमें इसका व्यवहार हो सकता है। यदि हमारे अन्तरंगमे दूसरोको अपने प्रिय शब्दों और भावोसे प्रसन्न कर-

नेकी तनिक भी इच्छा हो, तो प्रत्येक कार्यमे सभ्यताका प्रयोग कर-नेकी सहजहीमे आदत हो जायगी। दूसरोके साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करनेसे केवल उनको ही प्रसन्नता नहीं होती, किन्तु उससे दसगुणी अधिक प्रसन्नता स्वय प्रेमपूर्वक व्यवहार करनेवालोंको होती है। यदि हम कोई जरासा भी दयालुता व सभ्यताका कार्य करते है, तो हमारे हृदयमे उसी समय एक प्रकारका आनन्द होता है। यदि कोई वृद्ध पुरुष आ जाता है और हम नम्रतासे खड़े होकर उसको आदर सत्का-रसे स्थान देते है, तो यद्यपि यह देखनेमे एक तुच्छ कार्य है, किन्तु इससे हमारे हृदयमें स्वयमेव एक अपूर्व आनन्द उत्पन्न होता है। दूसरोंको भी हमारी सभ्यतासे आनन्द होता है और वे हमारा आदर करने लगते है।

केवल छोटोको बड़ोके साथ अथवा सेवकको स्वामीके साथ किंवा शिष्यको गुरुके साथ ही इस शिष्टताका व्यवहार न करना चाहिए, किन्तु मनुष्यमात्रको मनुष्यमात्रके साथ इसका अभ्यास करना चाहिए। साधा-रण स्थितिके लोगोंको तो—जिन्हे सदैव एक दूसरेसे काम पड़ता रहता है—इस पर पूरा ध्यान देना चाहिए। सभ्य मनुष्यका सब कोई आदर करेगे और शनैः शनैः उसका अनुकरण करने लगेगे। वेजामिन फ्रैंक-लिनका नाम प्रायः सबने सुना होगा। वे शुरूमें एक कारखानेमे एक साधारण पद पर नियत थे। उन्होंने उस अवस्थामे ही अपनी सभ्य-तासे सम्पूर्ण कर्मचारियों और कार्यकर्त्ताओंको मुग्ध कर लिया था।

सभ्यता और शिष्टाचारके अतिरिक्त भाँतिभाँतिके आमोद—प्रमोदोसे भी पवित्र और निष्पाप आनन्दकी प्राप्ति होती है। एक ही कामको कोई व्यक्ति सदा नहीं किये जा सकता। मनोविनोद विश्राम और व्यायामके लिए भी कुछ समय अवश्य होना चाहिए। लोग प्रायः

तो हानिकर कार्योंमे तुम्हारी प्रवृत्ति हो जायगी—वह रुक नहीं सकती। इसीकी पुष्टिमें एक अनुभवी विद्वानका कथन है कि यदि तुम बुराईको दूर करना चाहते हो, तो उसके स्थानमे कोई भलाईको प्रचलित करो।

आजकल शराबकी क्यो बढ़ती हो रही है? क्यों इसका दिन पर दिन प्रचार बढता जा रहा है? इसका मूल कारण यही है कि मनुष्योको अन्तरङ्गकी इच्छाकी पूर्तिके लिए कोई पवित्र और उपयोगी अवसर दिलबहलावका नहीं है। इसके कारण साधारण स्थितिके मनुष्योकी वह अन्तरंग इच्छा प्रायः सफल नहीं होती और शराब वगैरहकी तरफ़ झुक जाती है। किसी समय जर्मनीमे शराबका प्रचार बहुत बढ गया था, परन्तु अब विशेषकर शिक्षा और सगीतशास्त्रके फैलावसे बिल्कुल घट गया है और वहाँके निवासी बड़े ही संयमी समझे जाने लगे है। भारतवर्षसे भी यदि शराबको दूर करना है, तो समस्त देशहितैपियोको शिक्षादि उत्तम उपयोगी बातोका प्रचार करना उचित है। मद्यनिवारिणी सभाओको भी इस ओर ध्यान देना चाहिए। यद्यपि उनके उपदेशोसे लोग नशा छोडते जाते है, परन्तु यदि पाँच छोडते है, तो सात ग्रहण भी करते जाते है। कमी कुछ नहीं होती। पीनेवालोकी सख्या दिनपर दिन बढती जाती है, दूकाने नित्य नई नई खुलती जाती है और ठेके भी बढते जाते है। अएतव उनका कर्त्तव्य है कि वे शिक्षा संगीतादिका प्रचार करे, जिससे जनसाधारण अवकाश मिलने पर अपने समयको गाने बजाने और समाचारादि पढनेमें लगा सके।

सगीतविद्याका परिणाम बडा ही कोमल और हृदयग्राही होता है। जनसाधारणके आचरण सुधारनेके लिए इस विद्याका अभ्यास करना आवश्यक है। यह प्रत्येक गृहमें आनन्दका कारण है। इससे घरमें

एक प्रकारका नया जीवन आजाता है। गोदका बालक भी इसकी मधुर तान और सुरसे फूल उठता है और गद्गद होकर हँसने लगता है। युद्धमे ऐसा बाजा बजता है कि मुर्देसे मुर्देके दिलमे भी जोश आ जाता है और वह एकदम कमर कसकर खड़ा हो जाता है। बाबा मत्तीके विषयमे लिखा है कि वे गानविद्याके द्वारा ही लोगोसे नशा छुड़ाया करते थे। उन्होने समस्त आयलैंड देशमे सङ्गीतसभाये स्थापित की थी। उनका विचार था कि जब हम लोगोसे शराब लेते अर्थात् छुड़ाते है, तब उसके स्थानमे कोई उपयोगी मनोरंजक उत्तेजन भी उन्हे देना चाहिए। अतएव उन्होने लोगोको संगीतविद्या सिखलाई और स्थान स्थान पर संगीतकक्षाये खुलवाई। हमारा भी कर्त्तव्य है कि हम उनका अनुकरण करे और उनके समान संगीतविद्याका प्रचार करे। प्रत्येक पाठशालामे इसको शिक्षाक्रममे रक्खे। बालकोको प्रारम्भसे ही इसका अभ्यास करावे। प्रत्येक घरमे इसकी ध्वनि सुनाई दे। जिस प्रकार जर्मननिवासी अपने अवकाशके समयको गाने बजानेमे व्यय करते है, उसी प्रकार हमको भी करना चाहिए। इससे सारा समय आनन्दमे ही व्यतीत होगा—क्षण मात्रको भी उदासी न होगी। परन्तु शोक है कि इससे भारतवासियोकी रुचि हट गई है। आजकलके शिक्षितोका विचार है कि संगीतविद्या हानिकर है। परन्तु यह उनकी सर्वथा भूल है। संगीतविद्या एक बहुत ही उत्तम विद्या है। पहले यहाँ भी इसका बहुत आदर और प्रचार था। राज-दरबारोमे बड़े बड़े संगीतरत्न गांधर्व रहा करते थे। अकबरके दरबारमे तानसेन कितने प्रसिद्ध थे। इस विद्यामे निपुणता प्राप्त करना महान् प्रतिष्ठाका कारण समझा जाता था। स्त्रियोको तो इसकी शिक्षा खासतौरसे दी जाती थी। आजकल इसका एक तरहसे अभावसा हो गया है। इसी कारण जनसाधारण इसके ला-

ओंसे अनभिज्ञ हो गये है। इसके सिवा कुछ मूर्खोंने इसके वास्तविक गुण न समझकर इसका दुरुपयोग कर रक्खा है, जिसका परिणाम अवश्य हानिकर हो रहा है। वास्तवमे यह सर्वश्रेष्ठ विद्या है। देवो द्वारा भी यह पूज्य है। हर्षका विषय है कि कुछ समयसे अब फिर यहाँ भी इसकी चर्चा चली है। भारतगौरव गानाचार्य पडित विष्णु दिगम्बरजी इस विषयमें पूर्णरूपसे उद्योग कर रहे है, तथा महिलारत्न सत्यबाला देवीजी स्त्रियोंमे इसका कुछ प्रकाश कर रही है। आशा है कि भारतवासी उनकी शिक्षासे यथेष्ट लाभ उठायॅगे।

इस आनन्दके अतिरिक्त प्रकृतिने हमारे चारो ओर ऐसे अनुपम सुन्दर पदार्थोंको उत्पन्न कर रक्खा है कि उनके देखने मात्रसे हमारे हृदयमे आह्लाद हो आता है। शोभा किसको प्यारी नहीं? सुन्दरता किसको मोहित नही कर लेती? हम जिधर दृष्टि पसार कर देखेंगे, सुन्दर सुगन्धित पुष्पोके ढेरके ढेर मिलेगे। साधारणसे साधारण फूलमे एक निराली ही छटा होगी। गुलाब कितना साधारण फूल है; परन्तु इसको सब कोई फूलोंमे सर्वश्रेष्ठ कहते है। कवियोने गुलाबके फूलको हॅसता हुआ फूल कहा है। वास्तवमे है भी यह ऐसा ही। इसको देखते ही हृदय खिल उठता है। यह सुन्दरताकी साक्षात् मूर्ति है। इसी प्रकार और भी एकसे एक बढकर पुष्प है। प्रकृतिने सारी सुन्दरता इन्हींमे रख दी है। ससारमें इनसे अधिक सुन्दर शायद ही और कोई पदार्थ हो। यदि ये न होते, तो ससार सुन्दरतासे विहीन रहता। किसी साधारण फूलको ले लीजिए। जरा उसकी पत्तियो और पँखुड़ियोको देखिए। कितने रंग है, कैसी सुगन्धि है और कैसी कोमलता है। एकको बागमेंसे तोड़कर कमरेमें ले आइए। जान पड़ेगा कि मानो आप सूर्यकी एक किरणको उठा लाये है। उसे जरा किसी बीमारको दिख-

लाइए। देखते ही उसका उदास और अशान्त चित्त प्रसन्न हो जायगा। फूल क्या है मानों आनन्द-वृष्टिके बूँद है। मानो वे उद्यानके पहरेदार है और यह कहते माळूम होते है कि वहाँ चलो जहाँ हम रहते है—जहाँ हम फले-फूले है, हमे देखकर तुम्हारा हृदय प्रफुल्लित हो जायगा।

फूलोसे जियादह पवित्र कौन होगा? वे नन्हे नन्हे निष्पाप बालकोंके सदृश है, पवित्रता और सत्यताके चित्र है और पवित्र, निष्कपटहृदय मनुष्योंके लिए आनन्दके द्वार है। जिसको फूलोसे आनंद नहीं होता और बच्चोकी बोली मीठी नहीं लगती, उसका हृदय ही शून्य है, वह जीवित अवस्थामें ही मानो मृतक है। राजासे रंक तक, बूढेसे बच्चे तक, कोई भी हो—जिसमे तनिक भी जविन है—वह प्रत्येक फूलको देखकर अपने मनमे फूला नहीं समाता। प्रसिद्ध कवि वर्डस्वर्थने लिखा है कि, "तुच्छसे तुच्छ फूल भी हमारे लिए शिक्षा और नीतिका भाण्डार है।"

फूल कोई बहुमूल्य पदार्थ नहीं। उसमे खर्च अधिक नहीं होता; परन्तु उससे जो आनन्द होता है, वह बहुत अधिक, अकथनीय है। उससे वायु शुद्ध होती है, स्थान सुन्दर माळूम होता है, आँखे ठंडी होतीं है और सूर्यका प्रकाश दुगुना हो जाता है। फूलोंसे कभी घृणा नहीं होती। वे सदा ही प्रसन्नताके कारण होते है। अतएव फूलोंको तुच्छ दृष्टिसे न देखो, उनका सदुपयोग करो। प्रकृतिने उनको तुम्हारे आनन्दके लिए उत्पन्न किया है, अतएव उनसे यथेष्ट लाभ उठाओ। इस विचारसे कि वे सस्ते है—उनमे कुछ खर्च नहीं होता, उनका दुरुपयोग मत करो। संसारमे ऐसे अनेक पदार्थ हैं जिनमें कुछ खर्च नहीं होता, परन्तु वे बड़े उपयोगी और आवश्यक हैं। यदि प्रकृति हम पर दया करके उनको अधिकतासे उत्पन्न न करती तो हम लाखों रुपयोंमें भी उनका मिल जाना सस्ता समझते। प्रकृतिमें अनेक पदार्थ ऐसे सुन्दर और शोभायुक्त है कि उन्हे देखकर हम बहुत कुछ आनन्द प्राप्त कर सकते है। परन्तु दुःखके साथ लि-

खना पड़ता है कि हम उनसे आधा भी आनन्द प्राप्त नहीं करते। यद्यपि हमारे नेत्र खुले रहते है, परन्तु सच पूछो तो वे वन्दसे भी गिरे हुए है। हम जहॉ जाते है ऑख मीच कर जाते है। सुन्दर पदार्थों-को भी नहीं देखते। हममे देखने और देखकर आनन्दित होनेकी मानो शक्ति ही नहीं है। यदि हम जरा भी ऑख खोलकर देखे तो चारों तरफ आनन्ददायक पदार्थ दिखाई देगे। संसारमे ही स्वर्गका आनन्द मिल जायगा। हममे प्रेम और ज्ञानकी वड़ी आवश्यकता है। इन्हींके अभावसे हमे आनन्दानुभव नहीं होता। नहीं तो प्रत्येक पदार्थ आनन्दसे परिपूर्ण है। साफ सुथरा मकान चाहे छोटा ही क्यो न हो, उसमे दो चार ऐसी खिड़कियॉ हो कि जिनमेसे सूर्यकी किरणे पहुँच सके—दस वीस नीति या उपदेशकी पुस्तके, महापुरुषोके जीवनचरित और देश-देशातरोके इतिहास, इन सव आनन्ददायक पदार्थोंको प्रत्येक गृहस्थ आसानीसे इकट्ठा कर सकता है। ये ही उसके लिए हर्ष और आनन्दके कारण हो सकते है।

प्रकृतिकी सुन्दरतामें तो किसीको संशय नहीं, प्रत्येक विचारशील मनुष्य प्रकृति देवीका हृदयसे उपासक होता है। चित्रोमे भी कुछ कम सुन्दरता नहीं होती। आजकल ज्ञान-विज्ञानके वलसे अनेक साधन ऐसे निकल आये है कि जिनके द्वारा भॉति भॉतिके चित्र सुलभतासे तैयार हो जाते है। ये चित्र कुछ कम सुन्दर नहीं होते। इनसे कुछ कम शिक्षा नहीं मिलती। विचारशीलके लिए ये वड़े उपयोगी और शिक्षाप्रद होते है। इन चित्रोंसे मकानोको अवश्य सजाना चाहिए। इनका देखकर मन प्रफुल्लित हो जाता है और हृदय आनन्दसे भीग जाता है। किसी सज्जन महापुरुषका चित्र देखते ही हमें उसका तत्काल स्मरण हो आता है। मानो उसके गुणोकी मूर्ति वनकर हमारे ऑखोंके आगे फिरने लगती है। किसी वीर पुरुषका चित्र देखकर हममे वीरताका भाव पैदा हो जाता है। किसी त्यागी वैरागी महात्माका फोटू

देखते ही हमारे परिणाम भी वैराग्यरूप हो जाते है । बच्चो पर चित्रोंका बड़ा प्रभाव पड़ता है । यदि उनको प्रारम्भसे वीर पुरुषोके चित्र दिखलाये जायँ और उनके चरित सुनाये जायॅ, तो वे बड़े होकर अवश्य उनका अनुकरण करेगे । यदि इसके विपरीत उनको कायर और निर्बल पुरुषोंके चित्र दिखलाये जायँ, तो वे बड़े होकर वैसे ही कायर और निर्बल हुए बिना न रहेंगे ।

अतएव प्रत्येक घरमे विद्वान् बलवान् और सज्जनपुरुषोंके चित्र तथा प्रकृतिके सुन्दर दृश्योंके फोटू अवश्य होने चाहिए । वे हमारा चरित्र सुधारनेमे बहुत बड़ी सहायता देगे । उन्हे देखकर किसी बुरे कामके करनेका कभी साहस ही न होगा । यह जरूरी नहीं है कि चित्र बहु-मूल्य हो; नहीं, केवल सुन्दर और उत्तम हो । ये दोनो गुण एक पैसेकी तसबीरमे भी पाये जाते है ।

जीवन इसी प्रकार और भी अनेक उपायोसे आनन्दपूर्ण बन सकता है । साराश यह है कि प्रत्येक पदार्थको उपयोगमे लाओ, किसीको भी तुच्छ न समझो । साधारणसे साधारण पदार्थ भी अत्यन्त उपयोगी और आवश्यक है । प्रकृतिकी हृदयसे उपासना करो । उसके सुन्दर, अनुपम दृश्योंको आँख खोलकर देखो । कृतिका भी यथेष्ट आदर करो । प्रेम और प्रीतिका व्यवहार करो । ऐसा करनेसे तुमको भी आनन्द मिलेगा और दूसरोंको भी प्रसन्नता होगी । तुम अधम मनुष्योकी श्रेणीसे निकलकर उच्चश्रेणी पर चढ़ जाओगे, उच्चतम परब्रह्म परमात्माके सदृश होनेकी भावना करने लगोगे, और अन्तमें संसारसे निकलकर मोक्षमें जा विराजोगे—जहाँ किसी भी प्रकारकी आकुलता नहीं, केवल उत्कृष्ट सुख और आनन्दकी परिपूर्णता है ।
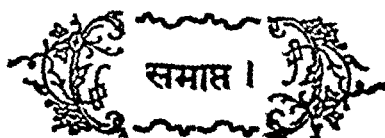
बहुमूल्य वचन ।
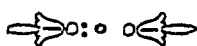
(१)

" If thou art rich, thou art poor,
For, like an ass whose back with ingots bows,
Thou bear'st thy heavy riches but a journey—
And death unloads thee—"

(Shakespeare.)

यदि तुम्हारे पास धन है, परन्तु तुम उसको अच्छी तरह खर्च करना नही जानते तो वह धन तुम्हारे सिर पर एक तरहका बोझा है जो मरते समय ही उतरेगा ।

—शेक्सपियर ।

(२)

I care not much for gold or land,
Give a mortgage here and there,
Some good bank stock–some note of hand,
Or trifling railway share,
I only ask that Fortune send,
A little more than I can spend

(Oliver Wendell Holmes.)

चाहे जो मिले और चाहे जितना मिले, मुझे इसकी परवा नही । मैं केवल यह चाहता हूँ कि मुझे खर्चसे कुछ जियादह मिल जाया करे ।

—ऑलीवर वेंडल होलमेज ।

(३)

Be thrifty, but not covetous, therefore give
Thy need, thine honour, and thy friend his due,
Never was seraper brave man, Get to live,
Then live, and use it, else it is not true

That thou hast gotten surely use alone
Make money not a cotemptible.

(George Herbet.)

मितव्ययी बनो, पर कजूस कभी मत बनो। अपनी आवश्यकताको पूरी करो, प्रतिष्ठाको सुरिक्षित रक्खो, मित्रोके साथ भलाई करो, रुपया पैदा करो और उसका सदुपयोग करो। सदुपयोग ही रुपयेको कार्यकारी और उपयोगी बना देता है, नही तो रुपया बहुत घृणित और तुच्छ पदार्थ है।

—जॉर्ज हर्बट।

(४)

To catch Dame Fortunes golden smile
Assiduous wait upon her.
And gather gear by every wile
That's justified by Honour;
Not for to hide it in hedge
Not for a train attendant:
But for the glorious privilege
Of being Independent.

(Robert Burns.)

रुपयेको ईमानदारीके साथ जिस तरह हो सके उत्तम उपायोंसे ही पैदा करो; परन्तु यह सदैव याद रक्खो कि वह रुपया जमीनमे गाड़नेके लिए अथवा बाहरी टीमटाममे फिजूल खर्च करनेके लिए नहीं है, वह है स्वतन्त्रतासे सुख-पूर्वक जीवन व्यतीत करनेके लिए।

—रॉबर्ट बर्न्स।

(५)

अर्थदूषणः कुबेरोऽपि भवति भिक्षाभाजनम्।
अतिव्ययोऽपात्रव्ययश्च भवत्यर्थदूषणम्॥

—नीतिवाक्यामृत।

अपार धनशाली कुबेर भी यदि आमदनीसे अधिक खर्च करे और अपात्रोंमें खर्च करे, तो एक दिन भिखारी हो जाय।

(७)

यस्य हस्ते धनं स जयति।
धनहीनः कलत्रेणापि परित्यज्यते किं पुनर्नान्यैः ॥

—नी० वा०।

जिसके हाथमें धन है दुनियामे उसीकी जीत है। धनहीनको औरोंकी तो बात ही क्या उसकी स्त्री भी छोड देती है।

(८)

स सदैव दुःखदुःस्थितो यो मूलधनमसंवर्द्धयन्ननुभवति।

—नी० वा०।

जो मूलधन या पूँजीको बिना बढाये हुए खाता है वह सदा ही दुखी रहता है-उसकी स्थिति कभी नही सुधरती।

* * * *

कभी निराश न होओ।

श्रमके विना ससारमे कोई चीज पैदा नही हो सकती।

जो अपनी सारी आमदनी खर्च कर डालता है, वह वहुत जल्दी भूखों मरने लगता है।

'गया वक्त फिर हाथ आता नही।'

श्रम, सयम और मितव्ययताका अभ्यास करो।

अगर तुम एक रुपया कमाते हो, तो उसमेसे बारह आनेसे जियादह कभी खर्च मत करो।

ईश्वर उन्हीकी सहायता करता है, जो स्वय अपनी सहायता करते हैं।

आजका काम कल पर मत छोड़ो।

सत्यको कभी न छोडो। असत्यको मनवचनकायपूर्वक बिलकुल छोड दो।

आदर्श कहानी ।

—••:○:••—

एक मच्छर जाड़ेके दिनोंमे सरदी और भूखसे तंग आकर शहदकी मक्खियोके पास गया और बोला,—"कृपा करके मुझे थोड़ासा मधु (शहद) दे दो; मै भूखक मारे मरा जाता हूँ ।" यह सुनकर एक मक्खीने पूछा,—"तुमने सारी गर्मी कैसे बिता दी ? उन दिनोमे तुमने जाड़ेके लिए एकट्ठा करके क्यों न रक्खा ?" मच्छरने उत्तर दिया,—"मैने सारी गर्मी इधर उधर घूमने और गाने बजानेमे बिता दी, उस समय जाड़ेका कुछ खयाल ही न किया ।" इस पर मक्खीने कहा, "आप अपना रास्ता लीजिए । हमारा नियम दूसरा है। हम गर्मीमे कड़ी मेहनत करते है और जाड़ेके लिए जमा करके रखते है । जो गर्मीमे कुछ नहीं करते, केवल इधर उधर निठल्ले फिरा करते है, उनको जाड़ेमें भूखो मरना ही चाहिए ।"

अर्थ-समुद्देश ।
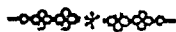
यतः सर्वप्रयोजनसिद्धिः सोऽर्थः । सोऽर्थस्य भाजनं योऽर्थानुबन्धेनार्थ-मनुभवति । अलब्धलाभो लब्धपरीक्षणं रक्षितविवर्धनं चेत्यर्थानुबन्धाः । तीर्थमर्थेनासम्भावयन्मधुछत्रमिव सर्वात्मना विनश्यति । धर्मसमवायिनः कार्यसमवायिनश्च पुरुषाः तीर्थम् । तादात्विक–मूलहर–कदर्येषु नासुलभः प्रत्यवायः । य किमप्यासञ्चित्योत्पन्नमर्थमपव्ययति स तादात्विकः । य पितृपैतामहमन्यायेनानुभवति स मूलहरः । यो भृत्यात्मपीडाभ्यामर्थं सञ्चिनोति स कदर्यः । तादात्विकमूलहरयोरायत्यां नास्ति कल्याणम् । कदर्यस्यार्थसंग्रहो राजदायादतस्कराणामन्यतमस्य निधिः ।

—श्रीसोमदेवसूरिकृतनीतिवाक्यामृतस्य ।

जिससे मनुष्यके समस्त प्रयोजनोंकी सिद्धि हो सकती है–सारी जरूरतें मिट जाती हैं, उसे अर्थ या **धन** कहते हैं । धनका पात्र अथवा अधिकारी वही हो सकता है, जो धनको अर्थानुवन्धपूर्वक भोगता है । धनका कमाना, कमाये हुए धनकी भली भाँति रक्षा करना और रक्षित धनको बढाते रहना, इन तीन वातोको अर्थानुवन्ध कहते है । धनको धर्मसम्वन्धी और समाजसम्वन्धी परोपकारादि कार्य करनेवाले पुरुषोकी सेवा तथा भरणपोषणमे खर्च करना चाहिए । ये लोग एक प्रकारके तीर्थ हैं । क्योंकि इनसे दूसरोका कल्याण होता है–दूसरोंको ये कष्टसे वचाते है । जो धन तीर्योंकी सेवामे नहीं लगता, वह शहदके छत्तेकी तरह आप ही नष्ट हो जाता है–किसीके काम नहीं आता । तादात्विक, मूलहर और कदर्य पुरुषों पर कष्टोंका आ पडना वहुत सहज है । जो कमाता तो है परन्तु उसमेसे कुछ भी जमा न करके सवका सव खर्च कर डालता है, उसे तादात्विक कहते हैं । जो अपने वाप दादाओके धनको अन्यायके साथ उडाता है, उसे मूलहर कहते हैं और जो अपने नौकर-चाकरोंको तथा स्वयं अपने शरीरको भी कष्ट देकर कजूसीसे धन जमा करता है–न आप खाता है और न दूसरोको खाने देता है, उसे कदर्य कहते हैं । इनमेंसे पहले दो प्रकारके मनुष्योको तो आगे दुःख भोगने पड़ते हैं और अन्तके कदर्यका एकट्ठा किया हुआ धन राजा, हिस्सेदार और चोर इनमेसे किसी एकके काम आता है । —नीतिवाक्यामृतसे ।

सरकारी स्कूलों और लायब्रेरियोंके लिए मंजूरशुदा किताबें।

सी० पी० और बरार।

मध्यप्रदेश और बरार (सी० पी० एण्ड बरार) के शिक्षाखातेने अपने यहाँकी लायब्रेरियोको और विद्यार्थियोंको परितोषिक देनेके लिए नीचे लिखी पुस्तकें मजूर की हैं और हमे इस प्रकारके नैतिक शिक्षाप्रद ग्रन्थ प्रकाशित करनेके लिए बहुत ही उत्साहित किया है। ये सभी पुस्तकें विद्यार्थियोंका चरित्र गठन करनेवाली और उनमे अच्छे विचारोंका प्रचार करनेवाली है। स्कूलोके डिपुटी इन्स्पेक्टर साहबान और अध्यापक महाशयोसे हमारी प्रार्थना है कि वे इन्हें आवश्यकताके अनुसार अवश्य मँगावे और इनका प्रचार करनेकी कृपा करें।

१	मितव्ययता (किफायतशारी)	मू०	।।।≡)
२	चरित्रगठन और मनोबल	,,	≡)
३	अच्छी आदतें डालनेकी शिक्षा	,,	=)।।
४	* स्वावलम्बन (सेल्फ हेल्प)	,,	१।।)
५	पिताके उपदेश	,,	=)
६	शान्ति वैभव	,,	।-)
७	युवाओंकी उपदेश	,,	।।-)
८	श्रमण नारद	,,	=)

पाठ्यग्रन्थ।

चन्द्रगुप्त (नाटक)—यह ग्रन्थ सी० पी० के **नार्मल स्कूलोंमें** और बिहार यूनिवर्सिटीके बी० ए० के हिन्दी कोर्समें पाठ्यग्रन्थके रूपमे नियुक्त हुआ है। मूल्य १)

दुर्गादास (नाटक)—यह ग्रन्थ नागपुर यूनीवर्सिटीने अपने हाईस्कूलोकी १० वीं कक्षाके लिए पाठ्यग्रन्थ मजूर किया है। मू० १)

साहित्यमीमांसा—बिहार (पटना) यूनीवर्सिटीने इसे अपने यहाँकी बी० ए० परीक्षाके कोर्सके लिए चुना है। मू० १।=)

नवनिधि—सी० पी० के नॉर्मल स्कूलोमें पढ़ाई जाती है। मू० ।।।)

---

* स्वावलबन फिरसे छपाया जा रहा है।